के देखने से उसके प्रेमके वशहोना।

प्रा० आंखलड़ाना-बोल० आंख मारना, सैन करना, इशाराकरना, २ छिपी बात को इशारों से जतलाना।

प्रा० आंखलालकरना- बोल० क्रोध करना, खिसियाना, गुस्सा करना।

प्रा० आंखसेंकना-बोल० किसी के रूपको अथवा सुन्दरताको देखना।

प्रा० आंखसे गिरना-बोल० हलका होना, तुच्छ होजाना, बेक़दर होना।

प्रा० आंखें नीली पीलीकरना-बो० बहुत गुस्से से मुंह का रंग बदलना।

प्रा० आंखोंपरबैठना-बोल० प्यारा होना, ऊंचा बैठना, प्रतिष्ठित होना, आंखों में जगह पाना।

प्रा० आंखों में आना-बोल० नशे में होना, मदिरा के नशे में मस्त होना।

प्रा० आंखों में घर करना-बोल० प्यारा होना, प्रतिष्ठित होना।

प्रा० आंखोंमें चरबीछाना-बोल० धनकेमदसे घमंड करके अपने पुराने मित्रों को नहीं पहँचानना, जानबूझ के अन्धा होना।

प्रा० आंखोंमें फिरना } आंखों में बसना } बोल० सदा यादरहना, मन में सदा किसी का ध्यान बँधा रहना।

प्रा०आंखोंमेंरातकाटना } आंखोंमेंरातलेजाना } बोल० सब रात जागते बिताना।

प्रा० आंग (सं० अङ्ग) पु० शरीर, देह, अंग, शरीर का एक भाग।

प्रा० आंगन } आंगना } (सं० अङ्गन) पु० चौक, अंगनाई, सहेन।

प्रा० आंच-स्त्री० गरमी, आग का लूका भभूका।

प्रा० आंचर } आंचल } (सं० अंचल) पु० अंचका कपड़ेका किनारा २ लुगाईकी छाती।

प्रा० आंजना (सं० अञ्जन) क्रि० स० अंजन डालना, सुरमा लगाना, काजल लगाना।

प्रा० आंट (सं० आनद्ध, आ=चारों ओर से, नह्=बांधना) स्त्री० गांठ, २ बैर, विरोध, डाह।

प्रा० आंत (सं० अन्त्र) स्त्री० अंतड़ी।

प्रा० आंधी (सं० अन्धकार) स्त्री० झकड़, तूफान, तेज़ हवा।

प्रा० आंव (सं० आम्, अम्=बीमार

(होना) स्त्री० पेट में एक तरह का रोग २ आमाशय, शूल ।

प्रा० आंसू (सं० अश्रु, अश्=फैलना) पु० आंख का पानी ।

प्रा० आंसूभरलाना-बोल० आंख डबडबाना, रोनी सूरत बनाना ।

प्रा० आक (सं० अर्क) पु० एक पेड़ का नाम, अकवन, मदार ।

सं० आकर (आ=चारों ओर से, कृ=बिखरना अर्थात् जहां धातु बिखरी रहती हैं) स्त्री० खान, खानि ।

सं०आकर्णित- र्म्म० पु० सुना गया, श्रुत ।

सं०आकर्ण्य अव्य० सुनकर ।

सं० आकर्ष (आ + कृष्=खींचना) भा०पु०खींचना, ऐंचना, बटोरना ।

सं० आकर्षक (आ=से, कृष्=खैंचना) पु०चुम्बक पत्थर, खैंचनेवाली चीज, क० पु० खैंचनेवाला ।

सं० आकर्षण (आ=से, कृष्=खैंचना) भा० पु० खिंचाव, खींचनेकी शक्ति ।

सं० आकर्षित (आ=से, कर्ष+इत कर्ष्=खींचना) र्म्म० पु० खींचा गया ।

सं० आकांक्षा (आ=चारों ओर से, कांक्षा=चाहना) स्त्री० चाह, चाहना, इच्छा, वांछा, अभिलाष, ख़्वाहिश ।

सं० आकांक्षक (आ=से, कांक्ष् + अक, कांक्ष=चाहनेवाला) क० पु० इच्छक, वांछक, अभिलाषक ।

सं० आकांक्षी (आ=से, कांक्ष, + इ) क० पु० तथा ।

सं० आकार (आ, कृ=करना, ण० पु० रूप, डौल, स्वरूप, सूरत, मूरत, २ चिह्न, निशान, ३ आ अक्षर ।

सं० आकाश (आ=चारों ओर से काश्=चमकना) पु० आस्मान, गगन, शून्य ।

सं० आकाशवृत्ति (आकाश=आस्मान, वृत्ति=जीविका) स्त्री० जो आजीविका नियत नहीं है, अस्थिर जीविका, बेक़यामरोज़ी ।

सं०आकाशवाणी (आकाश=आस्मान, वाणी=शब्द) स्त्री० आकाश से जो कुछ बात सुनी जाती है, वाणी जो आकाश से होती है ।

सं० आकीर्ण (आ=चारों ओरसे, कृ=बिखरना वा फैलना) र्म्म० पु० परिपूर्ण, व्याप्त, भराहुआ ।

सं० आकुञ्चन (आ=चारों ओर से, कुञ्च् समेटना) भा० पु० संकोचन, कुञ्च्=सिमटना, सिकुड़ना ।

सं० आकुल (आ=चारों ओर से, कुल्=दुखी होना) गु० घबराया हुआ, व्याकुल, दुखी, परेशान ।

सं० आकुलित (आ=से, कुल्+इत) स्र्प०दुखित, क्लेशित, रंजीदा।

सं० आकृति (आ, कृ=करना) स्त्री० रूप, स्वरूप, मूरत, सूरत, डौल।

सं० आकृष्ट (आ=चारों ओर से कृष्+त, कृष्=खींचना) स्र्प० पु० खींचाहुआ, आकर्षित।

सं० आकृष्टि (आ=से, कृष्+ति) भा० पु० आकर्षण, खींचना, घसीटना।

सं० आक्रमक (आ=सब ओरसे, क्रम्+अक, क्रम्=जाना) क० पु० घेरनेवाला, हमला करनेवाला।

सं० आक्रमण (आ=से, क्रम्+अन, क्रम्=जाना वा हमला करना) भा० पु० व्यापन, घेरना, हमला करना, मुहासरा करना।

सं० आक्रम्य (आ=से क्रम्+य) धा० अव्य०घेरकर, हमला करके।

सं० आक्रान्त (आ=से, क्रम्+त स्र्प० पु० घेराहुआ, घेरागया, हमला कियागया, क० २ श्रान्त, थकाहुआ।

सं० आक्रीड (आ=चारों ओर से, क्रीड्=खेलना) पु० राजाका उपवन, बादशाहीबाग।

सं० आक्रोश (आ=चारों ओर से, क्रुश रोना) भा० पु० क्रोध, रोना, गुस्सा, गिरियावज़ारी।

सं० आक्षेप (आ, क्षिप्=फेंकना) पु० बुरीबात, निन्दा, दुर्वचन, २ फेंकना ३ एक अर्थालंकारका नाम।

प्रा० आखर (सं०अक्षर) पु०अक्षर वर्ण, हर्फ़।

सं० आखु-मूषक, मूश, मूसा, चूहा।

सं० आखुभुक् (आखु+बिलार भुज् भक्षण करना) क० पु० बिलार मारजार, गुर्बा।

सं० आखेट (आ=से, खिट्=डराना, सताना) स्त्री०शिकार, अहेर, मृगया।

सं० आख्य } आख्या } (आ=सबप्रकार से, ख्या=कहना, प्रसिद्ध होना) पु० नाम, संज्ञा, इस्म।

सं० आख्यात (आ=से, ख्या+त) स्र्प० उक्त, मज़कूर, कहाहुआ।

सं० आख्यायिका- स्त्री० कहानी, कथा, रवायत, क़िसाना।

सं० आख्यान (आ=से, ख्या=प्रसिद्धहोना) पु० बात, कथा, वृत्तान्त, वर्णन, इतिहास।

प्रा० आग (सं०अग्नि) स्त्री०आगी, अग्नि, अनल।

प्रा०आगउठाना- बोल० बखेड़ा मचाना, क्रोधितकरना, गुस्सा बढ़ाना, खिजलाना।

प्रा० आगकरना- बोल० बहुतही बहुत गर्म करना, २ क्रोध अथवा डाह बढ़ाना।

प्रा॰आगदेना-बोल॰मुर्दाजलाना ।

प्रा॰ आगपड़ना-बोल॰गुस्सेहोना, खिसियाना,क्रोधकरना, भड़कना ।

प्रा॰ आगबरसना-बोल॰ यह मुहावरा उससमय बोला जाताहै जब बहुत गर्मी पड़ती है, अथवा लड़ाई में तोप के गोले चलते हैं ।

प्रा॰ आगबुझाना }
आगमें पानी डालना }
बोल॰ठंढा करना, झगड़ा बंद करना, बखेड़ा मिटाना ।

प्रा॰ आगभखना } बोल॰निकम्मीबातेंकर-
आगफांकना }
ना,वृथाबकवाद करना, २ डींगमारना, शेखीकरना, अपनी बड़ाई करना, घमंड करना ।

प्रा॰ आगमें लोटना-बोल॰ सोच से दुखी होना ।

प्रा॰ आगलगना-बोल॰ जलना, क्रोधित होना, खिसियाना, गुस्से होना, २ बहुत भूख लगना ।

प्रा॰आगलगाकेपानीलेदौड़ना बोल॰ जिसझगड़ेको आप छेड़ाहो उसके मिटाने का बहाना करना, २ छल करना, छलना, ठगना ।

प्रा॰ आगलगाना-बोल॰ जलाना, फूंकना,गुस्सेमेंकरना, क्रोधितकरना, भड़कना ।

प्रा॰ आगसुलगाना-बोल॰ आग जलाना, बखेड़ा मचाना, छुपे छुपे दंगा बखेड़ा उठाना ।

प्रा॰ आगहोना-बोल॰गुस्से होना। क्रोधित होना, खिसियाना ।

सं॰ आगत (आ=चारों ओर से, ग + त,गम्=जाना) क॰पु॰ आया हुआ, पहुंचा, उपस्थित, आयात ।

सं॰आगन्ता } क॰पु॰ आनेवाला,
आगन्तुक } अजनबी ।

सं॰ आगम (आ, गम्=जाना, और आ उपसर्ग के साथ आने से अर्थ हुआ आना) पु॰ शास्त्र, तंत्रशास्त्र जिसमें मन्त्रों का वर्णनहै, और उसको महादेव ने बनायाहै संस्कृत में आगमका यह लक्षण लिखाहै "आगतं शिववक्त्रेभ्यो, गतश्च गिरिजा श्रुतौ । मतश्चवासुदेवस्य तस्मादागम उच्यते" अर्थ महादेवने कहा और पार्वतीने सुना और विष्णुने माना इसलिये इसको आगम कहतेहैं और यहां आ का अर्थ आया (महादेव से) ग का अर्थ गया (पार्वती के पास) और म का अर्थ माना (विष्णु ने) है २ आना, ३ भविष्यत, आने वाला, आमदनी ।

प्रा॰ आगमबांधना-बोल॰ अगली बात को ठीककरना, वा अगली बातका विचार करना, २ आगे से जताना, आगमकहना ।

सं० आगमन (आ, गम्=जाना) भा० पु० आना, अवाई।

प्रा० आगा (सं० अग्र) पु० अगवाड़ा, साम्हना।

प्रा० आगा पीछा करना-बोल० दुबिधा में होना, संदेह रखना, हिचकना, ठिठकना, झझकना।

सं० आगामी (आ+गम्+ई, गम्=जाना) क० पु० आनेवाला, भावी, जो आगे आनेवाला है।

सं० आगार (आ, गृ=निगलना) धि० पु० घर, स्थान, जगह, मकान।

सं० आगुल्फ (आ=तक, गुल्फ=टिहुना) गु० टिहुनातक।

प्रा० आगे (सं० अग्रे) क्रि० वि० पहले, साम्हने, सन्मुख, इसके पीछे, बढ़के २ तब, फिर।

प्रा० आगेधरलेना-बोल० आगे बढ़ना, आगे जाना, किसी को पीछे छोड़ना।

सं० आग्रह (आ=चारोंओरसे, ग्रह=ग्रहण करना, वा लेना) भा० पु० पकड़ना, छीनना, लेना, कसना, छेड़ना, घेरना, हठकरना, कोशिश, जिद पकड़ना, मिहरबानी, मुरव्वीपन।

सं० आघात (आ=से, हन्=मारना) पु० चोट, खड़का, मारना, भिड़ना २ मारने की जगह।

सं० आघातित (आ=सबप्रकारसे, घात्+इत, हन्=मारना) र्म० पु० मारा हुआ, चोट खाया हुआ।

सं० आघूर्णन (आ=से, घूर्ण=घूमना वा ताकना) भा० पु० देखना, घूरना, ताकना।

सं० आघूर्णित (आ+घूर्ण+इत) र्म० पु० देखागया, घूरागया।

सं० आघ्राण (आ=से, घ्रा=सूंघना) भा० पु० सूंघना, गंधलेना।

सं० आघ्रात (आ+घ्रा+त) र्म० पु० सूंघाहुआ, गंधग्रहण।

सं० आघ्रेय र्म० पु० सूंघनेयोग्य।

सं० आचमन (आ, चम्=खाना) भा० पु० खानेके पीछे हाथ मुंह पानी से साफ करना, २ संध्या करने के समयचुल्लूसेतीनबारमुंहमेंपानी लेना।

सं० आचरण (आ, चर्=चलना) भा० पु० चालचलन, व्यवहार, रीति भांति, चलन।

सं० आचरित (आ+चर+इत) र्म० पु० मानलीजाय, तसलीम करलीजाय।

सं० आचार (आ, चर्=चलना) भा० पु० आचरण, व्यवहार, रीति, चलन, २पवित्रता, सफाई, शुद्धता, तरीका।

सं० आचारी (आचार) क० पु० आचार रखनेवाला, शास्त्रके अनुसार चलनेवाला।

सं० आचार्य्य (आ, चर=चलना)

पु० गुरु, पढ़ानेवाला, शिक्षक, उपदेश करनेवाला, वेदशास्त्रपढ़ानेवाला।

सं० आच्छादक (आ+छद+अक) कृ० पु० ढांकनेवाला, छिपानेवाला, मूंदनेवाला।

सं०आच्छादन(आ=से,छद्=ढकना) भा० पु० ढकनेका कपड़ा, चद्दर,२ ढकना।

सं०आच्छादित } आच्छिन्न } र्म्म० पु० मुँदा हुआ,ढकाहुआ, आवृत।

प्रा० आछे } आछैं } (सं०अच्छ अच्छा)गु० अच्छा।

प्रा० आज (सं०अद्य)आजका दिन, वर्त्तमान दिन।

प्रा० आजकल-बोल० इनदिनों में कुछ दिनों से।

प्रा० आजकल करना } आजकल बताना } बोल० टालना, हां हूं करना।

प्रा० आजा (सं०आर्य्यक) पु० दादा, पितामह।

सं० आजीव (आ+जीव्=जीना) रोजगार, जीविका, पेशा।

सं० आजीविका (आ=से,जीव्=जीना) स्त्री० जीविका, निर्वाह, जीने का, उपाय, रोजी, रिजक।

सं० आज्ञा (आ=से,ज्ञा=जानना) स्त्री० हुक्म, आदेश, आयसु।

सं० आज्ञाकारी (आज्ञा=हुक्म, कारी=पूरा करनेवाला,कृ=करना) गु० आज्ञा माननेवाला, हुक्ममानने वाला, सेवक, आधीन, ताबेदार।

सं० आज्ञानुवर्त्ती(आज्ञा=हुक्म,अनु=पीछे,वृत्=मानना)कृ०पु०आज्ञाकारी,फर्मांबरदार,वशीभूत,आधीन।

सं० आज्ञापक (आ=सब प्रकारसे, ज्ञापक=हुक्म करनेवाला) आदेश करनेवाला,हुक्मकरनेवाला,हाकिम।

सं०आज्ञापन (आ=से,ज्ञापन=जताना) भा० पु०विज्ञापन, चिताना, इत्तलाअ देना, हुक्म देना।

सं० आज्ञप्त (आ+ज्ञप्त) र्म्म० पु० आज्ञापाया हुआ, महकूम।

सं० आज्ञापत्र (आज्ञा=हुक्म,पत्र=काग़ज) पु०हुक्म नामा लिखीहुई आज्ञा फ़र्मान।

सं० आज्य (अञ्ज्+य, अञ्ज्=लेप करना) पु० घृत,घी,घीव,सर्पिष, रोग़नजर्द।

सं० आटोप (आ=चारों ओर से, टुप्=ढकना, मारना) पु० घमण्ड, अभिमान, दर्प, अहङ्कार।

प्रा० आठ (सं० अष्ट) गु० अष्ट,एक गिन्ती का नाम।

प्रा० आठ आठ आंसू रोना-बोल० बहुत रोना, फूट २ के रोना।

प्रा० आठपहर-बोल० रात दिन,

हर घड़ी, हर आन, सदा, नितउठ ।

प्रा० आड़-स्त्री० ओट, परदा, रोक ।

सं० आडम्बर (आ=चारों ओर से, डम्ब+अरन्, डम्ब=फेंकना) पु० हर्ष, घमंड, ग़रूर, पाखंड, छत्र, मेघ, नक़ारा, तुरहीका शब्द, खटला, उद्योग, बनावट, बनाव, आयोजन, आरम्भ, मेघका गरजना, संरम्भ, लिबास, भेष ।

प्रा० आड़ा-गु० तिरछा, टेढ़ा, बांका ।

प्रा० आड़ी-गु० रक्षक, मुहाफ़िज़, स्वर विशेष ।

प्रा० आड़े आना-बोल० बचावना, बीचमें पडना ।

सं० आढ़क-परिमाणविशेष, अढ़ैया, द्रोणका चौथा भाग ।

सं० आढ़की-स्त्री० अरहर ।

प्रा० आढ़त-स्त्री० अड्डा, माल का चलान ।

प्रा० आढ़तिया-पु० बैपारी, महाजन, दलाल ।

सं० आतङ्क (आ=से, तकि=दुख से जीना) पु० डर, भय, खौफ़, २ दुख, ३ पीडा, रोग, सन्ताप ।

सं० आततायी अग्निलगाना, विष देना, शस्त्रपात करना दूसरेका धन स्त्री भूमि अन्यायसे लेलेना इन ६ कर्म करनेवालेका आततायी कहाहै ।

सं० आतप (आ=चारोंओर से, तप्=तपाना) गु० पु० धूप, घाम, सूर्य्य की गर्मी ।

सं० आतपत्र (आतप=धूप, त्रै=बचाना) पु० छतरी, छाता, छत्र ।

सं० आतर (आ=से, तृ=जाना वा, तैरना) गु० पु० अन्तर, बीच, फ़र्क़, उतराई ।

सं० आतिथेय-पु० अतिथि के निमित्त भोजनादि देनेवाला, अतिथि, सेवक, महँमानिवाज़, मेज़बान ।

सं० आतिथ्य-भा० पु० अतिथिसेवा, सन्मान, महिमानदारी, महँमानिवाज़ी ।

सं० आतुर (आ, तुर=जल्दी करना) गु० घबरायाहुआ, व्याकुल, बेचैन, दुखी, २ रोगी, क्रि० वि० शीघ्र, झटपट जल्दी ।

सं० आत्मघात (आत्मन्=अपनेको, घात=नाश, मारना) पु० आत्महत्या, अपने तईं मारडालना, खुदकुशी ।

सं० आत्मज (आत्मन्=अपनीआत्मासे जन्=पैदा होना) पु० पुत्र, बेटा, सन्तान ।

सं० आत्महत्या (आत्मन्=अपने को हन्=मारना) स्त्री० आत्मघात, अपने तईं मारडालना ।

सं० आत्महन-कं० पु० आत्मघाती, खुदकुश, आधमान, वायुरोग ।

सं० आत्मा (आ, अत्=जाना) स्त्री० जीव, प्राण, आप, मन ।

प्रा० आदिअन्त (सं० आद्यन्त, आदि=पहले, अन्त=पीछे) गु० पहले से पीछेतक, आरंभ से समाप्तितक, अव्वल से आखिरतक।

सं० आदर (आ, दृ=आदर करना) पु० मान, सन्मान, प्रतिष्ठा, खातिर।

सं० आदरणीय (आदर+अनीय) र्म० पु० सन्मानयोग्य, खातिर के लायक।

प्रा० आदा (आर्द्र वा आर्द्रक) पु० आर्द्रक, कच्ची और गीली सोंठ।

सं० आदान (आ+दा+न, दा=देना) भा० पु० ग्रहण, लेना, स्वीकार, मंजूर।

सं० आदानप्रदान-भा० पु० देनलेन, दादसितद।

सं० आदि (आ=पहले, दा=देना, लियाजाना) गु० पहला, प्रथम, आरम्भ, मूल, २ और, इत्यादि, वगैरह।

सं० आदिकवि (आदि=पहला, कवि=कविता बनानेवाला) पु० पहला कवि, ब्रह्मा, वाल्मीकि।

सं० आदित्य (अदिति=देवताओंकी मा, अर्थात् अदिति का बेटा) पु० सूर्य, रवि, भानु, २ देवता।

सं० आदित्यवार (आदित्य=सूर्य वार=दिन) पु० एतवार।

सं० आदिपुरुष (आदि=पहला, पुरुष) पु० पहला पुरुष, विष्णु, परमेश्वर।

सं० आदिष्ट (आ+दिश+त, दिश=देना) र्म० पु० आज्ञप्त, अनुमत, हुक्मदियागया, आज्ञापाया हुआ, महकूम।

सं० आदेश (आ, दिश=देना) पु० आज्ञा, हुक्म, २ योगियोंका प्रणाम ३ व्याकरण में एक अक्षर को दूसरे अक्षर से बदलना।

सं० आदेशी } (आ+दिश+इन)(आ+दिश+
आदेष्टा } तृ) क० पु० आज्ञादायक, हाकिम।

सं० आद्योपान्त (आद्य+उपान्त) गु० अव्वल से आखिरतक।

सं० आद्रित (आ+दृ+इत) र्म० पु० मानकियागया, इज्जतकियागया।

प्रा० आधा (सं० अर्द्ध) गु० अर्द्ध, दोबराबरहिस्सोंमेंकाएक, निस्फ, नीम।

सं० आधान (आ, धा=रखना) पु० गर्भधारण, गर्भ, गाभ, हमल।

सं० आधार (आ, धृ=रखना) पु० आसरा, २ पालनेवाला, ३ आहार, खाना, ४ पात्र, अधिकरण।

प्रा० आधासीसी (सं० अर्द्ध=आधा, शीर्ष=शिर) स्त्री० अधकपाली, आधे शिर में पीड़ा।

सं० आधि-स्त्री० मनकी पीड़ा, उदासी।

सं० आधिक्य } भा० स्त्री० बहुतायत, अधिकाई, कसरत।
आधिक्यता }

सं० आधिपत्य-भा० पु० प्रधानता, अधिकार, स्वामित्व, वश, अख़्तियार ।

प्रा० आधीन (सं० अधीन) गु० आज्ञाकारी, वश, ताबेदार ।

सं० आधेय (आ+धा=धरना) कर्म० धरनेयोग्य, जो वस्तु धरीजाय ।

प्रा० आन-स्त्री० कान, मर्याद, लाज संकोच, २ यश ।

प्रा० आन (सं० अन्य=और) गु० और, दूसरा ।

प्रा० आन (सं० आज्ञा) स्त्री० आज्ञा, २ प्रतिज्ञा, सौगंद ।

सं० आनक (आ, नी=लाना जो खुशी को लाता है) पु० नगारा, नक़ारा, दुंदुभी ।

सं० आनन (आ=से, अन्=जीना) पु० मुंह, मुख ।

सं० आनन्द (आ=चारों ओर से, नन्द=प्रसन्न होना) पु० हर्ष, सुख, चैन, खुशी ।

सं० आनन्ददायी (आनन्द+दायी, दा=देना) क० पु० आनन्ददाता खुशी देनेवाला ।

सं० आनन्दपूर्वक (आनन्द=हर्ष, पूर्व्वक=सहित) शब्दयो० अव्य० हर्ष सहित, खुशीके साथ ।

सं० आनन्दित (आ+नन्द्+इत) कर्म० पु० प्रसन्न, हर्षित, खुश बरशास ।

सं० आनन्दी (आ+नन्द+इन्) क० पु० आनन्दयुक्त, प्रसन्न ।

प्रा० आनना (सं० आनयन, आ, नी=लाना) क्रि० स० लाना ।

अं० आनरेबल-प्रतिष्ठित, इज़्ज़तदार ।

प्रा० आना / आवना (सं० आगमन) क्रि० अ० पहुंचना, आवना, पु० रुपये का सोलहवाँ भाग ।

प्रा० आनिहौं (आनना लाना) क्रि० स० लाऊंगा लेआऊंगा ।

सं० आनीत-कर्म० पु० लाया हुआ ।

सं आनेता (आ+नी+तृ, नी=लाना) क० पु० लाने वाला ।

सं० आन्दोलन (आन्दोल्+अन्, दोल=फेंकना) भा० पु० चलन, खिसकाना हिलाना, हरकतदेना, ध्यान, भूलना, झूला, अनुसंधान ।

प्रा० आप-सर्वना० अपने आप, स्व, अपना, खुद, २ बड़े आदमीको तुम की जगह आप बोलते हैं ।

सं० आप (आप=फैलना) पु० पानी ।

प्रा० आपकाजी (आप=अपना, कार्य्य=काम) गु० स्वार्थी, आप मतलबी ।

सं० आपक्व-क० पु० थोड़ापकाहुआ ।

सं० आपण (आ+पण्=वाणिज्य) धि० दूकान, हाट, हट्ट ।

सं० आपणिक (आ, पण्+इक) क० पु० वणिक् बनिया दूकानदार ।

सं॰ आपत्ति, आपद्, आपदा } (आ, पद्=जाना) स्त्री॰ विपत्ति, वि, पत, अभाग, बला बुरे दिन, दुख।

सं॰ आपन्न (आ, पद्=जाना) क॰ पु॰ अभागा, बिपत में फंसा हुआ, दुखी, २ पायाहुआ, ३ शरण में आयाहुआ, शरणागत।

प्रा॰ आपस (आप) सर्वना॰ एक दूसरे को, परस्पर, भाई बन्द।

सं॰ आप्त (आप्=फैलना, लाभ) कर्म॰ पु॰ विश्वासित, लब्ध, सत्य यथार्थ, भ्रमरहित।

सं॰ आपाक (आ=चारोंओर से, पाक=पच्=पकाना) अ॰पु॰ आवा, पजावा, मिट्टी के बरतनों के पकाने की जगह।

सं॰आपान (आ+पान, पा=पीना) अ॰ मद्यपानस्थान, शराब की दूकान पु॰मद्यप मतवालोंका झुंड।

अं॰ आफ़िस-अ॰पु॰ कार्य्यशाला, कचहरी।

प्रा॰ आफू (सं॰ अ=नहीं, फेन=झाग, स्फायी=फूलना) पु॰ अफ़ीम, अमल।

सं॰ आफूक=अफ़ीम।

सं॰ आभरण (आ=चारोंओर से भृ=धारण करना वा पहनना) पु॰ गहना, भूषण, अलङ्कार, जेवर, आभरण १२ बारह हैं १ नूपुर २ किंकिणी ३ चूरी ४ मुंदरी ५ कङ्कन ६ बाजूबंद ७ हार ८ कंठश्री ६ बेसर १० बिरिआ ११ टीका १२ शीशफूल।

सं॰ आभा (आ=चारोंओरसे, भा=चमकना रोशनी) भा॰ स्त्री॰ चमक, शोभा भड़क।

सं॰ आभाष (आ=चारों ओर से भाष्=कहना) पु॰ भूमिका, मुख बन्ध तमहीद, पेशबन्दी।

सं॰ आभाषण (आभाष्+अन) भा॰ पु॰ कथन, कहना बोलना।

सं॰ आभूषण (आ=चारों ओर से भूष्=शोभना) पु॰गहना, आभरण, अलंकार।

सं॰आभास(आ=स, भास=चमकना) भा॰ पु॰ प्रकाश, रोशनहोना, अभिप्राय, समाजाना।

सं॰आभिज्ञ(आभि+ज्ञ=जानना) क॰ पु॰ ज्ञाता, जनुका, आगाह, वाक़िफ़।

सं॰ आभीर-अहीर, गोप, ग्वाल।

प्रा॰ आम (सं॰ आम्र) पु॰ एक फलका नाम।

सं॰ आम (अम=बीमारहोना) पु॰ एक प्रकार का रोग, पेटका रोग अपच, अजीर्ण कच्चा।

सं० आमय (आमरोग या जाना अथवा अम बीमार होना) पु० रोग बीमारी, पीड़ा।

सं० आमर्ष (अ=नहीं, मृष्=सहना) पु० क्रोध, गुस्सा, कोप, २ डाह।

प्रा० आमला, आवला (सं० आमलक, आ=चारों ओर से, मल्=धारनकरना, पकड़ना) पु० एक पेड़ और उसके फल का नाम आंवरा।

सं० आमाशय (आम=आंव आशय=जगह) पु० पेटमें एक थैली सी होती है जो खाना खाते हैं पहले उसमें पहुँचता है, ओझरी, पचौनी।

सं० आमिष (अम्=खाना) पु० मांस, २ खानेकी चीज़, भोजन।

सं० आमिषाशी (आमिष+अश्=भोजनकरना, खाना) क० पु० मांसभक्षी, मांसाहारी।

सं आमोद (आ, मुद्=प्रसन्न होना) भा० पु० सुगन्ध, सुबास, २ आनन्द, हर्ष, खुशबू, खुशी।

सं० आमोदित (आमोद्+इत) कर्म० पु० हर्षित, खुश, प्रसन्न।

सं० आमोदी (आमोद्+ई) क० हर्षयुक्त, खुश होनेवाला।

सं० आम्र (अम्=जाना, खाना) पु० आम, आंबका फल वा पेड़।

प्रा० आम्राई (सं० आम्रराजि, आम्र=आम, राजि=पांत) स्त्री० आंबों का बाग़।

सं० आमंत्रण-भा० पु० निमन्त्रण, न्योता, दावत।

सं० आय (आ+इ=फैलना) पु० लाभ, धनागम, आमदनी, फ़ायदा।

सं० आयत (आ, यम्=रोकना, पर आ के साथ आने से इसका अर्थ फैलना होजाता है) गु० लंबा, चौड़ा, फैला हुआ पु० ऐसाखेत जिसकी आमने सामने की भुजा बराबर हों और सब कोने भी समकोन हों।

सं० आयतन (आ, यत्=जतन करना अथवारखाना) धि० पु० घर जगह, स्थान।

प्रा० आयसु (सं० आदेश) स्त्री० आज्ञा, हुक्म।

सं० आयात (आ, यात, या=जाना) क० पु० आगत, आया, पहुँचा।

सं० आयास (आ, यस्=मिहनत करना) स्त्री० मिहनत, परिश्रम, यतन।

सं० आयु (इण=जाना) स्त्री० उमर, आयुर्दा, जीवनकाल।

सं० आयुध (आ=से, युध्=लड़ना) पु० शस्त्र, हथियार॥

प्रा० आर-पु० कांटा, पैना, २ आंकुश ३ मंगल, शनिश्चर ४ लोहार ५ चमार, तावा, रीति।

सं० आरण्य (अरण्य=जंगल) गु० जंगली, बनका, बनैला ।

प्रा० आरज (सं० आर्य्य) गु० बड़ा, श्रेष्ठ, पूज्य, महाराज पु० ससुर ।

प्रा० आरत (सं० आर्त्त, आ, ऋ=जाना) गु० दुखी, घबराया हुआ, पीड़ित, व्याकुल ।

प्रा० आरति (सं० आर्त्ति, आ, ऋ=जाना) स्त्री० दुख, पीड़ा, रोग, कष्ट ।

प्रा० आरती स्त्री० }
आरता पु० } (सं० आरात्रिक, अ=नहीं, रात्रि=रात, अर्थात् जो दिन में भी दिखाई जाती है) पूजा में देवता के साम्हने दीपक दिखाना, दीपदर्शन, २ ब्याह की एक रीति विशेष ।

सं० आरब्ध-र्म्म० पु० उपक्रांत, आरम्भित, शुरूअ किया गया ।

सं० आरम्भ (आ, रभि=शुरूअ करना) पु० शुरूअ, आरम्भ, उपक्रम ।

सं० आरा-स्त्री० क्रकच, करोत, छेदनी, सूजा ।

सं० आरात-अव्य० दूर, समीप ।

सं० आराति (आ=चारों ओर से, रा=देना दुखको) पु० वैरी, शत्रु, दुश्मन ।

सं० आराधक (आ, राध्=सिद्ध करना, पूराकरना) क० पु० आराधना करनेवाला, पूजनेवाला, सेवक भक्त, आबिद ।

सं० आराधन भा० पु० }
आराधना स्त्री० } (आ, राध्=पूराकरना) पूजा, सेवा, इबादत भक्ति ।

सं० आराम (आ=चारों ओर से, रम्=खुशी करना) पु० बाग़, बाग़ीचा, फुलवाड़ी, उपवन ।

सं० आरूढ़ (आ, रुह्=चढ़ना) गु० चढ़ाहुआ, सवार ।

सं० आरोग्य (अरोग=निरोग) पु० निरोगता, आराम, तंदुरुस्ती, कुशल ।

सं० आरोप }
आरोपन } (प्रा० रुह्=उगना, चढ़ना) भा० पु० जमाना, स्थापन करना, क़ायम करना ।

सं० आरोपित (आ, रुह्=उगना चढ़ना) र्म्म० पु० सौंपा हुआ, रक्खा हुआ, २ रोपा हुआ, बोया हुआ, ३ बदलाहुआ ।

सं० आर्द्र (अर्द=जाना) गु० गीला, भीगा, ओदा, तर, सीला ।

सं० आर्य्य (ऋ=जाना) गु० बड़ा, श्रेष्ठ, कुलीन, अच्छे घराने का, पूज्य, पूजनीय, महाराज, पु० हिंदू ।

सं० आर्य्यावर्त्त (आर्य=हिंदू वा उत्तमकुल के मनुष्य, आवर्त=ढका

हुआ, वृत्=होना) पु० हिंदुस्थान की वह पवित्र धरती जो पूर्व स-मुद्रसे पश्चिम समुद्रतक फैली हुई है और उत्तर और दक्खिन की ओर हिमालय और विंध्याचल से घिरी हुई है मनु ने इसी को आर्यावर्त लिखा है जैसे "आ स मुद्रात्तुवैपूर्व्वा, दासमुद्रात्तुपश्चिमात् । हिमवद्विन्ध्ययोर्मध्ये आर्य्यावर्त्तं प्रच क्षते॥ १ ॥ "आर्य्यावर्त्त पुण्यभूमि, मध्यं विन्ध्यहिमालयोः ।

सं० आलम्ब } (आ=से, लवि=ठह
आलम्बन } रना) पु० आसरा सहारा, अवलंब ।

सं० आलय (आ=चारोंओरसे, ली=लेना, मिलना) पु० घर, स्थान, जगह ।

सं० आलवाल (आ=चारोंओरसे, ला=लेना) पु० थाला, घेरा, पेड़की जड़के आस पास का घेरा ।

सं० आलस्य } (अलस, आ=नहीं
प्रा० आलस } लस्=शोभना, खेल-ना) पु० सुस्ती, आस्कत, ढील ।

प्रा० आलसी-गु० सुस्त, काहिल ।

प्रा० आला (सं० आलय) पु० दीप रखने के लिये भीत में वा खंभे में छोटा सा खोह, दीया का ताक, ताक, ताखा ।

सं० आलान (आ=से, ला वा ली=लेना) पु० हाथी के बांधने का खूंटा अथवा रस्सा, बेड़ी, जंजीर आदि ।

अ० आलान=इश्तिहार, विज्ञापन ।

सं० आलाप (आ, लप्=बोलना) भा० पु० बातचीत, बोलचाल, कहना बोलना, २ स्वरका मिलान ।

सं० आलापनीय (आलाप् + अ-नीय) र्म्म० पु० भाषणयोग्य, कहने लायक ।

सं० आलिंगन (आ=चारोंओरसे, लिगि=छातीसे लगाना, मिलना) पु० प्यारसे मिलना, गले लगाना, प्यार से स्त्री पुरुष का आपसमें मिलना ।

प्रा० आली (सं० आलि, अल्=शोभना) स्त्री० सखी, सहेली, सह-चारिणी ।

सं० आलीढ़ (आ, लिह्=स्वाद लेना) र्म्म० पु० चाटा, भुक्त, स्वाद लिया ।

सं० आलेख्य (आ, लिख्=लि-खना) र्म्म० पु० लिखा ।

सं० आलोक (आ, लोक्=देखना) पु० दर्शन, दृष्टि, देखना, २ चमक, ज्योति, बड़ाई, यश, बखानना, विरद, झरोखा, रोशनदान ।

सं० आलोकन-भा० पु० दर्शन, देखना ।

सं० आलोचना (आ, लोच्=दे-खना) भा० पु० विचारना, शुद्धकर-ना, चर्चाकरना, नजरसानी करना ।

सं०आलोच्य, धातु,अव्य.विचारकर।

सं० आलोड़न (आ, लुड्=मथना वा घोटना) भा० पु० मथना, तलाश करना, अन्वेषण।

सं० आलोल—गु० चंचल, अति चंचल।

प्रा० आल्हा—पु० एक हिंदू शूरवीर और कवि का नाम जिसके नाम से एक प्रकार की कविता का नाम भी आल्हा है।

सं० आवरण (आ=से,वृ=ढकना) पु० ढाल, २ ढकना, ढकनेकी कोई चीज, पर्दा, आच्छादन।

प्रा० आवभक्ति, आवभगत, आवभगति (हिं०आना,सं० भक्ति=सेवा) स्त्री० आदर मान, सत्कार।

सं० आवर्ज्जन (आ,वृज=फेंकना) मनाकरना, रोकना।

सं० आवर्त्त (आ=चारों ओर, वृत्=होना, घूमना) पु० भवँर, चक्र, फेर, घुमाव।

सं०आवलि (आ=चारों ओर से वल्=घेरना, ढकना) स्त्री०पांत, पंक्ति, श्रेणी, अवली।

सं० आवश्यक (अवश्य) गु० निश्चय, जरूरी, कर्त्तव्य।

सं० आवश्यकता-भा०स्त्री०जरूरत

प्रा०आवर्दा, आव (सं० आयुर्दाय, इण्=जाना) स्त्री० उमर, अवस्था।

प्रा०आवागमन, आवागवन (हिं० आना सं० गमन=जाना) पु० आना जाना, आमदरफ़्त।

सं०आवाहन (आ, वह=लेजाना, पासलाना) भा०पु० बुलाना, पूजा अथवा होमके समय देवता को मंत्रों से बुलाना।

सं० आविर्भाव—भा० पु० प्रकट होना, ज़ाहिर होना।

सं० आविर्भूत (आविर्=प्रकट, भू=होना) गु०प्रकट, ज़ाहिर,प्रत्यक्ष।

सं०आविष्कार, आविष्कृत भा० पु० प्रकट होना, र्म० निकला हुआ।

सं० आविष्ट (आ, विश्=प्रवेशकरना) क० पु० बैठा,घुसा।

सं० आवृत (आ, वृत्=होना, ढाकना) र्म० पु० आच्छादित, वेष्टित, ढाकाहुआ, घेराहुआ।

सं० आवृत्ति (आ, वृत्=लौटना पौटना) भा० पु० अभ्यास, बार२ कहना, उधरना।

सं० आवेदन (आ, विद्=ज्ञान वा समझ) भा०पु०निवेदन,गुज़ारिश।

सं० आवेद्यसंग्रह—पु० वाजिबुल अर्ज़, वह पत्र जिस में ज़मींदार अपना स्वत्व अर्थात् हक़ूक़ सरकारमें दाखिल करते हैं।

सं०आवेश (आ, विश=घुसना) पु० प्रवेश, घुसना, २ घमंड, ३ क्रोध, गु० पकड़ा हुआ, ग्रस्त ।
सं०आवेशन-प्रवेश=, २शिल्पशाला।
सं० आशंसा (आ, शंस्=सराहना, पर आ उपसर्ग के साथ आने से इस का अर्थ चाहना होता है) भा० स्त्री० इच्छा, चाह, चाहना, अभिलाष ।
सं० आशक्त } आसक्त } (आ=से, सञ्ज=मिलना) कृ० गु० लगाहुआ, मोहित, लीन, आशिक्र ।
सं० आशङ्का (आ=से, शङ्कि=संदेह करना) स्त्री० डर, भय, २ संदेह ।
सं० आशय (आ, शी=सोना) पु० मतलब, अभिप्राय, तात्पर्य, २स्थान, जगह, शरण ।
सं० आशा (आ=चारोंओर, अश्=फैलना) स्त्री० आस, भरोसा, आसरा, उम्मेद, २ दिशा, ओर, तरफ़।
सं० आशातीत (आशा + अतीत) गु० आशासे अधिक, उम्मैद से जियादा ।
सं० आशिस् (आ, शास्=सिखाना पर आ उपसर्ग के साथ आने से इसका अर्थ चाहना होता है) स्त्री० आशीर्बाद, आसीस, वर, दुआ ।
सं० आशीर्वचन } आशीर्वाद } (आशिस्=असीस, वचन वा बात कहना) पु० असीस, आशीस, दुआ ।
सं०आशु (अश्=फैलना) क्रि० वि० शीघ्र, जल्द, तुरन्त, झटपट ।
सं०आशुतोष (आशु=तुरंत, तोष=प्रसन्न होनेवाला, तुष्=प्रसन्न होना) पु० महादेव, शिव ।
सं० आश्चर्य (आ, चर=चलना) पु० अचंभा, अचरज, विस्मय, गु० अनोखा, अद्भुत ।
सं० आश्रम (आ, श्रम्=तपकरना) थि० पु० ऋषियों के रहने की जगह, मठ, २ धर्म के अनुसार अवस्था के चार भेद १ ब्रह्मचर्य्य २ गृहस्थ ३ वानप्रस्थ ४ संन्यास, कलियुग में केवल गृहस्थ और संन्यास ये दोही आश्रम हैं, जैसे "गृहस्थी भिक्षुकश्चैव, आश्रमौ द्वौ कलौयुगे ।
सं०आश्रय-(आ=चारोंओरसे, श्रि=सेवा करना) भा० पु० आसरा, शरण, अवलम्ब, २ घर, जगह, ३ पास, समीपता ।
सं० आश्रयभूत (आश्रय + भूत) गु० आसरागीर ।
सं० आश्रयस्थान (आश्रय + स्थान, स्था=ठहरना) थि० पु० सहारा की जगह, उम्मेदगाह ।
सं०आश्रित (आ, श्रि=सेवाकरना) कर्म० पु० शरणागत, आधीन, तावेदार ।

सं० आश्रितस्वत्वाधिकारी—क० पु० हक़दार, मातहत ।

सं०आश्लेष (आ, श्लिष्=मिलना)पु० आलिंगन, जुड़ना, मिलना ।

सं०आश्वासन } आश्वास } (आ, श्वासन, श्वस्=समझाना) भा० पु०प्रबोधकरना, भरोसा देना, शिक्षाकरना ।

सं०आश्वास्य—भा० अव्य० समझाकर ।

सं० आश्विन (अश्विनीएक नक्षत्र का नाम, इस महीने में पूरा चांद इस नक्षत्रके पास रहताहै और पूनों के दिन अश्विनी नक्षत्र होता है) पु० कुंआर, आसोज बरसका छठा महीना ।

प्रा०आषर(सं०अक्षर) पु०हर्फ़,चिह्न ।

सं०आषाढ़ (आषाढ़ा एक नक्षत्र का नाम इस महीने में पूराचांद इस नक्षत्र के पास रहता है और पूनों के दिन आषाढा नक्षत्र होता है) पु० बरस का तीसरा महीना असाढ़ ।

प्रा०आस } आसा } (सं० आशा) स्त्री० आसा, भरोसा, आसरा, २ दिशा ।

सं०आसन (आस्=बैठना) धि० पु० डाभ वा ऊनकी बनी हुई चीज़, जिसपर हिंदूलोग सन्ध्या पूजा करने के समय बैठते हैं, २ बैठना, योगियों के बैठने का ढंग जैसे पद्मासनादि योग का एक अंग, ३ जांघ के भीतर की ओर ।

प्रा०आसनतलेआना—बोल०बस होना आधीन होना, ताबे होना ।

प्रा०आसनसे आसनजोड़ना—बोल० दूसरे आदमी के बहुत पास बैठना ।

सं० आसन्न (आ, सद्=बैठना) गु० पास, नगीच, समीप, निकट ।

सं०आसव (आ, सु=पैदा होना, मदिराबनाना,) स्त्री० मदिरा, मद्य, दारू, शराब, मद, माण ।

प्रा०आसावसन—भा० पु० नंगा, तृष्णाहीन, बेतमअ ।

प्रा० आसिख (सं०आशिष्) स्त्री० असीस, आशीर्वाद, दुआ ।

प्रा०आसिन (सं० आश्विन) पु० बरसका छठामहीना, कुंआर, आश्विन, आसोज ।

प्रा०आसीन (आस्=बैठना) गु० बैठाहुआ ।

सं०आस्तिक (अस्=होना) क० पु० जो लोग ईश्वर का और परलोक का होना मानते हैं, ईश्वरवादी, परमेश्वर में बिश्वास रखने वाला, बिश्वासी ।

सं०आस्पद—धि० पु० पद, स्थान,

उपाधि, उहदा, जीना, मर्तबा ।

सं०आस्य (अस्=फेंकना, जिस में खाना फेंकाजाताहै)पु० मुंह, मुख।

सं० आस्वाद } आस्वादन } (आ, स्वद=स्वादलेना) भा०पु० रस, स्वाद, चाट ।

सं०आस्वादक (आ, स्वद्+अक) क० पु० स्वादग्राहक, स्वाद लेनेवाला ।

प्रा०आहट--पु० खटका, शब्द, आवाज, पैरों का शब्द ।

प्रा० आहर जाहर--बोल०आना जाना ।

सं० आहार (आ, हृ=लेना, आ उपसर्ग के साथ आने से इसका अर्थ खाना होताहै) पु० खाना, भोजन ।

प्रा०आहि (सं०अस्ति,अस् होना) क्रि० अ० है ।

सं०आहुति (आ, हु=होम करना) स्त्री० मंत्र से देवताओंके लिये होम की सामग्रीको आगमें होमना, देवताओं के लिये होमनेकी सामग्री ।

सं०आह्निक (अहन्=दिन) पु० हरएक दिनका धर्म का काम स्नान सन्ध्यातर्पणआदि, २हरएकदिनका, दिनसम्बन्धी, रोजमर्रा ।

सं०आह्लाद (आ, ह्लाद=प्रसन्न होना) पु० आनन्द, हर्ष हुलास, खुशी ।

सं०आह्वान (आ, ह्वे=बुलाना) आवाहन,बुलाना ।

—०—

इ

सं० इ--पु० कामदेव का नाम वि- स्मय, निन्दा, सम्बोधन, खेद वि० बो० आइ ।

प्रा० इन्दारा (सं०अन्धकुआं, अन्ध् अंधाहोना, नहीं दीखना वा अम=जाना वा शब्दकरना)पु० कुआं, पक्का बँधाहुआ कुआं ।

प्रा०इक (सं० एक) गु० एक ।

प्रा०इकछत्तराज (सं० एकछत्तराज्य) पु० चक्रवर्त्ती राज, सारे संसार का राज ।

प्रा०इकटक (इक=एक, टकना वा तकना, देखना) पु०एकताक, टकटकी ।

प्रा०इकट्ठा } इकठौर } इकठौरा } (सं० एकत्र वा एक स्थान) गु० संग्रह, संचय, एकजगह ।

प्रा०इकलौता (सं०एक) गु० एक ही केवल ।

प्रा० इकसार (सं० एकसार, एक, सृ=जाना) गु० बराबर, सारीखा, सरीखा, समान, सदृश ।

प्रा०इकसंग (सं० एकसंग) गु० एकसाथ ।

प्रा०इका (सं० एक) गु० अकेला, अनूठा, अनूप, उत्तम, पु० एकघो-

ड़े की हलकी गाड़ी, इक्का, बग्घी और पालकी गाड़ी आदि सवारियों से बहुत ही हलके दर्जे की सवारी है और पटना में इस की सवारी का बहुत चलन है ।

सं०इक्षु (इष्=चाहना) स्त्री० ऊख, ईख, केतारी, गन्ना ।

सं०इक्षुरस (इक्षु=ऊख, रस) पु० ऊख का रस, राब ।

सं०इक्ष्वाकुवंशी (इक्ष्वाकु=सूर्यवंशियों का पहलाराजा, वंशी=घराने के) गु०इक्ष्वाकु राजा के घराने के, सूर्यवंशी, अयोध्या के राजा ।

प्रा०इछन } (सं० ईक्षण, ईक्ष=देखना) पु० आंख, नेत्र, २ दृष्टि, देखना ।
इच्छन

सं०इच्छा (इष्=चाहना) स्त्री०चाह, वांछा, आकांक्षा, चाहना, अभिलाष, कामना, ख़्वाहिश, चाह ।

सं०इच्छुक (इष्+उक) क० पु० चाहनेवाला, आकांक्षी, अभिलाषी, ख़्वाहिशमन्द ।

सं०इज्या (यज्=पूजना) स्त्री०पूजा, सेवा, यज्ञ ।

सं०इड़ा (इल्=जाना) स्त्री० गौ० पृथ्वी, वाणी, नाड़ी, स्वर्ग, वामनासिका ।

प्रा०इत (सं=अत्र=यहां) क्रि०वि० यहां, इधर ।

सं०इतर-अव्य० अन्य, भिन्न, नीच ।

सं०इति (इण्=जाना) क्रि० वि० इस प्रकार, ऐसे, २ यहां तक, पूरा, संपूर्ण, समाप्त, यह शब्द अध्याय और पुस्तक और चिट्ठी पत्री के अन्त में लिखा जाता है और इस का अर्थ यह है कि यह अध्याय अथवा बात पूरी होगई, खतम ।

सं०इतिहास (इतिह=परंपरा की बात, इति=ऐसा, ह=निश्चय, अस्=होना वा आसु=रहना) पु० पुरानी कथा जैसे महाभारतआदि, वृत्तान्त, तवारीख़ ।

सं०इत्थम् (इदम्=यह) क्रि० वि० इस प्रकार, इस तरह ।

सं०इत्यादि (इति=ऐसा,आदि=और भी) क्रि० वि० इससे लेके और सब, वग़ैरह ।

सं०इदानी-क्रि०वि० अबहीं, अभी, इसी वक्त ।

सं०इन (इण्=जाना) क० पु० सूर्य, समर्थ, राजा, पति, ईश, हस्तनक्षत्र, १२ गिनती ।

अं०इनकम् टैक्स=आयपरकर, आमदनी पर महसूल ।

सं०इङ्ग (इगु=जाना वा चिह्न करना) चराचर, अभिप्रायानुसार, चेष्टा, अद्भुत, ज्ञान ।

सं०इङ्गित (इग्+इत) भा० पु० सैन, इशारा, चिह्न ।

सं०इन्दिरा (इदि=ऐश्वर्य रखना) स्त्री० लक्ष्मी ।

सं० इन्दीवर (इन्दी=लक्ष्मी, वर=चाहा हुआ) पु० नीलकमल, नीलोत्पल ।

सं० इंदु– (इन्दू=भिगोना, जो अपनी किरणों से धरती को ठंढा करताहै) पु० चांद, चंद्रमा, २ कपूर ।

सं० इन्दुर–पु० मूस, चूहा ।

सं० इन्द्र (इदि=ऐश्वर्य रखना) पु० देवताओं का राजा, स्वर्गका राजा, शक्र, २परमेश्वर, ३ राजा, सबसेबड़ा अथवा श्रेष्ठ, ऐश्वर्य ।

सं० इन्द्रजाल (इन्द्र=ऐश्वर्य अर्थात् चतुराई, जालआंखोंकोढकना, जल्=ढकना) पु०मंत्र अथवा औषधी से चीजें औरतरहसे दीखना, बाजीगरी, छल कपट, फरफंद, धोखा ।

सं० इन्द्रजित् (इन्द्र=देवताओं का राजा, जित्=जीतनेवाला, जि=जीतना) पु० रावणका बेटा, मेघनाद ।

सं० इन्द्रधनुप (इन्द्र=देवताओं का राजा, धनुष=धनुष, कमान) पु०धनुप, पनसूखा, बरसात के दिनोंमें मेह के कणोंपर सूर्यकी किरण पड़नेसे जो आकाशमें धनुष के आकार रंग दिखाई देता है, क़ौस क़ुज़ा ।

सं० इन्द्रप्रस्थ (इन्द्र=देवताओं का राजा, प्रस्थ=पहाड़पर रहनेकेयोग्य जगह, अर्थात् इन्द्र का स्थान जो सुमेरु पहाड़ पर है उसके बराबर) पु० दिल्ली ।

सं० इन्द्रवधू (इन्द्र=देवताओं का राजा, वधू=स्त्री) स्त्री० इन्द्राणी, २ लाल कीड़ा, बीरबहूटी ।

सं० इन्द्राणी (इन्द्र) स्त्री० इंद्र की स्त्री, शची, २ एकप्रकारकी औषधि ।

सं० इन्द्रासन (इन्द्र=देवताओं का राजा, आसन=सिंहासन) पु० इन्द्र का सिंहासन, राजा इंद्रकातख़्त ।

सं० इन्द्रिय }
प्रा० इन्द्री } (इंद्रपरमेश्वर अर्थात् जिन के द्वारा परमेश्वर का ज्ञान होता है, या परमेश्वर की बनाई हुई) स्त्री० जिनसे रूप रस अथवा करना चलना आदिका ज्ञान होता है अर्थात् १ हाथ २ पांव ३ वाक् ४ लिङ्ग ५ गुदा ये पांच कर्मेन्द्रिय कहलाती हैं और १ आंख २ नाक ३ कान ४ जीभ और ५ शरीर परका चमड़ा ये पांच ज्ञानेन्द्रिय कहलाती हैं ।

सं० इन्धन }
प्रा० ईंधन } (इन्ध्=जलाना) पु० जलावन, लकड़ी ।

प्रा० इम्ली (सं० अम्लीका, अम्ल=खट्टा) स्त्री० अम्ली, एक पेड़ का नाम ।

प्रा० इमि-क्रि० वि० ऐसे, इसप्रकार से, इसतरह से।

प्रा० इम्रती } (सं० अमृत) स्त्री० एक
इमरती } भांतिकी मिठाई।

प्रा० इलायची (सं० एला, इल्=जाना, फेंकना) स्त्री० एलाची, एला, एक भांति का गरम मसाला।

सं० इव (इव=फैलना) क्रि० वि० बराबर, जैसे, सदृश, समान, बराबरी को जतलानेवाला शब्द।

अ० इस्तआरा=सं० लक्षणा=मांगना, ऊपरसे लेना।

फ़ा० इस्तफ़ता=सं० प्रज्ञापत्र, किसी बातका निर्णय चाहना।

सं० इषु-पु० बाण, शर।

सं० इषुधि (इषु=बाण, धा=रखना) धि० पु० तूण, तरकश, बाणाधार।

सं० इष्ट (इष्=चाहना) म्प० पु० चाहाहुआ, पूजने योग्य, माना हुआ, प्यारा, पु० अपना देवता, २ अपना प्यारा आदमी, ३ चाहीहुई चीज़।

सं० इष्टदेव (इष्ट=चाहाहुआ, देव=देवना) पु० माना हुआ देवता, अपना देवता, पूज्य देवता, पूजनीय।

प्रा० इहि (सं० इह=यहां) क्रि० वि० इहां, इसमें, इसजगह, २ इसतरह।

—:०:—

ई

सं० ई—पु० कामदेव, स्त्री० लक्ष्मी, वि० बो० आह।

प्रा० ईंट (सं० इष्टका, इष्=चाहना) स्त्री० ईंटा मिट्टी की बनाई हुई चीज़ जिससे मकान बनाये जाते हैं।

प्रा० ईंदुआ-पु० सिरपर बोझा रखने केलिये टेकन जो कपड़े वा सन का बनाया जाताहै, उढकन, टेकन।

सं० ईक्षक (ईक्ष्+अक) क० पु० दिखैया, देखनेवाला, नाजिर।

सं० ईक्षण (ईक्ष=देखना) पु० आंख, नेत्र, २ देखना, दर्शन, दृष्टि।

सं० ईक्षित (ईक्ष्+इत) म्प० दर्शित, देखाहुआ।

प्रा० ईख (सं० इक्षु) स्त्री० ऊख, गन्ना।

प्रा० ईठ (सं० इष्ट) म्प० पु० वाञ्छित इष्ट, चाहा हुआ।

सं० ईड़ा (ईड़=स्तुति करना) भा० स्त्री० स्तुतिकरना, बड़ाईकरना, तारीफ़करना।

सं० ईति (ई=जाना) स्त्री० उपद्रव, अपदा, "अतिवृष्टिरनावृष्टिःशलभाः मूषिकाःखगाः। अत्यासन्नाश्चराजानः षडेताईतयःस्मृताः"। अर्थ—१ बहुत पानी बरसना, २ पानी नहीं बरसना, ३ टिड्डी आना, ४ चूहों के बहुत होनेसे अथवा, ५ पखेरुओं की बहुतायतसे खेतीका बिगाड़, ६ अपने देशके राजापर दूसरे देशके राजा का चढ़ आना, इन छः भांति की विपत्तको ईति कहते हैं।

सं० ईदृश } (इदम्=यह, दृश्=देखना) गु० ऐसा, इस भांतिका, इस प्रकार का।
ईदृत्त

सं० ईप्सा (आप्=चाहना) स्त्री० पाने की इच्छा, चाह, वाञ्छा।

सं० ईप्सित (ईप्स्+इत) कर्म० पु० चाहाहुआ, आपेक्षित, वाञ्छित।

सं० ईर्ष्या } (ईर्ष्य=डाहकरना) स्त्री० डाह, द्रोह, द्वेष, किसीकीबढ़तीदेखकरजलना, हसद।
प्रा० ईर्षा

सं० ईर्षी (ईर्ष्य+ई) क० पु० द्रोही, द्वेषी, हासिद।

सं० ईश (ईश्=ऐश्वर्यरखना) पु० ईश्वर, परमेश्वर, २ शिव, महादेव, ३ राजा, स्वामी, प्रभु, धनी, मालिक।

सं० ईशान (ईश=महादेव) पु० शिव, महादेव, २ पूर्व उत्तर के बीचका कोन, जिसका दिक्पालमहादेवहै।

सं० ईशिता, स्त्री० } (ईश्=ऐश्वर्य रखना) बड़प्पन, बड़ाई, आठ सिद्धिमें की एक सिद्धि।
ईशित्व पु०

सं० ईश्वर (ईश्=ऐश्वर्य रखना) पु० परमेश्वर, सृष्टिकर्ता, प्रभु, २ महादेव, ३ मालिक, धनी।

सं० ईश्वरतां (ईश्वर) स्त्री० प्रभुता।

सं० ईश्वरकृत कर्म० पु० ईश्वररचित, ईश्वरनिर्मित।

सं० ईश्वरोक्त (ईश्वर+उक्त) कर्म० पु० ईश्वरकथित, ईश्वर का कहा हुआ, वेद, कलामइलाही।

प्रा० ईस (सं० ईश) पु० परमेश्वर, २ महादेव, ३ राजा, स्वामी।

सं० ईषत् -क्रि० वि० थोड़ा, किंचित्।

सं० ईहा (ईह्=यतन करना) स्त्री० यतन, चेष्टा, उपाय, २ इच्छा।

—:०:—

उ

सं० उ (उ=शब्दकरना) पु० महादेव, डालना, नियोग, कोपवचन, २ वि० बो० संबोधक का सूचक है, २ तर्क अर्थ में बोला जाताहै।

प्रा० उकटना (सं० उत्=ऊपर, कड=तोड़ना) क्रि० स० गड़ी हुई चीज़ को खोदना, २ उखाड़ना, ३ भेद लेना, ४ छिपीबातको खोलदेना।

प्रा० उकसना (उत्=ऊपर, कस=जाना) क्रि० अ० ऊंचाहोना, उठना चलना।

सं० उक्त (वच्=बोलना) कर्म० पु० कहा हुआ बोलाहुआ, कथित।

सं० उक्ति (वच्=बोलना) भा० स्त्री० कहना, बोलना, बोलने की शक्ति, भाषण, बोलचाल, वचन, कलाम, दलील।

प्रा० उकताना (सं० उत्=ऊपर, कठ्=दुखसे जीना, शोच करना) क्रि० अ० घबराना, उदासहोना, थकना।

प्रा० उखड़ाना } (सं० उत्=ऊपर, खड्=तोड़ना)
उखाड़ना

क्रि० स० जड़से तोड़ डालना, २ उजाड़ना, नाशकरना।

प्रा० उखल, पु० } (सं० उदूखल, उखली, स्त्री० } वा उलूखल, उत्=ऊपर, ख=शून्य, ला=लेना) ऊखली, ओखली, जिसमें चांवल आदि कूटते हैं।

प्रा० उगना (सं० उत्=ऊपर, गम्=जाना) क्रि० अ० पैदा होना, बढ़ना, निकलना।

प्रा० उगतेही जलजाना-बोल० यह मुहावरा उसजगह बोला जाताहै कि जब किसी की आश शुरूअही में टूट जाय।

प्रा० उगलना (सं० उत्=ऊपर, गॄ=निगलना) क्रि० स० मुँहमें कोई चीज लेके पीछे निकाल देना, वमन करना, उलटी करना, क्रय करना।

प्रा० उगाहना (सं० उत्, ग्रह=लेना) क्रि० स० इकट्ठा करना, बटोरना, जमा करना, तहसील करना।

सं० उग्र (उच्=इकट्ठा होना, वा वज्=कठोर होना) गु० कठोर, डरावना, भयंकर, क्रोधित, कड़ा, पु० महादेव का नाम।

सं० उग्रता-भा० स्त्री० कठोरता, तेजी, सख़्ती।

सं० उग्रस्वभाव (उग्र+स्वभाव) कठोर चित्त, तेज मिजाज।

सं० उग्रसेन (उग्र=डरावनी, सेना=फ़ौज) पु० मथुराका राजा, आहुक राजा का बेटा देवक का भाई और पवनरेखा का पति जिसके द्रुमलिक नाम राक्षस से कंस पैदा हुआ।

प्रा० उघड़ना } क्रि० अ० खुलजाना, उघरना } ना, प्रकट होना, २ नंगा होना।

प्रा० उघाड़ना } क्रि० स० खोलना, उघारना } ना, प्रकट करना, २ नङ्गा करना।

प्रा० उचकना-क्रि० अ० कूद उठना, कूदना, उछलना।

प्रा० उचक्का--पु० ठग, उठाईगीरा, गांठकट्टा, जेबकतरा, चोर, छली, पाखण्डी।

प्रा० उचटना (सं० उत्, चट्=तोड़ना) क्रि० अ० अलग अलग होना उखड़ना, बिखरना, पिछलना, उदास होना, मन नहीं लगना, २ नींद का टूटना।

प्रा० उचरना } (सं० उच्चरण, उच्चरना } उत्=ऊपर, चर्=चलना, पर उत् उपसर्ग के साथ आने से अर्थ बोलना होता है) क्रि० स० बोलना, कहना, शब्दों का उच्चारण करना।

प्रा० उचाटना (सं० उच्चाटन, उत्=ऊपर, चट्=तोड़ना) क्रि० स० जुदा २ करना, अलग २ करना।

प्रा० उचाटहोना-बोल० उदास होना, जी नहीं लगना, उचाटी लगना।

सं० उचित (उच्=इकट्ठा होना, वा

वच्=बोलना) क० पु० योग्य, ठीक, चाहिये, मुनासिब ।

सं० उच्च (उत्=ऊपर, चि=इकट्ठा करना) गु० ऊंचा, लम्बा, उन्नत प्रांशु, उदग्र, तुंग, उच्छ्रित ।

प्रा० उच्चशिक्षाकीशिक्षा--स्त्री० आलादर्जा की तअलीम ।

सं० उच्चस्वर-पु० बड़ा शब्द, बुलन्द आवाज़ ।

सं० उच्चार (उत्=ऊपर, चर्=चलना) पु० उच्चारण, कथन, वर्णन, मल, विष्ठा ।

सं० उच्चारण (उत्=ऊपर, चर्=चलना, उत् उपसर्ग के साथ आने से अर्थ, बोलना होता है) भा० पु० बोलना, तलफ़्फ़ुज़ ।

सं० उच्चरित (उत्+चर्+इत) र्म० पु० कथित, कहा हुआ ।

सं० उच्छिन्न (उत्=ऊपर, छिद्=काटना) र्म० पु० कटाहुआ, उखड़ा हुआ, निर्मूल ।

सं० उच्छिन्नता--भा० स्त्री० नाश, खराबी, बरबादी ।

सं० उच्छिष्ट (उत्, शिष्=बांकी रहना , र्म०पु० जूठा, खानेके पीछे बचा हुआ खाना, भुक्तावशिष्ट ।

सं० उच्छेद (उत्+छिद्=काटना) भा० पु० विनाश, खराबी, काटना, कतरना ।

सं० उच्छेदी (उच्छेद्+ई) क०पु० नाशक, काटनेवाला ।

प्रा० उछंग (सं०उत्सङ्ग, उद्=ऊपर, षञ्ज्=मिलना) स्त्री०गोदी, गोद ।

प्रा० उछरना, उछलना (सं० उत्=ऊपर, चल्=चलना) क्रि० अ० कूदना, कूद उठना, ऊपर उठना, कुदकना ।

प्रा० उछाह (सं०उत्साह, उद्, सह्=सहना) पु० आनंद, हर्ष, खुशी ।

प्रा० उजागर--गु० नामवर, नामी, प्रतापी, प्रसिद्ध, विख्यात, यशस्वी ।

प्रा० उजाड़ना (सं० उत्पाटन, उत् =ऊपर, पट्=जाना, अथवा, उत्=ऊपर, जट्=इकट्ठाहोना) क्रि०स०नाश करना, चौपटकरना, बरबाद करना ।

प्रा० उजाला, उजियारा (सं०उज्ज्वल, उत्=ऊपर, ज्वल्=चमकना) भा०पु० प्रकाश, तेज, चमक ।

प्रा० उज्जल, सं० उज्ज्वल (उद्, ज्वल्=चमकना) क०पु०साफ़, स्वच्छ, निर्मल, चमकीला, प्रकाशित, दीप्तिमान् ।

सं०उज्ज्वलन--भा० पु० उद्दीपन, प्रकाश, करना, चमकना ।

प्रा० उझकना--क्रि० स० ताकना, झांकना ।

प्रा० उझड़, उज्झड़ गु० गँवार, अनघड़ अखड़, मूर्ख ।

प्रा० उझलना (सं उज्झलन, उद्झ=छोड़ना) क्रि०स०एक बरतन से दूसरे बरतन में डालना ।

सं० उज्झलित-र्म्म० छोड़ाहुआ, डाला हुआ ।

सं० उट-पु०तृण,तिनका,ऊर्ण,पत्ता ।

सं० उटज उट + जन्=पैदाहोना वा बनाना) पु० पर्णशाला, पत्तों का घर, मुनिगृह ।

प्रा० उठना(सं० उत्थान,उद्=ऊपर, स्था=ठहरना) क्रि० अ० खड़ा होना, २ उगना, ३ दूर होना,मौकूफ होना, अवालिश होना ४ खर्च होना, बरखास्त करना ।

प्रा० उठबैठ-बोल० बेचैनी, उठना बैठना, कसरत ।

प्रा० उठाईगीरा-गु० चोट्टा, ठग, उचक्का, हथमार ।

प्रा० उठाना (सं० उत्थापन, उद्=ऊपर, स्था=ठहरना) क्रि० स० खड़ा करना, ऊंचा करना, २ उगाना, ३ दूर करना,४ खर्च करना, ५ सहना, ६ उभारना, भड़काना ।

प्रा० उठादेना-बोल० दूर करना, २ उभारना, भड़काना ।

प्रा० उड़ना (सं० उत्=ऊपर, डी=उड़ना) क्रि० अ० पखेरू का आकाश में चलना ।

प्रा० उड़ाऊ (उड़ाना) गु० लुटाऊ, बहुत खर्च करने वाला, वृथा खर्च करने वाला ।

प्रा० उड़ाना (सं० उत्=ऊपर, डी=उड़ना) क्रि० स० पखेरूको उड़ने के लिये छोड़ना, २ लुटाना,गँवाना, फेंकना, नशाना, वृथा खर्च करना, ३ चुराना, ले लेना, ४ किसी चीज को हवा में छोड़ना ।

प्रा० उड़ाना पुड़ाना-बोल० लुटाना,गँवाना, नशाना,वृथाखर्चक०

सं० उडीन-भा० पु० उड़ना, परवाज होना ।

सं० उडीयमान (उत्=ऊपर, डी=उड़ना) क० पु० उड़नेवाला, आकाशगामी, नभचर ।

सं०उडु (उड्=मिलना, वा उत्=ऊपर डी=उड़ना) पु० तारा, नक्षत्र ।

सं० उडुगण (उडु=तारा, गण=समूह) पु० तारों का समूह ।

सं० उडुप (उडु=नक्षत्र, जल, पा=पीना वा पालना) क० पु० चन्द्र, चांद, २ डोंगा, प्लव, कोल ।

प्रा० उढ़ाना (सं० ऊर्णु, ढकना) क्रि० स० ढकना, कपड़ा पहनाना ।

प्रा० उढ़ैया (सं०ऊर्णु, ढकना) क० पु० ओढ़ने वाला, पहनने वाला ।

प्रा० उतंग (सं० उत्तुङ्ग, उद्=ऊपर, तुङ्ग ऊंचा) गु० बहुत ऊंचा ।

प्रा० उत-क्रि० वि० उधर, वहां ।

प्रा० उतरनहोना (सं० उत्तीर्ण, उद्=ऊपर, तृ=पार होना) क्रि० अ० उऋण होना, ऋण से छूटना कर्ज से रिहा होना।

प्रा० उतरना (सं० उत्तरण, उद्=ऊपर, तृ=पार होना) क्रि० अ० नीचे आना, २ ठहरना, टिकना, डेरा करना, बासलेना, विश्राम करना, ३ किनारे पहुंचना, पार होना, लांघना, ४ घटना, कम होना मंदा होना, ५ उदास होजाना, फीका पड़ना, (जैसे "उसका रंग उतरगया" ६ उऋण होना, कर्ज से छुटना, ७ नशा कम होजाना, ८ किसी पद अर्थात् ओहदे से मौकूफ़ होजाना।

सं० उत्कट-गु० मत्त, अधिक, तीव्र, क्रोधी, गर्वी, भयानक, पु० क्रोध, गर्व, कठोर, उग्र, दुःसह।

सं० उत्कण्ठा (उद्=ऊपर, कठ=सोचना, वा चाहसे याद करना) भा० स्त्री० लालच, चाह, चाहना, इच्छा, अभिलाषा।

सं० उत्कण्ठित-क० पु० उत्सुक, अभिलाषी, ख़्वाहिशमन्द।

सं० उत्कर्ष (उद्=ऊपर, कृष्=खेंचना) भा० पु० बड़ाई, सराह, प्रशंसा, उत्तमता, श्रेष्ठपन।

सं० उत्कर्षता=भा० स्त्री० श्रेष्ठता, प्रबलता, उत्तमता।

सं० उत्कृष्ट (उद्=ऊपर, कृष्=खैंचना) गु० उत्तम, सबसे अच्छा वा बड़ा, श्रेष्ठ, प्रधान।

सं० उत्खात (उद्=ऊपर, खन्=खोदना) कर्म० पु० उन्मूलित, उखड़े हुये।

सं० उत्तम (उद्=ऊपर, तम=बहुतही बहुत) गु० श्रेष्ठ, सबसे अच्छा, मुख्य, पहला, प्रधान, मुखिया।

सं० उत्तमर्ण-पु० ऋणदाता, ब्योहरा, कर्ज देनेवाला।

सं० उत्तमांग (उत्तम=सबसे अच्छा वा मुख्य, अङ्ग=शरीरका एकभाग) पु० शिर, माथा, मस्तक।

सं० उत्तर (उद्=ऊपर, तृ=पारहोना) पु० जवाब, उत्तर दिशा, प्रतिवाक्य, दिक्, सिम्त, गु० पिछला, पीछे।

सं० उत्तराधिकारी (उत्तर=पीछे, अधिकारी=वारिसअथवामालिक) पु० वारिस, जानशीन।

सं० उत्तानपात्र-पु० तवा, तावा।

सं० उत्तरायण (उत्तर=उत्तर दिशा, अयन=चाल) पु० आधाबरस जब कि सूर्य विषुवत् रेखा के उत्तर की ओर रहता है, माघ से असाढ़तकके छःमहीने।

सं० उत्तरार्द्ध (उत्तर=पिछला, अर्द्ध=आधा) पु० पिछला आधा।

सं० उत्तीर्ण (उत्=ऊपर, तृ=पार जाना) क० पु० उल्लंघन, पारगत, पारपहुंचा, कामयाब ।

प्रा० उत्तू-पु० परत, तह, चुनत घड़ी ।

प्रा० उत्तूकरना-बोल० तह जमाना, चुनना ।

सं० उत्तेजक-क०पु० धमकानेवाला, प्रेरणा करनेवाला ।

सं० उत्तेजना (उत्=ऊपर, तिज्=तीक्ष्णकरना) भा० स्त्री० प्रेरणा करना, व्यग्रता करना, तीक्ष्णकरना धमकाना, भड़काना, तेजकरना ।

सं० उत्तेजित-पु० प्रेरित, धमकाया गया, भड़कायागया ।

सं० उत्तोलन (उद्=ऊपर, तुल्=तोलना) पु० तोलना, ऊपर को उठाना ।

सं० उत्थान (उद्=ऊपर, स्था=ठहरना) भा० पु० उठाना, उठाव, उद्योग ।

सं० उत्थान एकादशी (सं० उत्थान =उठना, एकादशी ग्यारहवीं तिथि) स्त्री० कातिक सुदी ११ जिस दिन विष्णु नींद से उठते हैं ।

सं० उत्थापन (उद्=ऊपर, स्था=ठहरना) भा० पु० उठाना, उठाकर रखना ।

सं० उत्पतन (उत्=ऊपर, पत्=गिरना) भा० पु० ऊपर से गिरना ।

सं० उत्पत्ति (उद्=ऊपर, पद्=जाना) स्त्री० जन्मना, पैदा होना पैदावारी, उगना ।

सं० उत्पन्न (उद्=ऊपर, पद्=जाना) गु० पैदा हुआ, जन्माहुआ २ लाभ पाया हुआ ।

सं० उत्पल (उद्=ऊपर, पल=जाना) पु० कमल, कँवल, नीलाकमल ।

सं० उत्पाटन (उत्, पट=लपेटना वा उखाड़ना) भा० पु० उखाड़ना ।

सं० उत्पात (उद्=ऊपर, पत्=गिरना) पु० उपद्रव, बखेड़ा, बिगाड़, हानि, अन्धेर ।

सं० उत्पादक-क० पु० जनक, उत्पन्नक०

सं० उत्पादन-भा० पु० जनना, पैदा करना ।

सं० उत्प्रेक्षा (उद्=ऊपर, प्र=बहुत, ईक्ष्=देखना भावना करना) भा० स्त्री० बराबरी, उपमा, तुल्यता, एक अलंकार का नाम, ढील, देर ।

सं० उत्प्लुत (उत्+प्लु=कूद जाना) क० पु० तरऊपरहोजाना, लौटपौटजाना ।

सं० उत्सव (उद्=ऊपर, सू=पैदा होना) पु० आनन्द का काम, जैसे ब्याह, नाच, राग, रंग, आदि, पर्व, त्योहार, बड़ादिन ।

सं० उत्सर्ग (उत्+सृज्=छोड़ना वा पैदाकरना) भा० पु० न्याय, त्याग, दान, रोकना, अर्पण करना ।

सं० उत्साह (उद्=ऊपर, सह्=सहना) पु० आनन्द, उछाह, खुशी, २ यतन, उद्योग।

सं० उत्सुक (उद्+सू=पैदाहोना) गु० चाहनेवाला।

प्रा० उथलना—क्रि० स० उलटना, औंधाना, तलेऊपर करना।

प्रा० उथलपुथल—बो० उलटपुलट, उलटा पुलटा, ऊपर नीचे, तले ऊपर, गटपट गड़बड़, इधरका उधर उधर का इधर।

सं० उद } (उ=शब्द करना) उप०
उत } ऊपर, ऊंचा, ऊपर की ओर, ऊंचाकिया हुआ, प्रकट, बड़ाई बल आदि अर्थों में भी आताहै और जगह बल और पद अर्थात् दर्जे की अधिकाई में भी बोला जाता है और अधःकाउलटा है।

सं० उद } (उन्द्=भिगोना) पु०
उदक } पानी, जल।

सं० उदग्र (उद्=ऊपर, अग्र=सिरा वा नोक) गु० ऊंचा, तीखा, डरावना।

सं० उदधि (उद=पानी, धा=रखना) पु० समुद्र, सागर, जलनिधि।

सं० उदय (उद्=ऊपर, इ=जाना) पु० एक पहाड़ का नाम जहां से हिंदू मानते हैं कि सूर्य निकलता है, २ उगना, निकलना, ३ जोत, प्रकाश, ४ बढ़ना, बढ़ती, वृद्धि, उन्नति, भागमानी।

सं० उदयास्तावधि (उदय+अस्त+अवधि) स्त्री० निकलने और डूबने की सीमा।

प्रा० उदयहोना—क्रि० अ० सूर्यका निकलना, २ वृद्धि होना, उन्नति होना, भाग जागना, फूलना फलना।

सं० उदर (उद्=ऊपर, ऋ=जाना, वा उद, द=फाड़ना) पु० पेट।

सं० उदरम्भरि—पु० पेटार्थी, पेटू।

सं० उदर्चि—पु० अग्नि, अग्निकी चिनगारी।

सं० उदात्त (उत्=ऊपर, आ=से, दा=देना) पु० ऊंचा स्वर, ऊंचेस्वर से बोलना, २ दान, ३ एकप्रकार का अलंकार।

सं० उदार (उद्=ऊपर, आ=से, रा=देना) गु० दातार, दाता, दानी, देनेवाला, बड़ा, सीधा, सरल, गंभीर।

सं० उदारता (उदार) भा० स्त्री० दातारी, सखावत।

सं० उदास (उद्=ऊपर, आस्=बैठना) पु० बैराग्य, एकान्त में बैठना, गु० मलिन, अनमना, चिंता, करताहुआ, दुःखित, दुःखी, संतापी, २ बे परवाह।

सं० उदासी (उद.स) गु० बैरागी, एकांत में रहने वाला, भिन्न और

बैरी की बराबर देखने वाला, २ मलिन, स्त्री० शोच, मलिनता, चिंता, फिक्र, दुःख,संताप।

सं० उदासीन (उद्=ऊपर, आस्=बैठना) पु० संन्यासी, बैरागी, योगी, अतिथि, वनबासी, तपसी, जिसने संसार छोड़ दिया और जिसके मित्र और बैरी बराबरहों, त्यागी वानप्रस्थ।

सं० उदाहरण (उद्=ऊपर, आ=से,हृ=लेना) पु० दृष्टान्त,मिसाल।

सं० उदित (उद्=ऊपर,इ=जाना) र्म्म० पु० कहाहुआ, निकलाहुआ, प्रकाशित, प्रकट, बढ़ा हुआ।

सं० उदीची=उत्तरदिशा।

सं० उदीरण (उत्,ईर्=प्रेरणा क०) भा० पु० कथन, कहना।

सं० उदीरित–र्म्म० पु० कथित, कहा गया।

सं० उद्गार (उद्=ऊपर, गृ=निगलना) पु० वमन, डकार, सुख,दुःख, बिस्मय।

प्रा० उघारना (सं० उद्घाटन,उत्=ऊपर, घट्=खोलना) क्रि० स० खोलना, उघारना।

सं० उद्दाल (उद्=ऊपर, दल्=दो टुकड़े करना) पु०एक ऋषिका नाम जो छः महीनेमें एकबार खाताथा।

सं० उद्दिष्ट–र्म्म० पु० लक्षित, दिखाया गया।

सं० उद्देश (उद्=ऊपर, दिश्=देना) पु० चाह, २ अनुसंधान, खोज, पता, प्रयोजन, मतलब, जिसके विषयमें कुछ कहा जाय।

सं० उद्धरण (उद्=ऊपर, हृ=लेना) भा०पु० उद्धार करना मुक्ति देना।

सं० उद्धार (उद्=ऊपर, हृ=लेना) पु० बचाव, छुटकारा, मुक्ति, निस्तारा।

सं० उद्धृत–र्म्म०पु० ऊंचाकियागया, उठाया गया।

सं० उद्भव (उद्=प्रकट, भू=होना पु० पैदा होना,जन्म, उत्पत्ति।

सं० उद्यत (उद्=ऊपर, यम्=रोकना) गु० तैयार, लगाहुआ, प्रवृत्त, पु० अध्याय।

सं० उद्यम (उद्=ऊपर, यम्=रोकना, पर उद् उपसर्ग के साथ आने से यत्न करना होता है) भा० पु० यत्न, उपाय, परिश्रम, मिहनत, कोशिश, उद्योग, पेशा।

सं० उद्यान (उद्=ऊपर,या=जाना) भा० पु० बाग़, बग़ीचा, उपवन, २ मतलब, प्रयोजन।

सं० उद्यानपाल (उद्यान=फुलवाड़ी, पाल=पालना) क० पु०माली, बाग़बान।

सं० उद्योग (उद्=ऊपर, युज्=मिलना) पु० उपाय, उद्यम, यत्न, परिश्रम, चेष्टा।

सं० उद्योत (उद्=ऊपर, द्युत्=चमकना) पु० चमक, उजाला, प्रकाश।

सं० उद्वाह-पु० विवाह, ब्याह।

सं० उद्विग्न (उद्=ऊपर, विज्=डरना, कांपना) गु० व्याकुल, उदास, शोचमें।

सं० उद्वेग (उद्=ऊपर, विज्=डरना, कांपना) पु० घबराहट, व्याकुलता, चिंता, शोच, डर।

प्रा० उधारना (सं० उद्धारण, उद्=ऊपर, हृ=लेना) क्रि० स० मुक्ति देना, छुटकारा करना, पार करना, बचाना, तारना।

प्रा० उधेड़ना-क्रि० स० खोलना, सुलझाना।

प्रा० उधेड़बुन (उधेड़ना+बुनना) बोल० मिहनत, झंझट, काम, धंधा।

सं० उन्नत (उद्=ऊपर, नम्=झुकना) गु० ऊंचा, लम्बा, वर्द्धित।

सं० उन्नति (उद्=ऊपर, नम्=झुकना) स्त्री० ऊँचाई, २ बढ़ती, बढ़ंति, वृद्धि, उदय, तरक्की।

सं० उन्नमित (उत्=ऊपर, नम्+इत) कर्म० पु० झुकायागया, लचायागया।

सं० उन्मत्त / उन्मद (उद्=ऊपर, मद्=मस्त होना) क० पु० मतवाला, पागल, सिड़ी, बौराहा, नशेबाज, प्रमादी।

सं० उन्माद (उद्=ऊपर, मद्=मस्त होना) क० पु० सिड़ीपन, बौराहापन, पागलपन, अचेतता।

सं० उन्मान=तुलादिकीतौल तराजू की तौल।

सं० उन्मीलन (उत्, मील=मींचना) भा० पु० खिलना, फूलना, विकसना।

सं० उन्मुख=अभिमुख, सन्मुख, सामने, उत्सुक, उत्कंठित।

सं० उन्मूलन (उत्=ऊपर, मूल=जमाना, रोपना, उत् उपसर्ग से उखाड़ना अर्थ होगया) भा० पु० उत्पाटन, उखाड़ना, ऊपर खींचना।

सं० उप-उपस० समीप, पास, बराबर, छोटा, कम, न्यून, अधिक, आरंभ, पूजा, शुरूअ, नाश, यह उपसर्ग दुर का उलटा है।

सं० उपकार (उप=पास, कृ=करना) पु० कृपा, भला, सहायता।

सं० उपकारी (उपकार) क० पु० उपकार करनेवाला, भला करनेवाला, सहायक, कृपाल।

सं० उपकारिणी-स्त्री० उपकार करनेवाली।

सं० उपक्रम (उप=आरंभ, क्रम्=जाना अर्थात् शुरूअ होना) भा० पु० प्रारंभ, आरंभ, शुरूअ, तितिम्मा, जमीमा, सूचना, भूमिका, उपधा।

प्रा० उपखान (सं० उपाख्यान, ख्या=कहना) पु० कथा, इतिहास।

सं० उपगम (उप=समीप, गम्=जाना) पु० यात्रा, प्राप्ति, स्वीकार, पासजाना, उदय।

सं० उपगुरु=छोटा पाठक, छोटा मास्टर, मानीटर।

सं० उपचार (उप=पास, चर=चलना) पु० सेवा, मन्त्र का जपना, २ वैद्य का काम,इलाज,चिकित्सा, उपाय, यत्न, ३ घूस, रिशवत।

प्रा० उपज (सं० उप=पास, जन्=पैदा होना) स्त्री० बिन सोचने के जो कुछ बात उसी दम कही जाय वा कुछ गाया जाय, गान, तान, अन्तरा।

प्रा० उपजना (सं०उप=पास, जन्=पैदा होना वा उत्पन्न होना) क्रि० स० उगना, बढ़ना, पैदा होना, अंकुर निकलना।

प्रा०उपजाऊ (उपजना) गु० उर्वरा।

सं० उपजाप (उप=पास, जप्=जपना) भा० पु० मक्र, फ़रेब, कपट।

सं० उपजीवी (उप+जीव=जीना) क० पु० आश्रयी, आसरागीर, अवलम्बी।

प्रा० उपड़ना (सं० उत्पाटन, उद्=ऊपर, पट्=जाना) क्रि० अ० उखड़ना।

सं० उपदंश (उप+दंश=काटना) पु० गर्मीका रोग, सांपका काटना।

सं० उपदा (उप,दा=देना) स्त्री० भेंट।

सं० उपदेश (उप=पास, दिश्=देना भा० पु० शिक्षा, सीख, सिखावन, नसीहत, सम्मति, सलाह, २ मंत्रदेना।

सं० उपदेशक, उपदेशी, उपदेष्टा (उपदेश) क० पु० उपदेशदेनेवाला शिक्षक, गुरु, आचार्य्य।

सं० उपद्रव (उप=पास, द्रु=जाना) पु० बखेड़ा, उत्पात, उपाध, बिगाड़, अन्याय, अन्धेर।

सं० उपद्वीप (उप=छोटा, द्वीप=धरती का टुकड़ा) पु० टापू, छोटाद्वीप।

सं० उपधान (उप=पास, वा ऊपर, धा=रखना) पु० तकिया।

सं० उपनयन-पु० यज्ञोपवीत (उपनीत, जनेऊ।

सं०उपनिषद् (उप=पास, नि=अच्छी तरहसे, सद्=जाना) पु० वेद का उत्तम भाग, वेद का अंग, वेदान्त शास्त्र।

सं०उपनेत्र (उप=पास,नेत्र=आंख) पु० चश्मा, आंखोंका सहायक कांच।

सं० उपन्यास (उप=ऊपर, न्यास=रखना) भा० पु० त्याग, हाथ, कथन करना, रखना, स्थापन।

सं०उपपत्ति (उप=पास,पद्=जाना) स्त्री० युक्ति, योग्यता, २ सबूत, शोधन, समाधान, प्रमाण।

सं० उपपातक (उप=छोटा, पातक=पाप) पु० छोटा पाप, पाप जैसे

गोहत्या, लड़कीको बेचना आदि ।

सं० उभयपक्षीय-गु० तर्फैन, दोनों ओर के ।

सं० उपमा (उप=बराबर, मा=नापना) भा० स्त्री०बराबरी,समानता, सादृश्य, तुल्यता, दृष्टांत, मिसाल, एक अलंकार का नाम ।

सं० उपमान (उप=बराबर+मान=माप) पु० पूर्णगुणवाला, मुशब्बा बिही, अवर्ण्य ।

सं० उपमेय (उप=बराबर+मेय=कियाजाय) न्यून गुणवाला, मुशब्बा, वर्ण्य ।

सं० उपयुक्त (उप=बराबर, युज्=मिलना)गु० योग्य, ठीक, उचित, शामिल ।

सं० उपयोग-पु० इस्तमाल, युक्त करना ।

सं० उपयोगी (उप=बराबर, युज्=मिलना) गु० अनुकूल, सहायक, योग्य,ठीक, इस्तमालके लायक़ ।

प्रा० उपरना- पु० दुपट्टा, एकपट्टा, २ ओढ़नी, अचला ।

सं० उपराम (उप+रम) स्त्री०शान्ति, स्थिरता, सुख ।

सं०उपराग(उप=पास, रञ्ज्=रँगना) पु० ग्रहण, गहन ।

प्रा० उपरांत (सं० उपरि=ऊपर, अन्त=सिरा) क्रि० वि० पीछे, फिर, इसके पीछे ।

सं० उपरोक्त (ऊपर+उक्त, वच्=कहना) म्म० ऊपर कहाहुआ, मज़कूरावाला ।

प्रा०उपरोहित (सं० पुरोहित) पु० कुलगुरु, पुरोधा, पुरोहित ।

सं० उपल (उप=पास,नी=लेजाना, उप उपसर्ग के साथ आने से अर्थ फैलाना हुआ अर्थात् जिस से पहाड़ फैल जाता है) पु० पत्थर, पाषाण ।

सं० उपलब्धि (उप=ऊपर, लभ्=लाभ) भा० स्त्री० प्राप्ति,हासिल, मिलना ।

सं० उपलसित (उपल=पत्थर,सित=सफ़ेद) पु० संगमर्मर ।

सं० उपवन (उप=बराबर, बन=जंगल) पु०बाग़,बग़ीचा,फुलवाड़ी वाड़ी, वाटिका ।

सं०उपवास (उप, वस=रहना, पर उप उपसर्ग के साथ आने से इसका अर्थ उपास करना होता है) भा० पु० व्रत, लंघन, उपास, अनाहार, भूखों रहना ।

सं० उपवीत (उप=पास, अज्=जाना) पु० जनेऊ, यज्ञसूत्र ।

सं० उपवेद (उप=बराबर,वेद) पु० १ आयुस् २ गन्धर्व ३ धनुष ४ स्थापत्य इन्हीं चार विद्याओं को उपवेद कहते हैं जो वेदसे निकली हैं । इन में से आयुस् विद्या, ब्रह्मा, इन्द्र और

धन्वन्तरी आदि से फैली है । इसमें रोगों की पहचान और औषधी आदि का वर्णन है । दूसरी गन्धर्व विद्या को भरत ने निकाली और फैलाई । और तीसरी धनुष विद्या को बिश्वामित्र ने राजपूतों को शस्त्रों के काममें लाने के लिये निकाली । और चौथी स्थापत्य विद्या को ६४ कलों के काममें लाने के लिये विश्वकर्म्मा ने निकाली ।

सं० उपवेष्टन (उप=ऊपर,विश्=लपेटना) भा० पु० लपेटना, बसना, जामा ।

सं० उपशम (उप+शम्=रोकना, वा दबाना) भा०पु०शान्ति,समता, समाई, इन्द्रियनिग्रह ।

सं० उपसर्ग (उप=पास, सृज्=पैदा होना) पु० अव्यय जो क्रियाके साथ लगाये जाते हैं, जैसे प्र, परा, अप, सम, अनु, अव, आदि, २ उपद्रव, पीड़ा, प्रेत, ग्रह, उत्पात, अमंगल, उत्पत्ति ।

सं० उपस्थान (उप=पास,स्था=ठहरना) भा०पु० उपस्थित, मौजूदगी, सेवा, नजदीकी, हाजिरी, स्तुति, पूजा ।

सं० उपस्थित (उप=पास, स्था=ठहरना) गु० तैयार, हाजिर, सामने, पास ठहरा हुआ, पास आया हुआ ।

सं०उपस्थितिपत्र पु०नक्शाहाजिरी

सं० उपहार (उप=पास, हृ=लेना) पु०भेंट, पूजा ।

सं० उपहास(उप=दोषकहना,हास=हँसी, हस=हँसना) भा० पु० ठट्ठा, हँसी, निन्दा के साथ हंसी करना, बोली ठोली बोलना, परिहास,ठट्ठा ।

सं० उपहासक (उप+हास्+अक) क० पु०हँसनेवाला,मसखरा ।

सं० उपहास्य (उप+हास्+य) र्म्म० पु० हँसनेयोग्य, निन्दायोग्य, निन्दनीय ।

सं० उपाख्यान (उप, आ, ख्या=प्रकट करना) पु० पुरानी कहानी इतिहास, बात, कहानी, कथा ।

प्रा० उपाड़ना (सं०उत्पाटन उद्=ऊपर,पट्=जाना)क्रि०स०उखाड़ना।

प्रा० उपाध (सं० उप, आ, धा=रखना) स्त्री० बखेड़ा, बिगाड़, उपद्रव, अन्याय ।

सं० उपाधान (उप+आधान)धि० तकिया, बालीन ।

सं०उपाधि (उप=पास, आ=से, धा=रखना) स्त्री० धर्मकी चिन्ता, २ बिशेषण,नाम,पदवी,३छल,कपट।

सं० उपाधिकारक (उपाधि+कारक, कृ=करना) क०पु० झगड़ालू, मुफसिद, फसादी ।

सं० उपाध्याय (उप=पास, आ=से, अधि+इ=पढ़ना) पु० अध्यापक, पढ़ानेवाला, पाठक, शिक्षक, मुदर्रिस, गुरू ।

सं० उपानह् (उप, आ, नह्=बांधना) पु० जूता, पगरखी, पनही, पापोश ।

प्रा० उपाना (सं० उत्पन्न) क्रि० स० पैदा करना, इकट्ठा करना, कमाना ।

सं० उपाय (उप=पास, अय्=जाना वा, उप, आ, इण्=जाना) पु० यत्न, तदबीर, उद्यम, उद्योग, मिहनत, साधन, २ इलाज ।

सं० उपायी-क० साधक, यत्री, तदबीरी

सं० उपायन-पु० भेंट, नज़र, उपहार, पास जाना ।

सं० उपार्ज्जन (उप=पास, अर्ज्=इकट्ठाकरना) भा० पु० इकट्ठाकरना, संग्रह, संचय, कमाई ।

सं० उपार्ज्जित-र्म्म० संचित, जोड़ा हुआ ।

सं० उपार्ज्जनीय (उपार्ज्जन+अनीय) र्म्म० पु० संग्रह योग्य, जोड़ने लायक़ ।

सं० उपालम्भ (उप+आ, लभ्=कठोर वचन क०) भा० पु० शिकायत, गिला, उरहना, वार्ता, बातें ।

सं० उपालम्भन-भा० पु० लअ्नत, मलामत, झिड़की ।

सं० उपासक (उप=पास, आस्=बैठना) क० पु० उपासनाकरनेवाला, पूजनेवाला, सेवक, दास, भक्त ।

सं० उपासना (उप=पास, आस्=बैठना) स्त्री० सेवा, पूजा, टहल, भक्ति, देवता की पूजा, आराधना ।

प्रा० उपास (सं० उपवास) पु० व्रत, लंघन, अनाहार, उपवास, भूखारहना ।

सं० उपासनीय (उप+आस्+अनीय) र्म्म० सेवायोग्य, आराध्य, सेव्य, ख़िदमत के लायक़ ।

सं० उपास्य (उप=पास, आस्=बैठना) र्म्म० उपासना करने योग्य, पूजन योग्य, आराधना करने योग्य ।

सं० उपेक्षा (उप=पास+ईक्ष्=देखना, उपके लगने से छोड़ना अर्थ होगया) भा० स्त्री त्याग, ढील, ग़फ़लत ।

सं० उपेक्षित (उप+ईक्षित) र्म्म० पु० छोड़ागया, त्यक्त ।

सं० उपेत (उप+इ+त, इ=जाना) क० शामिल, युक्त ।

सं० उपेन्द्र (उप=छोटा, इन्द्र=देवताओं का राजा) पु० वामन, इन्द्र का छोटा भाई, विष्णु जब वामन अवतार लिया तब इन्द्रके छोटे भाई हुये थे ।

प्रा० उफनना (सं० उद्=ऊपर,

फण=जाना) क्रि० अ० बहुत आंच लगने से दूध अथवा और किसी चीज का हांडी अथवा बट-लोही से बाहर निकल आना ।

सं० उबकना-क्रि० अ० वमनहोना, कै होना, उलटी होना, रद्दकरना ।

प्रा० उबटन, उबटना (सं० उद्वर्त्तनः उद्, वृत=होना) पु० शरीर का मैल उतारने के लिये आटा सरसों बेसन आदि की बनी हुई चीज ।

प्रा० उबलना (सं० उद्=ऊपर, बल=जाना) क्रि० अ० उबलना, खौलना, ओटना, मीलना, खलबलाना, उसीजना ।

प्रा० उबसना-क्रि० अ० सड़ना, गलना, पचना, बिगड़ना ।

प्रा० उबारना (सं० उद्धारण) क्रि० सं० बचाना, छुड़ाना, रखना ।

सं० उभय, प्रा० उभौ गु० दो, दोनों, आपस में ।

प्रा० उभरना (सं० उद्=ऊपर, भृ=भरना) क्रि० अ० उमड़ना, बढ़ना, बहुत भरना, निकलना, निकल आना, २ उठना, उठआना ।

प्रा० उभारना-क्रि० स० फुलाना, उकसाना, खड़ाकरना, भड़काना ।

प्रा० उमंग-स्त्री० बहुत खुशी, आनंद, मग्नता, २ चाह, इच्छा, अभिलाष, ३ धुन, तरंग, लहर ।

प्रा० उमंडना, उमडना क्रि० अ० छलकना, बहुत भरने से फूट निकलना, भलकना, बहना, जल थल होना ।

प्रा० उमंड उमंड कर रोना—बोल० फूट फूट के रोना ।

सं० उमा (उ=शिव, मा=मानना, वा "ओं शिवस्य मा=लक्ष्मीः,, शिव की लक्ष्मी, वा उ=हे, मा=मत "हे वत्स मा कुरु,, जैसे कुमारसंभवकाव्य में लिखाहै "उमेति मात्रातपसो निषिद्धा पश्चादुमाख्यां सुमुखी जगाम,, अर्थात् जब पार्वती तप करने को जाती थीं तब उनकी माने कहा कि हे बेटी तप मतकर) स्त्री० पार्वती, दुर्गा, शिवा, शिवराणी, गिरिजा, भवानी, रुद्राणी ।

सं० उमापति (उमा=पार्वती, पति=भर्ता) पु० महादेव, शिव ।

सं० उमासुत (उमा=पार्वती, सुत=बेटा) पु० कार्तिकेय, देवताओं का सेनापति ।

सं० उमेश उमा=पार्वती, ईश=पति) पु० महादेव, शिव ।

प्रा० उर (सं० उरस्, ऋ=जाना) पु० छाती, हिरदा, हृदय, वक्षस्थल ।

सं० उरग (उरस्=छाती, गम्=चलना जो छाती से चले) पु० सांप, नाग, सर्प, भुजंग।

सं० उरगाद (उरग=सांप, अद्=खाना) पु० गरुड़, विष्णुकावाहन।

सं० उरगारि (उरग=सांप, अरि=वैरी) पु० गरुड़, विष्णुकावाहन।

सं० उरु (ऊर्णु=ढकना) स्त्री० जांघ, जंघा, रान, गु० चौड़ा, विशाल, बड़ा, बहुत, अधिक।

प्रा० उरिण (सं० अनृण, अन=नहीं, ऋण=कर्ज़) गु० बिन कर्ज़, ऋण से छूटना, उतरना उद्धार।

सं० उर्व्वरा (उरु=बड़ा, चौड़ा, ऋ=जाना) स्त्री० उपजाऊ धरती।

सं० उर्वशी उरु=बहुत, अश्=बश करना, जो अपने रूप से बहुतों को बश कर लेती है, स्त्री० एक अप्सरा का नाम, स्वर्गकी बेश्या।

सं० उर्व्वी (उरु=बड़ा, चौड़ा) स्त्री० धरती, पृथ्वी, ज़मीन।

सं० उर्व्विजा (उर्व्वी=धरती, जन्=पैदा होना) स्त्री० सीता, जानकी, कहते हैं कि जब राजा जनक यज्ञ के लिये धरती जोतते थे तब ज़मीनमें से सीता जी निकली थीं।

प्रा० उलझना-क्रि० अ० फँसना लिपटना, २ झगड़ना।

प्रा० उलटना-क्रि० स० फेरना, पलटना, दोहराना, मोड़ना, तले ऊपर करना, नीचे ऊपर करना, औंधाना।

प्रा० उलट पुलट-बो० उथल पुथल, ऊपर नीचे, तले ऊपर, गटपट, गड़बड़, इधर का उधर, उधर का इधर।

प्रा० उल्था-पु० तर्जुमा, अनुवाद।

प्रा०उलहना (सं०उपालम्भ,उपआ, लभ्=पाना) पु० शिकायत, पुकार निंदा, दोष।

प्रा० उलहनादेना-बो० शिकायत करना, पुकारना।

प्रा० उलीचना-क्रि०स० उड़ेलना, जल सींचना, पानी लेना।

सं० उलूक (वल्=घेरना) पु०उल्लू घुघुआ।

सं० उल्का (उष्=जलाना) स्त्री० लूका आग वा तारा जो आकाश से गिरताहै।

सं० उल्लङ्घन (उद्=ऊपर, लघि=पार होना) पु० उलटा करना, रीति तोड़ना, २ लांघना।

सं० उल्लास (उद्=ऊपर, लस्=खेलना, खुशी करना) पु० हर्ष, आनंद, हुलास, खुशी, प्रसन्नता, २ अध्याय, परिच्छेद।

सं०उल्लङ्घन (उद्=ऊपर,लघ्+अन,लघ=जाना) भा० पु० पारहोना,

पारउतरना, लांघजाना, फांदजाना ।

प्रा०उल्ल (सं० उलूक) पु० घुघुआ, पेचा, उलूक, एकजानवर का नाम, २ गँवार, मूर्ख, उज्जड़ ।

सं० उल्लेख (उद्, लिख्=लिखना) भा० पु० वर्णन, बखान, २ एक अलंकार का नाम ।

सं० उशना (वश्+उशन, वश्=रहना) पु० शुक्राचार्य्य, दैत्यगुरु ।

सं० उषा (उष्=चमकना) पु० भोर, तड़का, पोह, प्रभात, स्त्री० बाणासुर की बेटी और अनिरुद्ध की स्त्री ।

सं० उष्ट्र (उष्=मारना) पु० ऊंट ।

सं०उष्ण (उष्=जलाना) पु० गरम ।

सं० उष्णीष=पगड़ी, सिरबन्द ।

सं० उष्णता (उष्ण=गरम) स्त्री० गरमी ।

सं० उष्मा (उष्=जलाना, वा गरम होना) स्त्री० गरमी, धूप, ताप ।

प्रा० उसरना (सं० अपसरण, आप=पीछे, सृ=जाना) क्रि० अ० टलना, पीठदेना, हटना ।

प्रा० उसारा–पु० ओसारा, डिहुढी, बराम्दा ।

प्रा०उसास (सं० उच्छ्वास, उद्=ऊंचा, श्वास=सांस) पु० सांस, ऊंचासांस ।

प्रा० उसीसा (सं० उच्छीर्षक, उद्=ऊपर, शीर्ष=सिर) पु० सिरहाना तकिया ।

सं०ऊ (अव्=बचाना) पु० महादेव, ब्रह्मा, प्रश्नवाक्य) बन्धन, मोक्ष प्रधान, २ चांद, त्रि० बो० हे ।

प्रा०ऊंघना–क्रि० अ० निद्रालुहोना, झपकी लेना, आंख लगाना ।

प्रा०ऊंच } (सं० उच्च) गु० लंबा,
ऊंचा } ऊपर ।

प्रा० ऊंचा बोलबोलना–बोल० घमंड से बोलना, अभिमान से बोलना ।

प्रा०ऊंचासुनना-बोल० कमसुनना ।

प्रा० ऊंचाकानी–बो० बहरापन ।

प्रा०ऊंचेबोलका बोलनीचा—बोल० जो कोई किसी को घमंडका बोल बोलताहै वह अन्त में आप हलका और नीचा होताहै ।

प्रा०ऊंट (सं० उष्ट्र, उष्=मारना) पु० एक जानवर का नाम ।

प्रा० ऊंटकटारा —पु० एक तरह के कँटीले पेड़ का नाम जिसको ऊंट चरते हैं, भरभांड, ऊंटकटाई ।

प्रा० ऊख (सं० इक्षु) स्त्री० ईख, केतारी, गन्ना ।

प्रा०ऊद } (सं० उद्र, उन्द् = भि-
ऊदबिलाव } गोना) पु० एकपानी के जानवर का नाम ।

प्रा०ऊदा (सं० अवदात, अव, दै=शुद्ध करना) गु० भूरा, धुंधला ।

प्रा॰ ऊधो (सं॰उद्धव) पु॰श्रीकृष्ण का मित्र और चचा ।

प्रा॰ ऊन (सं॰ ऊर्णा, ऊर्णु=ढकना) स्त्री॰ भेड़ी बकरी के पीठ पर के बाल, पशम ।

सं॰ ऊन } (ऊन=कम होना) गु॰
प्रा॰ऊना } कम, कमती, थोड़ा, न्यून, हीन ।

प्रा॰ ऊपर (सं॰उपरि) क्रि॰ वि॰ ऊंचा, ऊर्ध्व, २ अधिक ।

प्रा॰ ऊपरसे-बोल॰ऊपरके ऊपर ।

प्रा॰ ऊपरी (ऊपर) गु॰ विदेशी, परदेशी, २ ऊपर का ।

प्रा॰ ऊघट (सं॰ अववाट, अव=बुरा, वाट=रास्ता) पु॰ औघट, विकट रास्ता, बुरा रास्ता ।

सं॰ ऊरु-पु॰जंघा, जांघ ।

सं॰ऊर्ध्व (उद्=ऊपर,हा=छोड़ना) गु॰ ऊपर, ऊंचा, लंबा ।

प्रा॰ऊर्द्धपुंड्र (सं॰ ऊर्ध्वपुण्ड्र, ऊर्ध्व=लंबा-पुण्ड्र=तिलक,पुडि=मलना) पु॰ लंबा तिलक जो वैष्णवलोग करते हैं, वैष्णवीतिलक ।

सं॰ऊर्ध्वबाहु (ऊर्ध्व=ऊंची, बाहु=भुजा) गु॰ ऊंचाहाथरखनेवाला, तपसी, तपस्वी जो अपना हाथ ऊंचा रखता है ।

प्रा॰ ऊर्द्धसांस (सं॰ ऊर्ध्वश्वास, ऊर्ध्व=ऊपर,श्वास=सांस) पु॰उसास, ऊपर का दम, सांस, दम ।

सं॰ऊर्म्मि (ऋ=जाना) स्त्री॰ लहर, तरंग ।

सं॰ऊषर (ऊष्=बीमार होना) गु॰ खारी धरती, बनजर धरती, ऐसी धरती जिसमें बोने से कुछ नहीं उपजे ।

सं॰ऊषा (ऊष्=चमकना) स्त्री॰ बाणासुर की बेटी और अनिरुद्धकी स्त्री, पु॰ भोर, तड़का, पोह, प्रभात ।

सं॰ऊषाकाल (ऊषा=भोर,काल=समय) पु॰ प्रातःकाल, विहान, भोर, प्रभात ।

सं॰ऊहा (ऊह=तर्क करना) स्त्री॰ तर्क, बितर्क, दलील ।

ऋ

सं॰ऋ-स्त्री॰ अदिति, देवताओं की मा.पु॰सूर्य, गणेश, विष्णु ।

सं॰ऋक् (ऋच्=सराहना) पु॰ ऋग्वेद, पहला बेद ।

सं॰ऋक्ष (ऋष्=जाना) पु॰ रीछ भालू, २ नक्षत्र ।

सं॰ऋग्वेद (ऋक्+वेद) पु॰ पहला वेद ।

सं॰ ऋचा (ऋच्=सराहना) स्त्री॰ वेदका मंत्र, वेदकाकांड, काण्डिका ।

प्रा॰ऋछेश (सं॰ ऋक्षेश, ऋक्ष=रीछ, ईश=राजा) पु॰ जामवन्त रीछों का राजा ।

सं० ऋजु (ऋज्=जाना, इकट्ठा करना) (वा, अर्ज=इकट्ठा करना) गु० सीधा, सरल, सूधा, सोझा ।

सं० ऋण (ऋ=जाना) पु० उधार, कर्ज़ देना, २ बीजगणित में घटाव का चिह्न, मनफ़ी ।

सं० ऋणपत्र=तमस्सुक ।

सं० ऋणमुक्तपत्र=फ़ारिगख़ती ।

प्रा० ऋणिया, सं० ऋणी, प्रा० ऋनियां, प्रा० ऋनी (ऋण=कर्ज़) गु० क़र्ज़दार, देनदार, जिसके शिर क़र्ज़ हो, २ इहसानमंद, धन्यवाद करनेवाला, शुकरगुज़ार ।

सं० ऋत (ऋत=जाना, दान=देना,) पु० सत्य, मोक्ष, जल, पूजन, इतर, दीप्त, और शीलोंछ, कटे खेत से बाली बीनना।

सं० ऋतु (ऋ=जाना) स्त्री० मौसिम, बसंत आदि छः ऋतु १ वसन्त (चैत और बैशाख) २ ग्रीष्म (ज्येष्ठ और आषाढ) ३ वर्षा (सावन और भादों) ४ शरद् (कुंवार और कातिक) ५ हिम (अगहन और पूस) ६ शिशिर (माघ और फागुन) एक ऋतु दो महीने रहती है २ स्त्रीधर्म, स्त्रियोंके कपड़ोंसे होनेका समय ।

सं० ऋते- अव्य० क्रि० वि० विना, छोड़के, रहित, बिदून ।

सं० ऋतुमती (ऋतु=स्त्रीधर्म, मती=वाली) स्त्री० कपड़ोंसे, रजस्वला, हैज़ से ।

सं० ऋतुराज (ऋतु=मौसिम, राजन्=राजा) पु० वसंतऋतु, मौसम बहार,

सं० ऋतुस्नान (ऋतु=स्त्रीधर्म, स्नान=न्हाना) पु० स्त्रियोंका कपड़ोंमेंहोने के पीछे चौथे दिनका न्हाना वा स्नान ।

सं० ऋत्विज् (ऋतु=समय, यज्=यज्ञ करना) क० पु० यज्ञ करनेवाला, पुरोहित, याजक ।

सं० ऋद्धि (ऋध्=बढना) स्त्री० संपदा, संपत्ति, धन, दौलत, बढती, २ एक औषधीका नाम, ३ पार्वती, गिरिजा, रुद्राणी ।

सं० ऋषि (ऋष्=जाना) पु० मुनि, तपस्वी, यती, ऋषि सात प्रकार के हैं १ श्रुतर्षि जिसने पवित्र कथासुनी हो, २ काण्डर्षि जो वेदका कोई मुख्यकांड सिखलाता है, ३ परमर्षि जिसमें मुनि भेलआदि हैं, ४ महर्षि जिस में व्यास आदि हैं, ५ राजर्षि जैसे विश्वामित्र ६ ब्रह्मर्षि जिसमें वसिष्ठहैं, ७ देवर्षि जिस में नारद आदि हैं ।

सं० ऋषीश (ऋषिमुनि, ईश=स्वामी, राजा) पु० ऋषियोंमेंमुख्य वा प्रधान।

सं० ऋष्यमूक (ऋष्य=हरिण, ऋष्=जाना, मूक=गूंगा) पु० एक पहाड़का नाम जो किष्किन्धापुरीके पास है ।

ऋ

सं०ऋ-स्त्री० देवताओं की मा, २ दानवों की मा, पु० शिव, भैरव, राक्षस, वि० बो० भय और निंदा को जतलानेवाला, अव्यय ।

—०—

ए

सं० ए (इण=जाना) पु० विष्णु, वि० बो० हे, संबोधन का सूचक ।

सं० एक (इण्=जाना) गु० गिन्ती का पहला अंक, २ मुख्य, प्रथम, पहला, प्रधान, केवल सिर्फ ।

प्रा० एकआध-बोल० कुछ, थोड़ा, एक या आधा ।

प्रा० एककी दशसुनाना-बोल० यह बोल चाल वहां बोला जाता है जब कि कोई आदमी किसी को एक बुरी बात कहे अथवा एक गालीदे तो उसके बदले में बहुत सी बुरी बातें कहें और बहुतेरी गालियांदें ।

सं० एकचित्त-(एक, चित्त=मन) गु० एक मन, जिसका ध्यान किसी एकही चीज पर हो ।

सं० एकत्र (एक+त्र, जगह अर्थमें प्रत्यय) क्रि० वि० इकट्ठा, एकठौरा, एक जगह । [हुआ ।

सं०एकत्रित-कर्म० पु० इकट्ठाकिया

सं० एकदा (एक+दा) समय अर्थ में प्रत्यय) क्रि० वि० एक बार, एक समय ।

सं० एकधा (एक+धा, प्रकार अर्थ में प्रत्यय) क्रि० वि० एकभांति, एकप्रकार ।

प्रा०एकनएक-बोल०एकयादूसरा।

प्रा०एकरत्ती-बोल० बहुत थोड़ा ।

सं० एकरस-पु० जो एकसा रहै, जन्ममरणरहित ।

सं० एकरूप (एक, रूप=डौल) पु० बराबर, एकसा, सरीखा, सदृश ।

प्रा० एकला } एकेला } (सं० एकल, एक, ला=लेना) गु० अकेला, केवल, निराला, सिर्फ, तनहा । [एकही (बेटा) ।

प्रा० एकलौता (सं० एकल) गु०

सं० एकसर (एक, सृ=जाना) क्रि० वि० एक साथ ।

प्रा०एकसे दिन न रहना-बोल० सदा कोई धनवान्‌रहता है न गरीब, दशा का फेरफार होना ।

प्रा० एका (सं० ऐक्य=एकपन) पु० मेल, मिलाप किसी काम के करने के लिये आपस में एक सलाह करना, साजिश ।

अं०एकाउण्ट=लेखा, हिसाब ।

प्रा० एकाएकी (सं० एक) क्रि० वि०अचानक,एकबारमें,दफ्ताअतन।

सं० एकाक्ष (एक, अक्षि=आंख)

पु० काना, एक आंख वाला, एक चश्म, कोर, २ कागा, कौआ ।

सं०एकाग्र (एक, अग्र=आगे) गु० एकचित्त, एकमन, एकदिल, किसी काम में लगाहुआ ।

सं० एकादशी (एक+दशन्=दश) स्त्री० ग्यारहवीं तिथि, हिंदी महीने के पख में ग्यारहवां दिन ।

सं०एकाधिपति (एक, अधिपति, राजाधिराज) पु० चक्रवर्तीराजा ।

सं० एकान्त (एक, अन्त=हद) गु० एक ओर, एक तरफ़, अलग, निराला, किनारे, जुदा, आपही आप, भिन्न, निर्जन ।

अं० एग्रीकलचरलकान्फ्रेंस=कृषी विषयकसभा, खेतोंके बारेमें कमेटी ।

अं०एञ्जिनियर=यंत्रज्ञ, इमारत बनानेवाला ।

अं०एज्यूकेशनल्=शिक्षा,तअलीम।

प्रा०एड़-स्त्री० एड़ी, २ एड़ीकी मार, घोड़े के चलाने के लिये एड़ी की ठोकर ।

प्रा०एड़मारना--बोल० ठोकर मारना, एड़ी की ठोकर मारके घोड़े को चलाना ।

प्रा०एड़ी -स्त्री०पैरका पिछला भाग ।

अं० एड्रस=अभिवादनपत्र, सिपासनामा, पता, सिरनामा, लिफ़ाफ़ा, बयान करना, अर्जकरना ।

सं०एतत्--सर्वना० यह ।

सं०एतदर्थ=इसवास्ते ।

प्रा० एतवार (सं० आदित्यवार) पु० इतवार, रविवार,आदित्यवार।

सं०एतादृश-गु०इसीतरहसे, ऐसाही

सं०एतावत्-गु० इतना, इतनी ।

सं०एरण्ड (ईर्=जाना) पु० अरंड, रेंड, एक पेड़ का नाम ।

सं०एला (इल्=जाना, भेजना) स्त्री० इलायची, एलाची ।

सं०एवम् (इण्=जाना) समुच्च० इसप्रकार, इसभांति, इसतरह ।

ऐ

सं०ऐ-पु० शिवाबुलाना, संबोधन ।

अं०ऐक्ट=नियम, क़ायदा ।

सं०ऐक्यता-भा० पु० मेल, इत्तिफ़ाक़, एकमत । [उर्दू ।

अं० ऐंगलोवर्नाक्यूलर=अंगरेजी-

प्रा०ऐंचना-क्रि०स०खैंचना,तानना।

प्रा०ऐंठ (ऐंठना) स्त्री० बल, बट, मरोड़, अकड़, २ गांठ ।

प्रा०ऐंठना-क्रि० स० कसना, तानना, खींचना, जकड़ना, क्रि० अ० अकड़ना,मरोड़खाना,बलखाना, २इतराना, फूलना, ऐंठ के चलना, अकड़के चलना ।

सं०ऐरावण } (इरावत् समुद्र,
ऐरावत } इरा=पानी, इर=

जाना अर्थात् जो समुद्र से पैदा हुआ) पु० इन्द्र का हाथी ।

सं०ऐरावती (इरा=पानी) स्त्री० एक नदी का नाम, रावी नदी का नाम २एक नदी जो ब्रह्मा देशमें है ।

सं० ऐरेय=बुद्धिवर्द्धक मदिरा जो कम नशा करती है अंगूर आदि से बनती है ।

सं० ऐश्वर्य्य (ईश्वर) पु० प्रताप, बड़ाई, सम्पदा, सम्पति, विभव, हशमत जाह व मनाल ।

प्रा० ऐसा (इस+सा, स=ईदृश) गु० इसप्रकार का, इसके बराबर ।

प्रा० ऐसातैसा } ऐसावैसा } बोल० कुछ यों हीं, न भला न बुरा, न वाहवाह, न छीछी ।

प्रा० ऐहैं (ब्रजभाषा) क्रि० अ० आवेंगे ।

—:०:—

ओ

सं० ओ-पु०ब्रह्मा, विष्णु, शिव, त्रि० बो० आह, आहा, संबोधन का सूचक, मंत्रराज ।

सं० ओं-पु० प्रणव, ओंकार जो अ+उ+म्, से बनाहै, अ=विष्णु का वाचक, उ=महेश्वर का वाचक, म्=ब्रह्मा का वाचक है ।

प्रा०ओंठ } ओठ } (सं०ओष्ठ) पु० होंठ, अधर, लब ।

प्रा०ओंड़ा } औंड़ा } गु० गहरा, गंभीर, अर्माक ।

प्रा०ओंधा } औंधा } गु०उलटा, तले ऊपर ।

प्रा०ओखली—(सं०उलूखल)स्त्री० ऊखली ।

सं०ओघ (उच्=इकट्ठा करना) पु० समूह, इकट्ठा, २ जल का वेग ।

प्रा०ओछा=गु० हलका, नीच ।

सं०ओज } ओजरा } पु० बल, दीप्ति, तेज, प्रकाश, २ विषम,प्रथम, तृतीय, पांचवाँ, सातवाँ आदि ।

सं०ओङ्कार (ओम् तीनों देवताओं का मंत्र, अव्=बचाना, कार, कृ=करना) पु०बीजमंत्र, ब्रह्मा, विष्णु, शिव इन तीनों देवताओं का नाम ।

प्रा०ओझल—स्त्री० ओट, आड़, परदा, टट्टी, छिपाव, एकान्त ।

प्रा०ओझलकरना—बो० छिपाना, ओट करना, परदा करना, आड़ करना ।

प्रा०ओझलहोना—बो० छिपना ।

प्रा०ओट (सं० वट=घेरना) स्त्री० बचाव, छांव, आड़, परदा, ओझल, टट्टी, छिपाव, २ पत्त ।

प्रा०ओटकरना—बो० छिपाना, ओझल करना, आड़ करना,परदा करना ।

प्रा० ओटहोना-बोल० छिपना ।

प्रा० ओड़न-स्त्री० ढाल, फरी ।

प्रा० ओड़ा-पु०टोकरा, खांचा ।

प्रा० ओढ़ना (सं०ऊर्णु=ढकना) क्रि० स०पहनना, पहरना, पु० चद्दर, पट्टू, लोईआदि ओढ़नेकी चीज ।

प्रा० ओढ़नी (सं० ऊर्णु=ढकना) स्त्री० स्त्रियों के ओढ़ने का कपड़ा, साड़ी ।

सं० ओदन (उद्=भिगोना) पु० भात, रींधे हुए चांवल । [गीला ।

प्रा० ओदा (सं० आर्द्र) गु० भीगा,

प्रा० ओप-स्त्री० चमक, झलक, दमक, चमचमाहट, सुन्दरता, घोट, चिकनाहट ।

प्रा० ओपदेना-बोल साफ़ करना, चिकना करना, ओपना, घोटना ।

सं० ओम् (अव्=बचना, या अ विष्णु, उ शिव, म् ब्रह्मा) पु० तीनों देवताओंका मंत्र ॐकार का बीज मंत्र, प्रणव ।

प्रा० ओर-स्त्री० तरफ़, अलग, पार, २ रस्ता, ३ हद, सीमा ।

फ़ा० ओल=बदला, एवज़, बदले में किसी आदमी को देना ।

अं०ओरीयंटलकम्पनी-पूर्वीसमूह, पूर्वी गिरोह ।

प्रा० ओला (सं०ओल=भीगा, अ, उन्द=भिगोना)पु० पानी के बने हुए पत्थर जैसे टुकड़े जो कभी कभी बरसते हैं, २ चीनीकी बनीहुई मिठाई जिसको गर्मियों में ठंढाई के लिये पानी में घोल कर पीते हैं ।

प्रा० ओलाहोजाना-बोल० खूब ठंढा होजाना ।

प्रा० जोंसिरमुड़ायातोंओलेपड़े-बो० यह मुहावरा उस समय बोला जाता है जब कोई आदमी किसी काम को शुरूअ करे और शुरूअ करतेही बिगड़ जाय ।

सं० ओषधि / औषधि (ओष=गरमी, उष्=गर्म करना, धा=रखना) स्त्री० औषद, दवा दारू, रोग दूर करने की चीज़ ।

सं०ओषधालय / औषधालय भि०पु० दवाख़ाना, हास्पिटल ।

सं० ओष्ठ (उष्=गर्म करना) पु० होंठ, ओंठ, ओठ, लब ।

प्रा० ओस-पु० शीत जो रात को छोटी २ फुहार पड़ती है, शबनम् ।

प्रा० ओसरा (सं० अवसर) पु० बारी, पारी ।

प्रा० ओसीसा-पु० तकिया ।

प्रा०ओहो-नि०बो०वाहवाह,आहा।

औ

सं०औ-पु० अनन्त, नि० बो० ओह, आहा ।

प्रा० औंगी-चुप, गूंगापन, मौन ।

प्रा० औगुण (सं० अवगुण) पु० दोष, कलंक, खोट, चूक, बुराई।

प्रा० औघट (सं० अवघट्ट, अव=बुरा वा कठिन, घट्ट=रस्ता, घट्=जाना) गु० ऊबट, खराबरस्ता, अगम्यरस्ता।

प्रा० औतार (सं० अवतार) पु० जन्म, प्रकट, अवतार, (अवतारशब्दकोदेखो)

प्रा० औदात (सं० अवदात) गु० धौला, सफेद, श्वेत, शुक्ल।

प्रा० औनेपौने—बोल० कमतीबढ़ती।

प्रा० औबट (सं० अववाट, अव=बुरा वा कठिन, वाट=रस्ता) गु० ऊबट, औघट, बुरारस्ता, दुर्गम।

प्रा० और—समुच्च० फिर, पुनि, भी गु० अधिक, २ दूसरा।

प्रा० औरएक—बोल० दूसरा कोई, और कोई, और भी।

प्रा० औरही-बोल० बिलकुलदूसरा, अनूठा, जुदा बिलकुल, फरक।

सं० औरस (उरस=हृदय) पु० ब्याही हुई स्त्री से पैदा हुआ लड़का।

सं० और्ध्वदैहिकक्रिया=स्त्री० दश-गात्र, सपिंडी, तेरही।

सं० और्व्व—गु० बड़वानल, दावानल।

प्रा० औसर (सं० अवसर) पु० समय, मौका, अवकाश, फुरसत।

प्रा० औसान—पु० चेतना, चेत, हौसि-ला, सुरत, साहस, हिम्मत, होशियारी।

प्रा० औसेर स्त्री० चिंता, खटका।

क

सं० क—पु० ब्रह्मा, २ पवन, हवा, ३ सूर्य, ४ आत्मा, ५ यम, ६ आग, ७ विष्णु, ८ शिर, ९ पानी, १० सुख, ११ शुभ, सुन्दर, १२ दंभ, १३ मयूर, १४ कामदेव, १५ दक्ष १६ गरुड़।

सं० कङ्क (कक्=जाना) पु० कौआ, २ केकड़ा, ३ कपट, ४ ब्राह्मण, ५ युधि-ष्ठिर, ६ देशविशेष, म्लेच्छजाति, ८ बूतीमार, बगुला।

प्रा० कंकर (सं० कर्कर, कृ=हानि पहुँचाना) पु० छोटे छोटे पत्थरके टुकड़े, कांकर, रोड़ा।

प्रा० कंकेला (कङ्कर) गु० पथरेल, पथरीला, किरकिरा, कंकीला, बलुवा।

प्रा० कङ्गन (सं० कङ्कण) पु० स्त्रि-यों के पहुँचे में पहनने का गहना, बाला, कड़ा।

प्रा० कङ्गनी—स्त्री० एकप्रकारका अ-नाज, २ चूड़ी, कङ्गन, कङ्गना, ककनी।

प्रा० कङ्गार (स्कन्धाधार) क० कहार।

प्रा० कङ्गाल—गु० दरिद्री, दीन, दुखी, ग़रीब। [और घमंडी।

प्रा० कङ्गालबांका-बोल० ग़रीब

प्रा० कङ्गालता—भा० स्त्री० दरिद्रता, ग़रीबी दीनता।

प्रा० कंघी (सं० कंकती, ककि=

जाना) स्त्री० बालझाड़नेकी चीज, कंघा, केश, मार्जनी । [बारना ।

प्रा० कंघीकरना-बोल० बालसं-

प्रा० कंजर-पु० एकजाति के मनुष्य जिनका धंधा डोरी बेचने का है और वे सांप को भी पकड़ते हैं और खातेहैं । [कृपण ।

प्रा० कंजूस-पु० सूम, मक्खीचूस,

प्रा० कंठला } (सं० कण्ठमाला) पु० माला, कंठी, सोने चांदी आदि की माला जो गले में पहनते हैं, २गण्डा। (छोटी माला।
कठला
कंठा

प्रा० कंठी (सं० कण्ठीय, कण्ठ) स्त्री०

प्रा० कँवल (सं० कमल) पु० कमल, पद्म।

सं० कंस (कम्=चाहना, वा कस= दुख देना) पु० मथुरा के राजा उग्रसेन का बेटा, और श्रीकृष्ण का मामा और बैरी जिसको श्री कृष्ण ने मारा, २कांसा, ३ पानपात्र, सुरापात्र, ४ मंजीरा, झांझ ।

सं० कंसकार (कंस=काँसा, कृ= करना) क० पु० काँसे की वस्तु बनानेवाला ।

प्रा० ककड़ी-एक प्रकार का फल ।

प्रा० ककनी (सं० कङ्कण) स्त्री० पहुंची, कंगनी, स्त्रियों के हाथ में पहनने का गहना । [रंग ।

प्रा० ककरेजा-पु० बैंगनीरंग, बैंजनी

प्रा० ककहरा-पु० क ख ग आदि वर्णमाला । [का फोड़ा ।

प्रा० कखौरी (सं० कक्ष) स्त्री० कांख

सं० कक्षा (कष्=मारना, कश्=जाना) स्त्री० कटिबंध, २ ज्योतिषचक्र, दृफ़्त्र ।

सं० कङ्कण (क=सुन्दर, कण्=शब्द करना, व कम्=चाहना) पु० कङ्गन, वाला, कड़ा । [बाल, रोम ।

सं० कच (कच्=बांधना) पु० केश,

प्रा० कचनार (सं० काञ्चनार, वा कांचनाल, कांचन=चमक, ऋ=जाना, वा कांचन सोने सी चमक, अल्= पाना) स्त्री० एक वृक्षका नाम ।

प्रा० कचूमर-पु० एक तरहका अचार ।

प्रा० कचूमरकरडालना-बोल० टुकड़े टुकड़े कर डालना, गड़बड़ कर डालना ।

प्रा० कच्चा सञ्चय=खाम तहसील ।

सं० कच्छप (कच्छ किनारा, पा=पीना) पु० कछुआ, कमठ, कूर्म ।

प्रा० कछ } (सं० कच्छप) पु० कछुआ, कछा ।
कच्छ

प्रा० कछनी-स्त्री० जाँघिया ।

प्रा० कछलम्पट (सं० कक्ष=कांछ, लम्प=झूठा) पु० व्यभिचारी, लुच्चा, बदमस्त, रंडीबाज ।

प्रा० कछवाहा-पु० राजपूतों की एकजाति जो अपने को रामचन्द्र

के बेटे कुश के वंश में बतलाते हैं जैपुर के राजा इस बंशके हैं।

प्रा॰ कछु (सं॰ किञ्चित्) पु॰ कुछ, थोड़ा।

प्रा॰ कछौटी (सं॰ कच्छोटिका, कच्छ =काछा, वट्=घेरना) स्त्री॰ लंगोटी, कोपीन। [जल, अंजन।

प्रा॰ कजरा (सं॰ कज्जल) पु॰ का-

सं॰ कज्जल (कत्=बुरा वा थोड़ा, जल=पानी) पु॰ काजल, सुरमा, अंजन।

प्रा॰ कंचन सं॰ काञ्चन, कचि= चमकना) पु॰ सोना, सुवर्ण, २ जाति विशेष।

प्रा॰ कञ्चु } कञ्चुकी } (सं॰ कञ्चुक, कचि=बांधना) स्त्री॰ चोली, कांचुली, अंगिया, कुरती।

सं॰ कञ्ज कं=पानी, और शिर, जन् =पैदा होना पु॰ कँवल, कमल, २ ब्रह्मा, ३ बाल, केश।

प्रा॰ कञ्जा-गु॰ जिसकी आंखेंभूरी हों।

सं॰ कट=झाँप काठकी। [फौज।

सं॰ कटक (कट्=घेरना) पु॰ सेना,

प्रा॰ कटना (सं॰ कृत्=काटना) क्रि॰ अ॰ कटजाना, २ बीतना, चलाजाना।

प्रा॰ कटनी (कटना) स्त्री॰ कटाई, अनाज कटने का समय।

प्रा॰ कटरा पु॰ चौक, शहरका बीच।

प्रा॰ कटहल (सं॰ कण्टकफल) पु॰ कटहर, एकप्रकार का फल।

प्रा॰ कटा (कटना) पु॰ मारना, कतल। [रना, मारना।

प्रा॰ कटाकरना-बोल॰ कतलक-

सं॰ कटाक्ष (कट्=जाना, अक्षि= आंख वा, कट=गाल, अक्ष=फैलना) पु॰ टेढ़ी आंख से देखना तिरछी चितवन।

प्रा॰ कटार (सं॰ कट्टार, कट्=जाना) पु॰ खंजर, कटारी।

सं॰ कटि (कटि=घेरना) स्त्री॰ कमर।

सं॰ कटिबन्ध (कटि=कमर, बन्ध =बांधना) भा॰ पु॰ कमरबँधे, २ पृथ्वी के ठंढे गर्म आदि भाग।

सं॰ कटिबद्ध-कर्म॰ पु॰ कमरबांधे हुये, तैयार, मुस्तैद।

सं॰ कटु॰ (कट्=घेरना, जाना) गु॰ तीव्र, कड़ुवा, तीखा, तीता २ हरावना, प्रचंड। [पका।

प्रा॰ कट्टर-गु॰ काटनेवाला, २

सं॰ कटोल (कट्=ढाँपना) पु॰ चंडाल, बद, बुरा।

सं॰ कठ=ऋग्वेद।

प्रा॰ कठंदर (सं॰ काष्ठोदर, काष्ठ= काठ, उदर=पेट) पु॰ एकरोग का नाम।

सं॰ कठिन (कठ्=दुख से जीना) गु॰ कठोर, कड़ा, निठुर, मुश्किल, सख़्त।

सं० कठिनता (कठिन) भा० स्त्री० कठोरता, निठुरता, मुश्किलात, कठिनाई ।

सं० कठोर (कठ्=दुख से जीना) गु० कड़ा, कठिन, निठुर, सख़्त ।

प्रा० कठौती (सं०काष्ठ) स्त्री० कठौवा, कठड़ा, काठ का बरतन ।

प्रा० कड़क (कड़कना) स्त्री० धड़ाका, चटाका, गर्ज, कड़कड़ाहट, कड़ाका ।

प्रा० कड़खा-पु० लड़ाई में पुराने समय के शूर बीरों की बड़ाई कर के लड़नेवालों को साहस देना, लड़ाई का गीत जिसमें लड़नेवालों की हिम्मत बढ़ाने के लिये उनका यश गायाजाता है ।

प्रा० कड़खैत-पु० भाट, लड़ाई में बढ़ावादेनेवाला, एक जाति के भाट अथवा चारण जो लड़ाई में कड़खा गाकर लड़नेवालों की हिम्मत बढ़ाते हैं ।

प्रा० कड़ा, कर्ड़ा (सं० कठोर) गु० कठोर, दृढ, सख़्त, स्त्री० धन्नी, धरण ।

प्रा० कड़ा (सं० कटक, कट्=घेरना) पु० एक तरह का हाथ का गहना, २ दरवाजे का अथवा कड़ाह कड़ाही के पकड़नेकी चीज, हत्था, बेंट ।

प्रा० कड़ाका-पु० किसी चीज के टूटने का धड़ाका वा शब्द, २ उपास, उपवास, फ़ाक़ा । [किनारा ।

प्रा० कड़ाड़ा-पु० नदी का ऊंचा ।

प्रा० कड़ाह (सं० कटाह) पु० एक तरह का लोहे का बरतन ।

प्रा० कड़ुवा, करुवा (सं० कटु, गु० तीता, तेज ।

प्रा० कड़ोड़, कड़ोर, करोड़, करोर (सं० कोटि गु० सौ लाख--करोड़ पति, जिसके पास करोड़ रुपये हों, बड़ा सेठ ।

प्रा० कढ़ी-स्त्री० भोजनविशेष ।

सं० कण (कण्=जाना) पु० अनाज का दाना, कना, कनिका, परमाणु, लव ।

सं० कण्टक (कण्ट्=जाना) पु० कांटा २ बैरी, शत्रु, ३ नीच, ४ कृपण ।

सं० कण्टकमय=काँटेसेभरा, काँटे का रूप ।

सं० कण्ठ (कण्=शब्द करना) पु० गला, गरदन, घांटी २ आवाज, स्वर, गु० मुखस्थ, कंठस्थ, जबानी याद ।

सं० कण्ठस्थ (कण्ठ=गला, स्था=ठहरना) गु० मुखस्थ, मुखाग्र, जबानी याद ।

प्रा० कण्ठा-पु० सोने के बड़े गुरियों की माला ।

सं० कण्ठाग्र (कण्ठ=गला, अग्र=आगे) गु० मुखाग्र, कंठस्थ, जबानी याद ।

सं० कण्ठ्य (कण्ठ) गु० जोअक्षरकंठ से बोलाजाय, कंठका ।

सं० कण्डन (कड्=कांड़ना, कूटना) भा० पु० छरना, कांड़ना ।

सं० कण्डनी ⎫ स्त्री० उखली, ओ-
कण्डार ⎭ खली, कांड़ी ।

सं० कण्डु (कड़ि=भेदना) स्त्री०खुजली, खाज ।

प्रा० कत (सं०कुत्र) क्रि०वि०कहां, किधर, २ (कथम्) क्यों, क्योंकर कैसे, ३ कितना ।

सं० कतम- गु०कौन, कौनसा ।

प्रा० कतरना (सं०कर्त्तन, कृत्=काटना) क्रि०स०कैंचीसे काटना,छांटना, छांट छूट करना, तराशना ।

प्रा० कतरनी (सं० कर्त्तरी, कृत=काटना) स्त्री० कैंची ।

सं० कतिधा=अव्य, गु० कितने प्रकार से ।

सं० कतिपय-गु० चंद, थोड़े, कम ।

प्रा० कतीरा-पु० एकप्रकारका गोंद

प्रा० कतेक ⎫ (सं०कतिकिम्) गु०
कति ⎭ कितना ।

प्रा० कत्था (सं० खादिर, खद=दृढ़ होना) पु० कत्था जो पान के साथ खाया जाता है ।

सं० कत्थक (कत्थ=सराहना) क० पु० एक प्रकार के गानेवालों की जाति,पंवारिया,यशबखाननेवाला ।

सं० कथक (कथ=कहना) क०पु०कथा बांचनेवाला, पौराणिक, कहनेवाला ।

सं० कथन (कथ्=कहना) भा०पु० कहना, वर्णन, कथावार्त्ता कहना ।

सं० कथा (कथ्=कहना) स्त्री० बात, कहानी, वृत्तान्त, इतिहास ।

सं० कथित (कथ्=कहना) र्म०पु० कहा हुआ ।

सं० कथनीय (कथ्+अनीय, कथ्=कहना) र्म० पु० कहनेयोग्य ।

सं० कथोपकथन-भा० पु० कहे हुये का कहना, दोबारा कहना ।

प्रा० कद (सं०कदा,किम्,क्या) क्रि० वि० कब, किस समय ।

सं० कदन (कद्=मारना) क० पु० मारनेवाला, २ मारना, ३ पाप ।

प्रा० कदम ⎫ (सं० कद=मारना
सं० कदम्ब ⎭ वा काटना) पु०एक वृक्ष का नाम, २ समूह ।

सं०कदली (क=हवा, दल्=फटना, जो हवासेफटताहै)स्त्री०केलेकावृक्ष।

सं० कदलीफल-पु० केलेका फल ।

सं० कदाचित् ⎫ (कदा=कब, चित्
कदापि ⎭ वा अपि=भी)क्रि० वि० कभी, कभी कभी, शायद ।

सं० कद्रू (कद्=मारना, वा कम्=चाहना) स्त्री० कश्यपमुनिकी स्त्री० और नागों की माता ।

प्रा० कदराई (सं० कातरता) भा० स्त्री० कायरपन ।

प्रा० कदराना (सं० कातर) क्रि० अ० कायर होना, डरपोक होना, डरना, हिम्मत हारना ।

सं० कदर्य्य--गु० कायर, डरपोक, बुजादिल, निन्दित, बदनाम, धूर्त्त ।

सं० कनक (कन्=चाहना वा चमकाना) पु० सोना, कंचन, सुवर्ण, स्वर्ण, २ धतूरा ।

सं० कनककशिपु (कनक=सोना, कशिपु=कपड़ा) पु० हिरण्यकश्यप, एक दैत्यका नाम, प्रह्लादकापिता ।

सं० कनकलोचन (कनक=सोना, लोचन=आंख) पु० हिरण्याक्ष, एक दैत्यकानाम ।

सं० कनकाचल (कनक=सोना, अचल=पहाड़) पु० सुमेरु पहाड़, सुमेरु गिरि ।

प्रा० कनखजूरा-पु० कनशलाई, एक जानवर का नाम ।

प्रा० कनपटी (सं० कर्णपट्टिका, कर्ण=कान, पट्टिका=पट्टी) स्त्री० पटपड़ी, कान के पास की जगह ।

प्रा० कनफटा--पु० एक प्रकार के योगी जिनके कान फटे होते हैं ।

प्रा० कनागत (सं० कन्यागत, कन्या राशिमें आगत आना, जिसमें सूर्य्य कन्या राशि के आते हैं २ (कणा + आगत=कनागत) पु० श्राद्धपक्ष, पितृपक्ष, आश्विनका पहला पक्ष ।

सं० कनिष्ठ (कन्=चाहना) गु० छोटा, लहुरा, अनुज, पु० छोटा भाई, युवन शब्द को बहुत अर्थ, कनिष्ठ होजाता है ।

सं० कनिष्ठा }
कनिष्ठिका } (कनिष्ठ) स्त्री० छोटी अंगुली, छिंगुली ।

प्रा० कने=पास, समीप, साथ ।

प्रा० कनेठी (कान ऐंठना) स्त्री० कान ऐंठना, कान खैंचना ।

प्रा० कनेर (सं० करवीर) पु० कनैल, एक प्रकार का फूल ।

प्रा० कनौजिया (सं० कान्यकुब्ज) पु० कनौज देश का रहनेवाला, २ ब्राह्मणोंकी एकजाति जो कन्नौज से निकले हैं ।

अं० कन्ट्रेक्टर=कारखानादार, ठेकाधिकारी ।

अं० कन्टीन्यु=मुसल्सल, श्रेणीबद्ध, जारी, संचलित ।

प्रा० कन्त (सं० कान्त, कम्=चाहना) पु० पति, स्वामी, भर्त्ता, प्यारा, प्रियतम, शौहर ।

सं० कन्था (कम्=चाहना) स्त्री० गुदड़ी, कथड़ी, कमरी ।

सं० कन्द (कदि=भिगोना, वा कं=पानी, दा=देना) पु० मूल, जड़ २ गंठीली जड़, जैसेप्याजऔरलहसुन आदि ।

सं० कन्दरा (कं=पानी, दृ=फाड़ना, जो जलसे फटती है) स्त्री० खोह, गुफा, गुहा ।

सं० कन्दर्प (कन्दू=व्याकुल होना, वा कम्=बुरा, दर्प=घमंड अर्थात् जिसके होनेसे बुरा घमण्ड होताहै) पु० कामदेव, काम, मदन ।

सं०कन्दु--पु०कड़ाही, गु०रसोईदार ।

सं० कन्दुक (कन्दू=मारना) पु०गेंद

सं० कन्ध } (कं=शिर, धा, वा धृ=
कन्धर } रखना) कांधा, गला, कंधा, ग्रीवा, गर्दन, २ मेघ ।

सं० कन्धि (कं=जल, धि=धरना) पु० समुद्र, मेघ, स्त्री०ग्रीवा, गला ।

सं० कन्याका (कन्=चहना) स्त्री० छोटी लड़की, दशबरस तक की लड़की ।

सं० कन्या (कन्=चाहना) स्त्री० लड़की, २ बेटी, ३ कुमारी, ४ बारह राशिमें की छठी राशि, ५ जीर्ण वस्त्र, ६ घिकुआर कन्यादान (कन्या=बेटी, दान=देना) लड़की को ब्याह देना ।

प्रा० कन्हैया (सं०कृष्ण) पु०श्री कृष्णका नाम ।

सं० कपट (क=शिर, पट्=ढकना) पु० छल, धोखा, खोटाई, फ़रेब, ठगाई, दग़ा ।

सं० कपटी (कपट) गु० छली, धोखा देने वाला, फ़रेबी, ठग, दग़ाबाज, पाखण्डी ।

प्रा०कपड़ा (सं०कर्पट, कृ=बिखेरना, फैलाना) पु० लूगा, लत्ता, वस्त्र ।

प्रा० कपड़ोंसे होना--बोल० रजस्वलाहोना, स्त्रीधर्महोना, हैज़होना ।

सं० कपर्द (क=जल, पर्ब=पूर्ण करदेना) पु० हरजटा, महादेवकी जटा जिसमें गंगाजीने वास किया ।

सं० कपर्दिन् } (क+पर्द+इन्)
कपर्दी } पु० महादेव ।

सं० कपर्दिका--स्त्री० बराटिका, कौड़ी ।

सं० कपाट (क=हवा, पट्=जाना, वा बाहर निकलना अर्थात् किवाड़ बन्द करनेसे हवा भीतरनहींजाती) पु० किवाड़, किवाड़ी, २ द्वार ।

सं० कपाल (क=शिर, पाल्=बचाना) पु० खोपरी, कपार, २ शिर, ३ ललाट, ४ भाग, भाग्य, क़िस्मत कपाल क्रिया करना=कपाल फोड़ना, हिन्दुओंमें एकरीतिहै कि जब मुर्दे को जलाते हैं और जब मुर्दा जल चुकता है तब उसका बेटा अथवा और कोई उसका सम्बन्धी उसकी खोपरी फोड़ता है और उसमें घी डालता है ।

सं० कपाली -क० पु० महादेव।

प्रा० कपास (सं० कर्पास, कृ=करना) पु० रुई, रुई का पेड़।

सं० कपि (कप्=कपाना) पु० बन्दर, वानर।

सं० कपिकुञ्जर (कपि=बन्दर, कुंजर =हाथी) पु० बन्दरों का राजा, बन्दरों का प्रधान।

प्रा० कपिन्दा (सं० कपीन्द्र, कपि= बन्दर, इन्द्र=राजा) पु० वानरोंका राजा, सुग्रीव, हनुमान्, अंगद।

सं० कपिपति (कपि=बन्दर, पति= राजा) पु० वानरोंका राजा, सुग्रीव।

सं० कपिध्वज (कपि=बन्दर, ध्वजा= झंडा, अर्थात् जिसके झंडे में बन्दर का निशान है) पु० अर्जुन।

सं० कपिपोत (सं० कपि+पुत्र) पु० वानर का बच्चा।

सं० कपिल (कब्=सराहना) पु० एक मुनिका नाम जिसने सांख्यशास्त्र बनाया।

सं० कपिला (कब्=सराहना) स्त्री० पीली गाय, कपिलगाय।

सं० कपीश } (कपि=बन्दर, ईश वा
कपीश्वर } ईश्वर, राजा) पु० सुग्रीव हनुमान्, वानरोंका राजा।

प्रा० कपुत्र } (सं० कुपुत्र, कु=बुरा
कपूत } पुत्र=बेटा पु० बुरा लड़का, कुबुद्धिलड़का

प्रा० कपूर (सं० कर्पूर, कृप्=सामर्थ्य रखना वा कर्पूर सुगन्धित होना) पु० एक सुगन्धित चीज, काफूर।

सं० कपूर तिलक=नाम हाथी का जो ब्रह्मावर्त अर्थात् बिठूर में था।

सं० कपोत (क=हवा, पोत=जहाज़ जिसके लिये हवा जहाजके तुल्यहै, वा कब्=रंगरंगका होना) पु० कबूतर, परेवा।

सं० कपोल (कंप्=कांपना, वा क= पानी, पुल्=बढ़ना) पु० गाल, रुखसारा।

सं० कफ (क=पानी, फल्=बढ़ना, जो पानी से बढ़ता है) पु० खखार थूक, बलग़म।

प्रा० कब (सं० कदा) क्रि० वि० कद किससमय।

प्रा० कबतक } क्रि० वि० किस स-
कबतलक } मयतक, कहांतक,
कबलों } कितनी देरतक।

प्रा० कबकब-बोल० किसकिससमय।

प्रा० कबड्डी-स्त्री० लड़कों के एक खेल का नाम जिसमें सब लड़के अपने दो झुण्ड बनाते हैं और ज़मीन पर खेलते हैं।

सं० कबन्ध (क=शिर, बध्=काटना, वा मारना) पु० विन शिरका धड़, २ एक राक्षस का नाम।

प्रा० कबरा (सं०कर्बुर, कब्=रंगना वा कर्व्=जाना) गु० चितकबरा, रंग रंग का, रंग बरंग । [काम ।

प्रा० कबारू-पु०गुन, हुनर, धंधा,

सं० कमठ (क=जल, अठ्=जाना, वा कम्=चाहना) पु० कछुआ कच्छप, कूर्म ।

प्रा० कमठा-पु०एकप्रकारका धनुष।

प्रा० कमण्डल (सं० कमण्डलु, का =पानी, मण्ड=शोभा, ला=लेना) पु० दंडी और संन्यासीलोगों के पानी रखने का काठ का अथवा मिट्टी का बरतन खप्पर २ कासा, प्याला ।

सं० कमनीय (कम्=चाहना) म्र्म० पु० सुन्दर, सुथरा, सुघड़, सुहावना, मनोहर, मनभावन, दिलचस्प, दिलगीर ।

प्रा० कमरख (सं० कर्मरङ्ग, कर्म= काम (भोजनआदि) रङ्ग=प्यार) पु० एक प्रकार का फल ।

सं० कमल (कं=पानी को, अल्= शोभा देना, वा कम्=चाहना, शोभना) पु० कमल, पद्म, जलज ।

सं० कमला (कमल, अर्थात् जिसके हाथ में कमल है) स्त्री० लक्ष्मी, विष्णुपत्नी, विष्णु की औरत ।

सं० कमलापति (कमला=लक्ष्मी, पति=भर्त्ता) पु० विष्णु, भगवान्, नारायण ।

सं० कमलिनी (कमल) स्त्री०कुमोदनी, २ कमलों का समूह ।

प्रा० कमाई (कमाना) भा० स्त्री० प्राप्ति, लाभ, उपार्जन, २ काम ।

प्रा० कमाऊ (कमाना) गु० कमाने वाला, मिहन्ती, उद्यमी, परिश्रमी ।

अं० कमाण्ड्रनचीफ़=प्रधान, सेनाध्यक्ष फौजका आलाहाकिम ।

प्रा० कमाना (काम, सं० कर्म्म, कृ=करना) क्रि०स०कमाई करना, पाना, प्राप्ति करना, पैदा करना, उपार्जन करना, २ काम करना, ३ साफ़ करना (चमड़ा या पाखाना) ४ (कम) कम करना, घटाना ।

अं० कमीशन=नियुक्तगण, किसी मुख्य बात के हेतु चुने मनुष्य अन्य देश में भेजे जाते हैं २ मुख़्तियारनामा ३ मेहनताना ।

अं० कमनांटयडसिविलसर्विस =वह पास या सनद जिसमें सरकार नौकरी देनेकी जिम्मेदारहै ।

प्रा० कमेरा (काम) पु० कामकरने वाला, मज़दूर, २ सहायक, मददगार ।

प्रा० कमोदनी (सं०कुमुदिनी, कु= धरती, मुद्=हर्षित करना) स्त्री०

कमलिनी जो रात को खिलती है और दिन को बंद हो जाती है।

प्रा० कमोरी–स्त्री० मटकी, गगरी।

सं० कम्प } (कम्प्=काँपना) भा०
कम्पन } पु० थरथराहट, कम्प कम्पी, लर्जा।

प्रा० कम्पना (सं० कम्पन, कम्प्=कांपना) क्रि० अ० थरथराना, काँपना।

सं० कम्पित (कम्प्=कांपना) ग्वि० कांपता हुआ, थरथराता हुआ, कम्पायमान।

सं० कम्बल (कम्ब्=जाना वा कम्=चाहना) पु० कामरी, लोई, ऊनी कपड़ा, दोशाला॥

सं० कम्बु (कम्=चाहना) पु० शंख, हस्ती, शम्बूक, घोंघा, सूती चूड़ी गु० चित्रवर्ण अर्थात् चितकबड़ा।

सं० कम्बुग्रीवा (कम्बु=शंख, ग्रीवा=गरदन) गु० जिसकी गरदन शंख ऐसी हो।

सं० कर (कृ=करना) पु० हाथ, २ हाथी की सूंड़, ३ (कॄ=बिखेरना, फैलाना) किरन, ४ महसूल, मालगुजारी, ५ जड़, हस्तनक्षत्र।

प्रा० कर्करा (सं० कर्कर, कृ=करना) पु० खोटा सिक्का, २ एक पखेरूका नाम गु० कठोर, कड़ा।

प्रा० करगहना (सं० कर=ग्रहण, कर=हाथ, ग्रह=लेना, पकड़ना) क्रि० स० ब्याह करना, ब्याह में दुलहिन का हाथ पकड़ना।

सं० करटक-पु० नाम शृगाल, सियार, कलेला।

सं० करघर्षण (कर=हाथ, घर्षण=मलना, घृष्=घिसना, मलना) भा० पु० हाथमलना, हाथमींजना।

सं० करज (कर+जन्=पैदा होना) पु० नख, नाखून।

सं० करण (कृ=करना) पु० साधन, काम सिद्ध करने का उपाय, हथियार, औज़ार, २ व्याकरणमें तीसरा कारक, ३ इंद्रिय, ४ काम, ५ काया, शरीर, ६ कारण, ७ छत्र, ८ करण, कायस्थ, ९ ज्योतिष में एकतरह के समयके विभागों को करण कहते हैं वे ११ हैं, उनमें से ७ चलहैं और ४ स्थिर हैं और दो करण मिल के एक चन्द्र दिनके बराबर होते हैं।

प्रा० करणी (सं० करणीय, करने योग्य, कृ=करना) स्त्री० काम, धंधा, २ थापी।

सं० करणी (कृ=करना) स्त्री० गणित विद्या में ऐसी राशि को कहते हैं जिसका ठीक मूल नहीं मिले।

सं० करण्ड (कृ+अण्डन्) पु० काक पक्षी, कौवा, २ डिब्बा, डिबिया,

पात्र, मधुचक्र, शहदका छत्ता, पान-पात्र, पुष्पपात्र।

प्रा० करतब (सं० कर्त्तव्य, कृ=करना) पु० काम, करनेयोग्य काम, २ चाल, ३ गुण, हुनर, ४ परख, तजरुबा।

सं० करतल (कर=हाथ, तल=नीचा) पु० हथेली, हाथ का तल।

सं० करताल (कर=हाथ, ताल=एक बाजे का नाम) पु० एक बाजे का नाम, कठताल।

सं० करताली (कर=हाथ, तड़=पीटना, बजाना) स्त्री० हाथबजाना, हाथ बजाने का शब्द।

प्रा० करतूति (सं० कर्त्तव्यता) स्त्री० काम, धंधा, करतब।

सं० करदपत्र=खिराजनामा।

प्रा० करना (सं० करण, कृ=करना) क्रि० स० बनाना, रचना, सुधारना, २ पु० एक खट्टे फल का नाम।

सं० करनिकर-पु० करसमूह, हस्तसमूह।

सं० करपाल (कर=हाथ, पाल्=बचाना) पु० तलवार, खड्ग, मोजा, दस्ताना।

सं० करपुट=हाथ जोड़ना, दोनों हाथ मिलाना।

सं० करवाल (कर=हाथ बल्=जाना वा ढकना) पु० तलवार।

सं० करवालिका-स्त्री० छूरी, कटारी।

प्रा० करबी, स्त्री०, जुआर, अथवा बाजरे के पुवाल।

सं० करभ-पु० ऊंट, हाथीका बच्चा।

सं० करभूषण-पु० कंकण, बिजायठ।

प्रा० करम (सं० कर्म्म, कृ=करना) पु० काम, धंधा, २ भाग, भाग्य, क़िस्मत। [तरफ़।

प्रा० करवट-स्त्री० पसवाड़ा, पांजर,

सं० करवीर (कर=जड़, वीर=प्रकट होना, वा कर=हाथ, वीर=पराक्रम करना) पु० कंडीर का फूल अथवा पेड़, कनेल, २ तलवार।

सं० करशाला-वि० स्त्री० चुंगीघर, महसूलघर।

प्रा० करांत, करोत (सं० करपत्र, कर=हाथ, पत्=गिरना, जो हाथ से लकड़ी पर गिरता है) पु० आरा, अर्रा, क्रकच, लकड़ी चीरने का एक औजार।

प्रा० करारा, करार पु० नदी का ऊंचा किनारा, २ (सं० कर्कर) गु० कठिन-कड़ा, सख़्त, भयंकर काला कौवा।

सं० कराल (कृ=हिंसा करना, मारना) गु० भयानक, भयंकर, डरावना, २ बड़ा लम्बा।

सं० करालाकृति (कराल+आकृति) स्त्री० भयंकर स्वरूप, खौफ़नाकसूरत।

प्रा० कराहना-क्रि० अ० किसी

पीड़ा अथवा दुःखके कारण आह मारना, कहरना।

सं० करिण (कर=सूंड अर्थात् सूंड वाला) पु० हाथी, गज, मतंग।

सं० करीर (कृ=फैलाना, वा मारना) पु० बांसका अंकुर, २ करील, एक प्रकारका कँटीला वृक्ष जो मरुस्थल में उगता है और उसको ऊंटखाते हैं।

सं० करुणा (कृ=करना, वा कृ=फेंकना) स्त्री० दया, कृपा, अनुग्रह, २ नाम वृत्तका ३ नवरसमें एकरस।

सं० करुणानिधान (करुणा=दया, निधान=खज़ाना) गु० करुणा के खज़ाना, कृपालु, दयालु।

सं० करुणामय (करुणा=दया,मय =रूप) गु० दयाके रूप, दयामय, दया करनेवाला, दयालु, कृपालु।

सं० करुणायतन (करुणा+आयतन) पु० दया के स्थान।

सं० करुणार्द्र (करुणा=दया,आर्द्र= गीला) पु० करुणानिधान, करुणामय, दयालु।

प्रा० करुवा (सं०करक, कृ=करना) पु० कमंडलु, करवा, कठारी, मिट्टी का कोरा बरतन—करवाचौथ=एक पर्व अथवा त्योहार जो कातिक के महीने में होता है।

सं० करेणु–पु० हाथी, हस्ती।

प्रा० करेला (सं० कटिल्ल, कट्=घेरना) पु० एक तरकारी का नाम जो कुछ कड़वी होती है।

प्रा० करोनी–स्त्री० दूधकी खुर्चन।

प्रा० करौंदा (सं० करमर्दक, कर =हाथ,मृद्=मलना) पु० एक फल का नाम।

सं० कर्क (कृ=करना,वा कॄ=फैलना) पु० कैंकड़ा, २ चौथीराशि,।

सं० कर्कट (कृ=करना) पु० कैंकड़ा, गिंगटा, २ चौथीराशि, सर्ता।

सं० कर्कश (कर्क=कठिनता, वा कॄ= फेंकना, कश्=मारना) गु० कठोर, कठिन, कड़ा, निर्दय, लड़ाका।

सं० कर्कशा–स्त्री० लड़ाका, झगड़ा करनेवाली, कलही। [का पेड़।

सं० कर्कन्धु स्त्री० बदरीवृक्ष, बेर

सं० कर्ण (कृ=करना, अर्थात् शब्द का ज्ञान करना) पु०कान,२ (कर्ण= भेदना, वा कॄ=फैलाना) पतवार, ३ त्रिभुज खेतमें भुज और कोटि को छोड़े तीसरी भुजाका नाम, ४ चौकोने खेत में उस लकीर का नाम जो सामने के कोनों से खींची जाती है, आध काट, ५ कुंतीका बेटा जो सूर्यके अंश से पैदा हुआ।

सं० कर्णधार (कर्ण=पतवार, धृ=रखना) पु० मांझी, चढनदार, जहाज़ चलानेवाला, नाविक, केवट, मल्लाह।

सं० कर्णफूल (कर्ण=कान, फूल,

अर्थात् कानकाफूल) पु० कान में पहनने का गहना, कर्णभूषण ।

सं० कर्णवेध } कर्णवेधन } (कर्ण=कान, विध्=छेदना) पु० कान बिन्धाना, कानछिदाना ।

सं० कर्णमण्डक (मण्ड्=शोभा देना) क० पु० कर्णफूल, बिरिया, २ मधुरशब्द ।

सं० कर्णाट-पु० कर्णाटकदेश ।

सं० कर्णिका (कर्ण + इक, कर्ण छेदना) स्त्री० हाथी की सूँड़ की नोक, हाथ की बीच की अंगुली, मध्यमा, कलम, लेखनी, कुट्टिनी, कर्णभूषण, कर्णफूल ।

सं० कर्त्तन (कृत्=काटना) पु० कतरन, काटना, छांटना ।

सं० कर्त्तरिका } कर्त्तरी } (कृत्=काटना) स्त्री० कतरनी, कैंची ।

सं० कर्त्तव्य (कृ=करना) म्वी० पु० करने योग्य, जो कुछकरनाचाहिये, अवश्य उचित, योग्य, वाजिब ।

सं० कर्त्ता (कृ=करना) पु० करने वाला, बनानेवाला, २ सृष्टि पैदा करनेवाला, ईश्वर, ३ व्याकरण में पहला कारक, ४ ग्रन्थ बनाने वाला, ५ पति, मालिक, स्वामी, अधिकारी ।

प्रा० कर्त्तार (सं०कर्त्ता) पु० करने वाला, २ पैदा करनेवाला, ईश्वर, सिरजनहार, सृष्टिकर्त्ता ।

सं० कर्द } कर्दम } (कर्द्=बुरा, शब्दकरना) पु० कीचड़, कादों, चहला ।

प्रा० कर्धनी (सं० कटि=धारणीय, कटि=कमर, धारणीय=पहनने योग्य, धृ=धारणकरना वा कटिबन्धन, कटि=कमर, बन्धन=बांधना) स्त्री० कंधनी, कमर में पहननेका गहना ।

सं० कर्पूर (कृप्=समर्थ होना) पु० कपूर, बाहुभूषण ।

सं० कर्बूर (कर्ब्=जाना) पु० स्वर्ण, हरिताल, राक्षस ।

सं० कर्म्म (कृ=करना) पु० काम, धंधा, २ धर्मसंबंधी काम, जैसे यज्ञ, होम, दान आदि, ३ पहले जन्म में किया हुआ, ४ कर्मकारक, दूसर कारक (व्याकरण में) ५ भाग, क़िस्मत ।

सं० कर्म्मकाण्ड (कर्म=काम, कांड =समूह) पु० कर्मों का समूह, २ जप होम यज्ञ आदि, ३ वेद का एक भाग ॥

सं० कर्म्मकार (कर्म=काम, कार =करने वाला, कृ=करना) पु० काम करने वाला, २ लुहार ।

सं० कर्म्मनाशा (कर्म्म=अच्छे काम, वा पुण्य, नाश्=नष्ट करना) स्त्री० एक नदी जो बनारस और बिहार के बीच में है ॥

सं० कर्म्मनिपुणाई-भा० स्त्री० कर्म-कुशलता, काम की चतुराई, कारीगरी।

सं० कर्म्मपथ-स्त्री० कर्म्ममार्ग, वेद की रीति, तरीकय शरई ।

सं० कर्म्मभोग (कर्म्म=पहले जन्म में किये हुये काम का फल, भोग=भोगना) पु० भले बुरेका फल, प्रारब्ध के फल का भोग ।

सं० कर्म्मेन्द्रिय (कर्म=काम, इंद्रिय=इंद्री) स्त्री० काम करने की इंद्री जैसे हाथ पांव आदि (इंद्रिय शब्द को देखो) ।

सं० कर्ष (कृष्=खींचना) पु० बैर विरोध, रोष, ईर्षा, जैसे " बातहि बात कर्ष बढ़ि आई" (रामायण) २ सोलह माशे का तोल ।

सं० कर्षक (कृष्=खींचना, हल जोतना) पु० किसान, जोता, जोतने वाला ।

सं० कर्षण (कृष्=खींचना, हल जोतना) पु० खैंच, तान, २ जोतना, खेती करना ।

प्रा० कल } (सं० कल्य, कल्=गिन-
काल } ना) पु० आजका पहला वा पिछला दिन ।

प्रा० कलकीबात-बोल० थोड़े दिनों की बात, जो कुछ थोड़े दिन पहले हुआ हो ।

प्रा० कल--स्त्री० चैन, आराम, सुख, राहत ।

प्रा० कलमकल-बोल० बेचैनी, बे-आरामी, बेकली, दुःख, तकलीफ ।

प्रा० कल (सं० कला, कल्=शब्द करना) स्त्री० जन्त्र, यन्त्र, २ बंदूक की कल, चाप, ३ दांव, पेंच ।

प्रा० कलकाआदमी-बोल० बहुत दुबला आदमी, २ पुतला ।

प्रा० कलकाघोड़ा-बोल० बहुत अच्छा सिखाया हुआ और अधीन घोड़ा ।

सं० कल (कल्=शब्द करना) पु० मीठा शब्द, २ (कड्=प्रसन्नहोना) वीर्य्य, बीज, गु० मीठा, सुन्दर ।

सं० कलकण्ठ (कल=मीठा, वा सुन्दर, कंठ=गला) स्त्री० कोयल, कोकिला, गु० सुन्दर वा मीठे कण्ठवाली ।

सं० कलकल (कल्=शब्द करना) पु० कोलाहल, कलकल, ऐसा शब्द, कचकच, झकझक, बकबक ।

सं० कलङ्क (क=मुख, वा आत्मा, लकि=बिगाड़ना, वा कल्=जाना) पु० दाग, दोष, चिह्न, लाञ्छन, लाञ्छन ।

प्रा० कलजिभा (सं० कालजिह्व, काल=काली, जिह्वा=जीभ) गु०

बुरा चीतनेवाला, दुर्जन, बुरा चाहनेवाला।

सं० कलत्र (कल=वीर्य्य, त्र=बचाना वा गड्=सींचना, यहां ग को क और ड को ल हो जाता है) स्त्री० पत्नी, भार्या, लुगाई, स्त्री।

सं० कलधौत (कल=मैल, धौत=धोगया) गु० मलरहित २ सोना।

सं० कलन (कल्=गिनना) भा० पु० गिनना, चिह्न।

प्रा० कलप-पु० बालों के रंगने का रंग, खिज़ाब, माँड़, लेई।

प्रा० कलपना (सं० कल्पन, क्रृप्=दुबला होना) क्रि० अ० कुढ़ना, पछताना, बिलखाना, दुःखी होना, दुःख पाना।

प्रा० कलपाना (कलपना) क्रि० स० कुढ़ाना, सताना, दुःख देना।

सं० कलभ (कल्=शब्द करना) पु० हाथी का बच्चा।

अ० क़लम=लेखनी।

प्रा० कलमकल-स्त्री० घबराहट, दुःख।

प्रा० कलमलाना-क्रि० अ० चुलबुलाना, छटपटाना, कुलबुलाना, हिलना।

प्रा० कलवार-पु० कलाल, कलार, सुंडी, मदिरा खींचनेवाला और बेचनेवाला।

सं० कलश (कल=शब्द, श=जाना) पु० घड़ा, गगरा, पानी रखने का बरतन, २ मन्दिरों के ऊपर का शिखर।

प्रा० कलशिरा } (सं० काल=काला
कलसिरा } शीर्ष=शिर) गु० काले शिरवाला, काले शिर का, पु० मनुष्य, आदमी।

सं० कलस (क=पानी, लस्=शोभना) पु० घड़ा, कलश, २ मन्दिर का शिखर।

सं० कलहंस (कल=सुन्दर, हंस) पु० राजहंस।

सं० कलह (कल=मीठा, शब्द, हन्=मारना) पु० लड़ाई, झगड़ा, विरोध, गु० कलहकार=झगड़ालू, लड़ाई करनेवाला २ कलहकारिणी=झगड़ालूस्त्री० लड़ाईकरनेवाली।

सं० कला (कल्=गिनना, जाना) स्त्री० बहुत छोटा, भाग, अंश का साठवां हिस्सा, २ चन्द्रमण्डल का सोलहवांभाग, ३ समय का हिस्सा, साठ सेकंड, ४ छल, कपट, बहाना, फरेब, ५ गुण, हुनर, गाना बजाना आदि ६४ कला।

कला चौंसठहैं॥

१--गीत=गाना अर्थात् स्वरों रागों और रागिनियोंको जानना और उनको अभ्यास करना।

२—वाद्य=बाजा बजाना ।
३—नृत्य=नाचना ।
४—नाट्य=नकल करना, नाटक खेलना ।
५—आलेख्य=लिखना और चित्रकारी यानी मुसव्वरी करना ।
६—विशेषक छेद्य=अनेक प्रकार के खौर और तिलक लगाने के सांचे बनाना ।
७—तण्डुलकुसुमबलिविकार क्रिया=बिना टूटे चावल और फूलों के चौक देवमन्दिरों में पूरना ।
८—पुष्पास्तरण=फूलों की सेज बनाना ।
९—दशनवसनांगराग=दांतों के मंजन मिस्सी आदि और वस्त्र और अंगराग बनाना और लगाना ।
१०—मणिभूमिकाकर्म=गर्मी के दिनों में रहने के लिये गृहविशेष बनाना ।
११—शयनरचन=पलंग बिछाना ।
१२—उदकवाद्य=पानीमें बाजा बजाना या जलतरंग ।
१३—उदकघात=पानीके खेल, छींटा देना या पानी हाथों से दबाकर ऊपर उठाना ।
१४—चित्रयोग=१ नपुंसक करना, २ जवान को बुड्ढा और ३ बुड्ढा को जवान करना ।
१५—माल्यग्रन्थनविकल्प=देव पूजा के लिये अनेकप्रकार के माला और वस्त्र बनाना ।
१६—शेखरापीड़योजन=शिर में अनेक प्रकारके फूलोंकी रचना ।
१७—नेपथ्यप्रयोग=देशकालानुसार वस्त्र पहिनना ।
१८—कर्णपत्रभंग=हाथीदांत और शंखादि के कर्णफूल बनाना ।
१९—गन्धियुक्ति=अनेक प्रकार के सुगन्धित पदार्थ बनाना और लगाना ।
२०—भूषणयोजना=गहनेपहनना ।
२१—ऐन्द्रजाल=बाजीगरोंकी तरह शोबिदे अर्थात् लीला दिखलाना ।
२२—कौचुमारयोग=कुरूपको सुन्दर करना ।
२३—हस्तलाघव=हाथको फुरती और हलकेपने से काममें लाना ।
२४—चित्रशाका पूप भक्ष्य विकार क्रिया=अनेक प्रकार की तरकारियां और भोजन के व्यंजन बनाना ।
२५—पानकरसरागासवयोजन=अनेक प्रकार के पीने के शर्बत या अर्क और शराब बनाना ।
२६—सूचीकर्म्म=सीना और बुनना ।
२७—सूत्रक्रीड़ा=रंग बरंग के तागे

दिखलाना साबित को टूटा और टूटे को साबित दिखाना । [कहना।

२८–प्रहेलिका=पहेलीसीखनाऔर

२९–प्रतिमाला=बैतबाजी या श्लोकके अन्तिम अक्षरसे दूसरा श्लोक कहना । [का पढ़ना ।

३०–दुर्वाचकयोग=कठिन शब्दों

३१–पुस्तकवाचन=शृंगारादि अलंकार और गान के साथ पुस्तक पढ़ना ।

३२–नाटकाख्यायिका दर्शन=छोटे बड़े नाटक देखना और दिखलाना ।

३३–काव्यसमस्यापूर्ण=दीहुई, समस्या से श्लोक को पूराकरना ।

३४–पट्टिकावेत्रबाणविकल्प=तरह २ की खाट चुनना ।

३५–तर्कवातक्षकर्म्म= दलीलैं करना वा शिल्पकारी वा शान चढ़ाना ।

३६–तक्षण=बढ़ईका काम करना ।

३७–वास्तुविद्या=घरबगैरहबनाना, सामान रखना ।

३८–रूप्यरत्नपरीक्षा=सोना, चांदी और रत्नों का पहिचानना ।

३९–धातुवाद=कच्ची धातु का साफ़ करना ।

४०–मणिरागकरज्ञान=मणियों के रंग और उन की खानि जानना और पहिचानना ।

४१–वृक्षायुर्वेदयोग=वृक्षों का तरतीबवार जमाना और पालन पोषण करना ।

४२–मेष कुक्कुट लावक युद्ध विधि=मेढ़े मुर्ग़े लावक के युद्ध की रीति ।

४३–शुक सारिका प्रलापन =सुआ और मैना को पढ़ाना ।

४४–उत्सादन=उपटन बनाना और लगाना और शरीर का दाबना ।

४५–केश मार्जन कौशल=बालों का मलना और तेल लगाना ।

४६–अक्षरमुष्टिकाकथन=संक्षेप लिखा हुआ पढ़ना ।

४७–म्लेक्षितविकल्प=शब्दों का गूढ़अर्थ समझना जैसे अग्नि से ३ की संख्या और वेद से ४ की संख्या आदि ।

४८–देशभाषाविज्ञान=देश देश की भाषा जानना ।

४९–पुष्पशकटिका=बालकों के लिये फूलों की गाड़ी बनाना ।

५०–निमित्तज्ञान=शुभाशुभ देश परिज्ञान फल—गुप्त बात का वर्त्तमान दशा देखकर बतलाना ।

५१–यन्त्रमात्रिका=लड़ाई के लिये यन्त्रों की घटना जानना ।

५२–धारणमात्रिका=स्मरणशक्ति का बढ़ाना जिस से सुनतेही याद होजावे।

५३–समवाच्यसमपाठ्य=बिना पढ़े हुये को दूसरे का पढ़ना सुन कर उसके समानही पढ़ते या बांचते जाना।

५४–मानसीकाव्य क्रिया=उसी क्षण काव्य बनाना दूसरे के मन की बात जानना। [ना।

५५–अभिधान–कोष=कोषबना-

५६–छन्दोज्ञान=तरह तरह के छन्दों का पहिचानना।

५७–क्रियाविकल्प=काव्यों के अलङ्कार जानना।

५८–छलितक योग=वंचन करने या मोहने के हेतु वेष बदलना अर्थात् ऐयारी।

५९–वस्त्र गोपन=फटे कपड़ों का ऐसा पहिनना कि मालूम न पड़े या इच्छित प्रकार से पहिनना।

६०–द्यूतविशेष=जुआ खेलना।

६१–आकर्ष्यक्रीड़ा=पाँसाखेलना

६२–बालक्रीड़न कर्म्म=बालकों के लिये खिलौने बनाना।

६३–वैनयिकी वैजयिकी विद्या=विनय और विजय के उपाय।

६४–वैतालिकी व्यायामिकी विद्या=भूत प्रेत और दांव पेंच आदि।

प्रा०कलाई–स्त्री० पहुँचा।

सं० कलाधर (कला+धृ=धरना) क० पु० चन्द्रमा, महताब।

सं० कलाप (कला=भाग, आप्=पाना) पु० समूह, २ संस्कृत भाषा का व्याकरण, ३ मोरकी पूंछ।

सं० कलापक (कलाप्+अक) क० मोर, मयूर, ताऊस।

सं० कलापी (कला+मोर की पूंछ) पु० मोर, मयूर। [का तार।

प्रा० कलाबत्तन–पु० सोना चांदी

प्रा० कलार } पु०कलवार, मदिरा
कलाल } खेंचनेवाला और बेंचनेवाला। [स्त्री०।

प्रा० कलारिन–स्त्री० कलार की

प्रा० कलावंत–पु० गानेवाला, गवैया, ढाढी।

सं०कलि (कल्=गिनना) पु० चौथा युग, कलियुग, कलयुग, (युगशब्द को देखो) २ लड़ाई, झगड़ा।

सं०कलिका } (कल्=जाना, वा
कली } गिनना) स्त्री० कोंपल बिन खिला हुआ फूल।

सं० कलिङ्ग (कलि=झगड़ा, गम्=जाना) पु० कटक से मंदराजतक का देश।

सं०कलियुग (कलि,युग=समय)०

चौथायुग, कलियुग(युगशब्ददेखो)

सं० कलुष (क=सुख, वा आत्मा, लुष्=नाश करना)पु० पाप, गंदला, नाराज़।

प्रा० कलेऊ, कलेवा (सं०कल्याहार, कल्य=कल, आहार=खाना) पु० कल का बचा खाना, ठंढा खाना, बासी खाना, भोर का खाना, नाश्ता।

प्रा० कलेजा -पु० कलेजा, जिगर, २ साहस, हिम्मत।

प्रा० कलेजाउलटना-बोल०बहुत कै करने से थक जाना।

प्रा० कलेजाफटना-बोल० दुख अथवा डाह से बेकल होना।

प्रा० कलेजाठंढाकरना-बोल० अपनी चाह पूरीकरना, आराम पाना, चैन करना।

प्रा० कलेजाजलना-बोल० दुख पाना, कुढना, पछताना, सोचकरना।

प्रा०कलेजाकांपना-बोल०डरना, सहमना, थरथराना।

प्रा०कलेजेपरसांपफिरना-बोल० डाह से जलना।

प्रा०कलेजेसेलगारखना, कलेजे से लगालेना बोल० प्यार करना, गलेलगाना, बहुतही बहुत प्यार करना।

प्रा० कलेजेमेंडालरखना-बोल० बहुत प्यार करना, बहुतही बहुत चाहना।

सं० कलेवर (कल=वीर्य्य,वर=श्रेष्ठ, वा,कल्=जाना) पु० देह, शरीर।

प्रा० कलेश, कलेस (सं०क्लेश,क्लिश्=दुख पाना)पु०दुख, कष्ट-पीड़ा, २ झगड़ा, दंगा।

प्रा० कलोल (सं० कल्लोल, कल्=शब्द करना) स्त्री० खेलकूद,क्रीड़ा, चञ्चलाहट, आनन्द, बड़ीलहर।

प्रा० कलौंजी-स्त्री० मगरेला, एक तरह का बीज जो दवाई में काम आता है

सं० कल्की-पु० विष्णु का दशवां [अवतार।

सं० कल्प (कृप्=समर्थ होना,वा नाश होना)पु० वेद के छः अंगों में का एक अंग, २ ब्रह्माका एक दिन रात जो मनुष्यों के हज़ार चौयुगी अथवा ४३२०००००० का होता है ३ प्रलय, ४ विकल्प, संदेह, ५ अभिप्राय, मतलब, कामना, मनोरथ ५ योग्यता, उचितता।

सं० कल्पतरु, कल्पद्रुम, कल्पवृक्ष (कल्प=मनोरथ, वा कामना,तरु, वा द्रुम वा वृत्तका अर्थ पेड़) पु०मनोकामना देनेवाला वृत्त जो इन्द्र के बाग़ में है

सं० कल्पना(कृप्=विचारना) स्त्री०

विचार, बनावट, मानना, युगत, जालसाजी, नक़ल।

सं० कल्पांत (कल्प=ब्रह्माका दिन रात, अन्त=पूरा होना) पु०प्रलय, युगान्त, कल्पका अन्त।

सं० कल्पित (क्लृप्=विचारना) कर्म० बनाया हुआ, माना हुआ, कृत्रिम, २ झूठा, असत्य।

सं० कल्मष (कर्म्म=अच्छा काम, वा पुण्य, सो=नाश करना यहां र्को ल, और स को ष होगया) पु०पाप, नरक, मल।

सं० कल्याण (कल्य=निरोग, अण्=जीना, वा कल्य=प्रभात, अण्=शब्द करना) पु० कुशल, मंगल, शुभ, २ एक रागनी का नाम।

सं० कल्ल-पु० बधिर, बहरा।

प्रा० कल्लर-गु० ऊषर, खारी।

प्रा० कल्ला-पु० जबाड़ा, जबड़ा।

सं० कवच (क=हवा, बंच्=ठगना, वाकु=शब्द करना) पु० झिलम, बख़्तर वर्म।

सं० कवल (क=पानी, बल्=ढकना) पु०ग्रास, कवर, कवा, कौर लुक़मा।

सं० कवि (कु=शब्दकरना) पु०काव्य बनाने वाला, जैसे बाल्मीकि, कालीदास आदि, शाअर, पंडित, बुद्धिमान, २ भाट, चारण।

प्रा० कवित्त (सं० कवित्व, कवि) पु० कविता, काव्य, शअर।

सं० कविता (कवि) स्त्री० कविकी बनाईहुई रचना, काव्य, पद्य, श्लोक, छन्द आदि, शाअरी।

प्रा० कविताई (कविता) स्त्री० पद्य रचना, तसनीफ़।

सं० कवीश्वर (कवि, ईश्वर=स्वामी) पु० बड़ा कवि, बाल्मीकि।

सं० कव्य (कु=शब्दकरना) पु०पितरों के लिये जो अन्न आदि पदार्थ।

सं० कश्मल पु० मोह, अज्ञानता।

सं० कश्य-पु० मदिरा, घोड़ेकातंग।

सं० कश्यप (कश्य=सोमलता, सोमवल्ली, पा=पीना) पु० एक मुनि का नाम, मरीच ऋषि का बेटा और देवता राक्षस और मनुष्यों का पुरुषा, प्रजापति, कश्यप शब्द यथार्थ में पश्यक था आदि अन्त अक्षरों के विपर्य्यय अर्थात् बदलने से कश्यपबना इसका अर्थहुआ सर्वज्ञ, २ अज्ञान नाशक, ३विशेषज्ञानवान् ४ आत्मज्ञानी, ५ परब्रह्म ६ सृष्टिकर्त्ता।

सं० कष्ट (कष्=मारना, हानिपहुंचाना) पु०दुख, कलेश, पीड़ा, तकलीफ़, संकट।

प्रा० कस-गु० कैसा, पु० परख, ताव, २ जोर, बल, कैसा। [टीस।

प्रा० कसक-स्त्री० पीड़ा दुख, टसक,

प्रा० कसना (सं० कृष्=खैंचना, वा कष्=जांचना) क्रि० सं० खैंचना, तानना, जकड़ना, २ सोने की कसौटी पर घिसके परखना, जांचना, परखना, ३ तलना, घीमें भूनना।

प्रा० कसमसाना-क्रि०अ०हिलना,

अंग मरोड़ना, कलमलाना ।

प्रा०कसार-पु० एक तरह की मिठाई जो चावल और शकर से बनाई जाती है ।

प्रा०कसेरा (सं० कांस्यकार, कांस्य=कांसा, कार=करने वाला, कृ=करना) पु० ठठेरा, भरतिया ।

प्रा० कसौटी (सं० कष्=कसना, जांचना) स्त्री० एक पत्थर जिस पर सोना चांदी कसाजाता है, धातु परखने का पत्थर ।

सं० कस्तूरी (कस्=जाना, अर्थात् जिस से सुगन्ध निकलती है) स्त्री० सुगन्धित चीज जो हरिणकी नाभि में मिलती है, मृगमद, मुश्क ।

प्रा० कहना (सं० कथन, कथ्=कहना) क्रि० स० बोलना, जताना आज्ञा करना ।

प्रा० कहदेना-बोल० जतादेना, आज्ञा देना ।

प्रा० कहनावत, कहावत (सं० कथावत्, कथा, बात, वत्, =बराबर, तुल्य) स्त्री० बात, दृष्टांत, मिसाल, मसल ।

प्रा० कहरना, कहराना क्रि० अ० कराहना, किसी दुख अर्थात् पीड़ा के कारण आह मारना । [किस जगह ।

प्रा० कहां (सं० कु) क्रि० वि०

प्रा०कहांतक-क्रि० वि० कितनी दूर तक, २ कितनी देर तक, ३ कितना ।

प्रा०कहांसे-क्रि० वि० किस जगह से, किस तरफ़से, किधरसे ।

प्रा० कहांकाकहां-बोल० कितना, २ हदसे बाहर, बहुतही बहुत ।

प्रा० कहानी (सं० कथन, कथ्=कहना) स्त्री० बात, कथा, क़िस्सा ।

प्रा० कहार (सं० कर्म्मकार, कर्म्म=काम, कार=करनेवाला) पु० महरा, भोई, पालकी उठानेवाला ।

प्रा० कहीं (सं० कापि, कु=कहां, अपि=भी) क्रि० वि० किसी जगह, जहां कहीं, कहुं ।

प्रा० कहींनकहीं-बोल० इसजगह या उस जगह, यहां अथवा वहां, किसी न किसी जगह । [जगह ।

प्रा० कहुं-क्रि० वि० कहीं, किसी

प्रा०कांकर-पु० कंकर, रोड़ा, पत्थर के छोटे २ टुकड़े । [कक्ष, पार्श्व ।

प्रा० कांख (सं० कक्ष) स्त्री० बगल,

प्रा०कांचुली (सं० कञ्चुक, कचि=बांधना) स्त्री० अंगिया, चोली, कंचुकी ।

प्रा० कांजी (सं० काञ्जिक) पु० खट्टा मांड, तुरानी पीछ ।

प्रा०कांटा (सं० कण्टक) पु० शूल, शाल, कण्टक, २ सोना अथवा दवाई आदि तोलने की छोटी तराजू, परयाती, ३ मछली पकड़ने की बंसी, ४ मछली की हड्डी ।

प्रा०कांटासानिकलजाना-बोल० दुख अथवा हानि से छुटजाना।

प्रा० कांटोंपरघसीटना—बोल०बहुत सराहना, किसी की योग्यता से अधिक बड़ाई करना, (जबकोई किसी आदमी की बहुत सराहना करता है तब वह आदमी नम्रतासे ऐसा कहता है)

प्रा० कांटेबोने—बोल० अपने लिये आपही दुख पैदा करना, अपनी बुराई आप करना, किसी को दुख देना। [नगीच, निकट।

प्रा० कांठा (सं० कण्ठ) पु० पास,

प्रा० कांदा (सं०कन्द) पु०प्याज।

प्रा० कांदू (सं० कान्दविक) पु०भड़भूजा २ चीनी का हंडा।

प्रा०कांधा (सं० स्कन्ध) पु० कंधा, कांध, कंध।

प्रा० कांधादेना—बोल० सहायता देना, २ मुर्दे को लेजाना।

प्रा० कांपना (सं० कंपन, कंप्=कांपना) क्रि० अ० हिलना, थरथराना, डुलना, कंपना, धड़धड़ाना।

प्रा० कांस (सं० काश, काश्=चमकना) पु० एकप्रकार की घास।

प्रा०कांसा (सं० कांस्य) पु० एक प्रकार की धातु।

सं० काक (कै=शब्द करना) पु० कौआ, काग, वायस।

सं० काकतालन्याय=कौवा श्रमकर ताड़ के वृक्षपर जाकर फलको खाताहै तात्पर्य्य यहहै कि श्रम से सब पदार्थ प्राप्त होते हैं।

सं०काकपक्ष (काक=कौवा, पक्ष=पंख, अर्थात् कौवे का पंख जैसे) पु० पट्टा, जुल्फी।

प्रा० काका } पु० चचा, बाप का
प्रा० कका } छोटा भाई, पितृव्य।

सं० काकिणी—स्त्री० छदाम, कची दो दमड़ी।

प्रा० काकी-स्त्री० चची, चचाकीस्त्री, किसकी।

प्रा०काकातूआ—पु०सूये की जात का पक्षी।

प्रा०काकबधू—कवयी।

प्रा०काग }
कागा } (सं०काक) पु०कौवा।

प्रा०कागर—पु०किनारा, कोर, औठं, २ कँचली सर्पकी।

सं० कांक्षा (काक्ष=चाहना) स्त्री० चाह, इच्छा, चाहना, अभिलाष, ख़्वाहिश।

अ०कांग्रेस=मेल, मिलाप।

सं०काच (कच्=चमकना) पु० शीशा, आईना, २ एक तरह की आंखों की बीमारी। [अज्ञानी।

प्रा०काचा—गु० कचा, २ अधूरा,

प्रा० काछ (सं० कच्छ, कच्=बां-

धना) स्त्री० धोती का पल्ला जो पीछे खेंचकर बांधा जाताहै, लांग, २ जांघ के ऊपर का भाग ।

प्रा० काछन-स्त्री० काछी की स्त्री ।

प्रा० काछनी-स्त्री० लंगोटी, कोपीन, जांघिया ।

प्रा० काछी पु० कुंजरा, माली ।

प्रा० काज } (सं० कार्य्य) पु०
प्रा० काजा } काम, धंधा, कारज ।

प्रा० काजल (सं० कज्जल) पु० सुरमा, अंजन ।

सं० काञ्चन (काचि=चमकना) पु० सोना, सुवर्ण, स्वर्ण, तिला ।

प्रा० काट (काटना) पु० चीरा, जखम, घाव, २ मैल, छांटन, तलछट, ३ कड़वाहट, तेजी, ४ धार ।

प्रा० काटकरना-बोल० घायलकरना, जखमी करना, काटना ।

प्रा० काटकूट-बोल० छांट छूंट, कतरन, छांटन, छीलन, टुकड़ा ।

प्रा० काटकूटकरना-बोल० कतरना, काटना, तराशना, काट डालना, २ काटलेना, छेलेना, मुजरा लेना ।

प्रा० काटखाना-बोल० दांतमारना, दांत काटना, भंभोड़ना, पकड़ना, काटना, डसना, मुँह डालना ।

प्रा० काटना (सं० कर्त्तन, कत्= काटना) क्रि० स० छेदना, तोड़ना, कतरना, चीरना, टुकड़े, टुकड़े करना, २ काटखाना, खाना, खाजाना, खालेना, ३ लौनी, कटनी करना, ४ आरे से चीरना, आरा चलाना, ५ बिताना (समय) चलना, जाना, तै करना (रस्ता) ।

प्रा० काटडालना-बोल० काटकाढ़ना, साफ़ करना, उतार डालना, छांट डालना ।

प्रा० काठ (सं० काष्ठ) पु० लकड़ी ।

प्रा० काठकबाड़—बोल० लकड़ीकी चीजें ।

प्रा० काठकाउल्लू—बोल० मूर्ख, बेवकूफ, घामड़, बिलल्ला, भुच्च, मियांमिट्ठू, मसखरा, गावदी ।

प्रा० काठकीभंवो—बोल० मूर्ख, बिलल्ली, भुच्च स्त्री, बेवकूफ लुगाई ।

प्रा० काठचबाना—बोल० दुख से निबाह करना, दुखसे जीना, कठिनता से गुजरान करना ।

प्रा० काठमेंपांवदेना—बोल० क़ैद होना, क़ैदी होना ।

प्रा० काठहोना—बोल० कड़ाहोना, सूखजाना, पथराना, पत्थरहोजाना ।

प्रा० काठपुतली } (सं० काष्ठपुत्तली
कठपुतली } स्त्री० लकड़ी की बनी हुई मूरत ।

प्रा० काठकीड़ा (सं० काष्ठकीट) पु० खटमल, उड़ीस खाट कीड़ा,

२ घुन, एक कीड़ा जो लकड़ी को काटता है और खाता है।

प्रा०काठड़ा, कठड़ा (सं०काष्ठ) पु० लकड़ी का बरतन।

प्रा० काठी (सं० काय, वा काष्ठ) स्त्री० जीन, २ शरीर, ३ डीलडौल।

प्रा०काढ़ना—क्रि० अ० निकालना, खेंचना, बाहर लेना, उधेड़ना, बाहर निकालना, कपड़ेपर सूई से फूल बनाना, कसीदा निकालना।

प्रा० काढ़ा—पु० जोश दिया हुआ दवाई का पानी, क्वाथ, कसैलारस।

प्रा० काणा (सं०काण, कण्=आंख ढकना) गु० एक आंखवाला, एकाक्ष, २ (फल) जिसका गूदा सड़ गयाहो, अथवा जिसमें कुछ गूदा न हो, ३मूर्ख, बेवकूफ, पु० काग, कौआ।

सं० काण्ड (कण्=शब्दकरना, वा जाना, वा कई विभाग करना) पु० सर्ग, खंड, प्रकरण, अध्याय, भाग, बाब, विभाग, २ समूह, ३ डंठल, ४ समय, ५ बाण, ६ सेन, ७ घोड़ा, ८ तन्त्रा।

प्रा० कातना (सं० कर्त्तन, कृत्=लपेटना) क्रि० स० सूत कातना, चरखे पर रुई से सूत बनाना।

सं० कातर (का=थोड़ा, तृ=पार होना, यहां कु=को का होगया है) गु० कायर, डरपोक, व्याकुल, घबराया हुआ।

प्रा० कातिक (सं० कार्त्तिक) पु० सातवां हिंदी महीना, कार्त्तिक।

प्रा० कादर (सं०कातर) गु० कायर, डरपोक।

प्रा० कादा, कांदौं (सं० कर्दम) पु० कीचड़, चहला, पंक।

प्रा० कान (सं० कर्ण, कृ=करना, शब्द ज्ञान को) पु० सुनने की इंद्री, श्रवण, सुनने की राह।

प्रा०कानऐंठना, कानअमेठना बोल० कान खींचना, ताड़ना करना, सज़ादेना।

प्रा० कानभरना—बोल० विरोध डालना, चुगली खाकर झगड़ा खड़ा करना, बखेड़ा डालना, तोड़ फोड़ करना।

प्रा० कानपरजूंनचलना—बोल० बहुत असावधान होना, बहुत ढीला होना। [रखना।

प्रा० कानपररखना—बोल० याद

प्रा० कानपरहाथधरना—बोल० मुकरना, नहीं करना, न मानना, ऊंहूं करना, न करना।

प्रा० कानपकड़ना—बोल० अपने तई छोटा मानलेना, अपनी छोटाई अथवा निचाई को मानलेना।

प्रा०कानफूटना—बोल०बहराहोना।

प्रा०कानफोड़ना—बोल० शोरकरना, गुल करना, गुहार करना, हल्ला करना, हा हू करना।

प्रा० कानफूंकना—बोल० चुग़ली खाना, भेद कहना, झगड़ा उठाना, २ मंत्रदेना, सिखाना, शिक्षादेना।

प्रा० कानझुकाना बोल० सुनने को चाहना, सुनाचाहना।

प्रा० कानदबाकर चले जाना—बोल०भागजाना, पलाना, रमजाना।

प्रा० कानधरना—बोल० सुनना, ध्यान देना। [देकर सुनना।

प्रा० कानदेसुनना—बोल० ध्यान

प्रा०कानदेना—बोल०सुनना, ध्यान देना।

प्रा० कानकाटना—बोल० बढ़ निकलना, बढ़चलना, थकाना, हराना, पीछेदेना।

प्रा०कानखड़ेहोना—बोल० चौंकना, डरना, भड़कना।

प्रा०कानखोलदेना-बोल० जताना, चिताना, सावधानकरना, सुचेतकरना।

प्रा० कानलगना—बोल० भरोसे वाला होना, विश्वासी होना।

प्रा० कानमलना—बोल० ताड़ना करना, सजादेना, डाटना, कान ऐंठना, कान अमेठना।

प्रा० कान में उँगली दे रहना—बोल० कानबंदकरना, बहरा बनना, सुनी अनसुनी करना।

प्रा० कानमें बात मारना—बोल० नहीं सुनने का बहाना करना, कान में तेल डालना।

प्रा० कानमें तेलडालना—बोल० नहीं सुनने का बहाना करना, कान में बात मारना।

प्रा० कानमेंतेलडालकेसोरहना—बोल० असावधान होना, अचेत होना, बे परवाह होना, ग़ाफ़िल होना।

प्रा०कानमेंकहना } बोल० काना
कानमें डालना } फूसी करना काना कानी करना, कानाबाती करना, कहदेना।

प्रा० काननहिलाना—बोल०चुपरहना।

प्रा० कानहिलाना—बोल० राज़ी होना, प्रसन्न होना, हां हूं करना।

प्रा० कानहोने—बोल० समझना, बूझना, पहुंचना।

प्रा० कानाबाती करना—बोल० कान में बातकहना, काना फूसी करना, काना कानी करना, खुस फुस करना, २ सलाह करना।

प्रा० कानाफूसी—बोल०काना बाती, काना कानी, फुस फुसाहट, खुसर फुसर।

प्रा० कानाकानी करना—काना

बाती करना, कानाफूसी करना, खसफस करना ।

प्रा० कानोकानकहना—बोल० काना बाती करना कानाफूसी करना ।

प्रा० कान—स्त्री० लाज, संकोच, मर्यादा, मान, परदा, अदब । [लजाना ।

प्रा० कानकरना—बोल० शरमाना,

प्रा० कानछोड़ना—बोल० बेशरम होना, निर्लज्ज होना, ढीठ होना, गुस्ताख होना ।

प्रा० कानकरना / कानमानना—बोल० ढिठाईकरना, गुस्ताखी करना, अदब नहीं मानना ।

सं० कानन (कन्=चमकना, शोभना, वा क=पानी, अन्=जीना, अर्थात् जो पानी से फलता फूलता है) पु० जंगल, वन, विपिन, २ (क=ब्रह्मा, आनन=मुँह) ब्रह्मा का मुँह ।

प्रा० कानी (सं० काणी) स्त्री० गु० एक आंखवाली स्त्री ।

प्रा० कानीकौड़ी (सं० काणी=कानी, कपर्द=कौड़ी) स्त्री० बोल० ऐसीकौड़ीजिसमेंछेदहो, फूटीकौड़ी।

प्रा० कानी—स्त्री० वैर, द्वेष, डाह ।

सं० कान्त (कन्=चमकना, वा कम् =चाहना) पु० स्वामी, भर्त्ता, पति, कंत, गु० सुन्दर, मनोहर, प्यारा, प्रिय, चाहा हुआ ।

सं० कान्ता (कन्=चमकना, वा कम् =चाहना) स्त्री० पत्नी, लुगाई, स्त्री, भार्य्या, घरवाली, प्यारी, प्रिया, सुन्दरी, २ कान्ति, सुन्दरता ।

सं० कान्ति (कम्=चाहना) स्त्री० शोभा, सुन्दरताई, चमक, दमक, खूबसूरती, दीप्ति, प्रकाश, २ चाह, इच्छा ।

अं० कान्फ्रेन्स=सभा, समाज, मजलिस, जलसा ।

सं० कान्यकुब्ज (कन्या=लड़की, कुब्जा=कुबड़ी) पु० कनौजदेश, २ ब्राह्मणोंकी एकजाति, कनौजिया ।

प्रा० कान्ह / कान्हर (सं० कृष्ण पु० श्रीकृष्णका नाम । [नाम ।

प्रा० कान्हड़ा—पु० एक रागिणीका

सं० कापुरुष (का=बुरा, पुरुष=मनुष्य) पु० खोटा मनुष्य, बुरा मनुष्य, २ डरपोक ।

अ० काफ़ी=पर्याप्त, अलम् ।

सं० काम (कम्=चाहना) पु० चाह, मक़सद, इच्छा, कामना, मनोरथ, चाहीहुई चीज़, चाहा हुआ विषय, २ कामदेव, प्यार, का देवता, ३ सुख, ४ शहवत ।

प्रा० काम (सं० कर्म्म) पु० काज, कार्य, धंधा ।

प्रा० कामआना—बोल० काम में आना, बरता जाना २ माराजाना लड़ाई में मारा जाना ।

प्रा० कामपूराकरना—बोल० काम सिद्ध करना, काम पार करना, नि-

बेड़ना, निपटाना, भुगताना, २ मार डालना, जान से मार डालना, खपाना ।

प्रा० कामपूरा होना—बोल० काम सिद्ध होना, काम पार होना, निबड़ना, निपटना, काम होचुकना, २ मरना, मारा जाना, मर जाना, खपना ।

प्रा० कामचलाना—बोल० काम निकालना, कामजारी रखना ।

प्रा० काममेंलाना—बोल० बरतना, इस्तअमाल करना ।

प्रा० कामनिकालना—बोल० काम चलाना, २ किसी की चाह पूरी करना ।

प्रा० कामकाज (सं० कर्म्म+कार्य्य) बोल० काम, धंधा, कारबार ।

सं० कामकेलि (काम=कामदेव, वा स्त्री संग, केलि=खेल, किल्=खेलना) स्त्री० रंगरस, दुलार, प्यार, स्त्री संग, रति, मैथुन, सुरत, स्त्री पुरुष का मिलाप, केल करना ।

सं० कामद (काम=इच्छा, कामना, दा=देना) गु० मनवांछित फल का देनेवाला, चाहेहुएका देनेवाला ।

प्रा० कामदगाई (सं० कामदगी, कामद=चाहे हुए को देनेवाली, गो=गाय) स्त्री० कामधेनु ।

सं० कामदेव (काम=इच्छा, वा प्यार, देव=देवता) पु० प्यार का देवता, मदन

सं० कामधेनु (काम=मनोरथ, धेनु=गाय) स्त्री० इंद्र की गाय जिससे जो कुछ मांगो सो देती है—२ गाय जो बहुत दूध देती हो ।

सं० कामना (कम्=चाहना) स्त्री० चाहना, चाह, इच्छा, अभिलाष, बासना, ख़्वाहिश ।

प्रा० कामरि, कामरी (सं० कम्बल) स्त्री० लोई, कम्बल ।

सं० कामरूप (काम=इच्छा, रूप=आकार) गु० चाहे जैसा रूप बना लेनेवाला, २ सुन्दर, सुहावना, मनोहर, पु० एक देश का नाम जो आसाम का एक भाग है ।

सं० कामरूपी (काम+रूप) गु० सुन्दर, सुहावना, २ स्वेच्छाचारी, बहुरूपिया ।

सं० कामातुर, कामार्त्त (काम=प्यार इश्क आतुर वा आर्त्त=घबराया हुआ) गु० कामी, मस्त, काम से पीड़ित ।

सं० कामारि (काम=कामदेव, अरि=वैरी) पु० महादेव, शिव, २ काम को नाश करनेवाली धातु ।

सं० कामिनी (कामी, कम्=चाहना) स्त्री० परमसुन्दरी, रमणीक स्त्री, प्यारी, प्रिया ।

सं० कामी (काम) पु० कामातुर, कामके वश,शहवतपरस्त । [मस्त ।

सं० कामुक-क० कामी, ऐयाश,

सं० काम्य-र्म्म० कमनीय, सुन्दर ।

सं० काय पु० }
कायास्त्री० } (चि=इकट्ठाकरना) शरीर, देह, तन ।

प्रा० कायफल (सं० कटु=फल, पु० एक दवाई का नाम । [पोक, हेठा ।

प्रा० कायर (सं० कातर) गु० डर-

सं० कायस्थ (काय=शरीर, स्था= ठहरना अर्थात् जो ब्रह्माके शरीर से पैदाहुये) पु० कायथ, एक जातिके मनुष्य जिनका धंधा लिखने पढ़नेका है २ (काय=शरीरमें, स्था=ठहरना) ब्रह्म, परमात्मा ।

सं० कायिक (काय) गु० शरीर का, शारीरिक, काया का, देहका, देही, शरीरी ।

सं० कारक (कृ=करना) क० पु० करनेवाला, २ (व्याकरण में) क्रिया से संबंध करनेवाला जैसे कर्त्ता कर्म आदि ।

प्रा०कारज(सं०कार्य)पु०काम,काज ।

सं० कारण (कृ=करना) पु० सबब, हेतु, निमित्त, लिये ।

सं०कारणकरण-क०पु० महत्तत्त्वा-दिका कर्त्ता, पंचतत्त्व से सृष्टि का करने वाला ।

सं० कारागार (कारा=बंदीघर, कृ =मारना, आगार=स्थान) पु० कैदखाना, जेलखाना, बंदीखाना, बंधिगृह । [नेवाला, कर्त्ता ।

सं०कारी (कृ=करना) क० पु० कर-

सं०कारुणिक (करुणा=दया) क० पु० दयालु, कृपालु, करुणानिधान, दयावान् ।

सं० कार्तिक (कृत्तिका एक नक्षत्र का नाम, इस महीने की पूर्णमासी के दिन कृत्तिका नक्षत्र होताहै और इस महीने में पूरा चांद इस नक्षत्र के पास रहता है) पु० कातिक ।

सं० कार्पण्य }
कार्पण्यता } भा० स्त्री० कृपणता, बखीली ।

सं० कार्य्याधिकारी-क० पु० का-रिन्दा, कारकुन । [धनुष्, इषुधि।

सं० कार्म्मुक (कृ=करना) पु०

सं०कार्य्य (कृ=करना पु०काम,काज, कारज, २ प्रयोजन, ३ कारण, हेतु ।

सं०कार्यकलाप }
कार्यप्रवृत्ति }
कार्य्यवाही } कारखाई, कारगुजारी ।

सं० कार्यदक्ष-गु० कारगुज़ार ।

सं० कार्य्यदक्षता-भा०स्त्री० कारगु-ज़ारी ।

सं०कार्य्यनिष्ठ (कार्य्य=काम, निष्ठ= लगा, स्था=ठहरना) र्म्म० काम में लगा हुआ काम में मशगूल ।

सं०काल (क=कुत्सित, बुरा, अल्=

पाना) गु० काला, कृष्णवर्ण, अ-सित (कल्=गिनना, बिताना, वा प्रेरणा करना, चलाना) यमराज, २ मौत, मृत्यु ३ समय, ऋतु ।

प्रा० कालबिताना, कालकाटना, कालगँवाना } बोल० समय बिताना, दिन काटना वक्तकाटना ।

प्रा० काल (सं० अकाल) पु० महँगी

प्रा० काल(सं०काल,काला)पु०सांप।

प्रा० काल (सं०कल्य)पु०कल,कल कादिन—(व्रजभाषामें)

सं० कालकूट (काल=मौत,कूट=ढेर, कूट्=ढकना, अर्थात् मौतका ढेर वा काल=यमराज, कूट्=जलाना, जो यम को भी जला सके)पु० विष, जहर, हलाहल, २ सांप का विष ।

सं० कालक्षेप (काल=समय, क्षिप् =फेंकना) पु० समय बिताना, दिन काटना, वक्त काटना ।

सं० कालनेमि (काल=मौत, नेमि= पहिये का घेरा) पु० एक राक्षस का नाम ।

सं० कालरात्रि (काल=मौत, वा अंधेरी, रात्रि=रात) स्त्री० मौतकी रात, प्रलय की रात, कल्पान्तरात्रि, २दुर्गाका एक नाम, ३ दिवाली, दीपमालिका की रात्रि ।

प्रा० काला (सं० काल) गु०काला रंग,कृष्णवर्ण, कलोटा, कलछौंहा, पु०सांप,२समय,३श्रीकृष्णकानाम ।

प्रा०कालाचोर-बोल० नहीं जाना हुआ मनुष्य, बेजान पहँचान का आदमी, चाहे जैसा आदमी ।

प्रा० काला मुहँ करना—बोल० फिटकारना, निकाल देना, हांकना, खदेड़ना, २ बे इज़्ज़त करना ।

प्रा० कालेकोस-बो० बहुत दूर ।

सं०कालिका, काली } (काल काला) स्त्री० काली देवी, काली माई, दुर्गा, देवी, शक्ति ।

सं०कालिदास (काली=दुर्गा, दास =सेवक (पु० एक कवि का नाम जिस के रघुवंश, कुमारसंभव, नलो-दय और शकुन्तलानाटक आदि बहुत से काव्य प्रसिद्ध हैं ।

सं०कालिन्दी (कलिन्द एक पहाड़ का नाम जहांसे यमुना नदी निकली, अथवा कलिन्द सूर्य, अर्थात् सूर्य की बेटी) स्त्री०यमुना नदी,२ सूर्यकी बेटी जो श्रीकृष्णको ब्याही थी ।

सं० कालिन्दीभेदन (कालिन्दी= यमुना, भेदन=तोड़ना, मोड़ना) पु० श्रीकृष्णके बड़े भाई बलदेव जी जिन्होंने अपने हलसे यमुनाको मोड़ली थी ।

प्रा०कालिमन, कालिमा } गु० कारिख,स्याही, कालापन ।

प्रा० कालिया, काली (सं०कालिय, काल=काला) पु०एकसांप का नाम जिसके एक सौ दश फन थे जिसको श्रीकृष्ण ने कालीदह से बाहर निकाला ।

प्रा० कालीदह (सं०कालिय, काली =सांप,हृद=गहरापानी) पु० यमुना नदी में एक भँवर जिसमें काली सांप रहता था ।

प्रा०कावादेना—बो० घोड़ेको चक्कर देना, घोड़ेको गोल २ घुमाना ।

सं० कावेरी (क=पानी, बेर=शरीर) स्त्री० एक नदी का नाम ।

सं० काव्य (कवि, अर्थात् कविका) पु० कविता, रचना, छन्द, पद्य, कविका बनाया हुआ ग्रन्थ ।

सं० काश (काश=चमकना)पु०कांस, एकप्रकारकी घास२खांसी, खोखी ।

सं० काशि—क० पु० सूर्य ।

सं० काशी (काश्=चमकना) स्त्री० बनारस, जो वरुणा और असी नदी के मध्य में बसी ।

सं० काशी राज, काशीनाथ (काशी=बनारस, राजा वा नाथ=स्वामी) पु० महादेव, शिव, २ काशी का राजा ।

सं०काश्मीर (काश्मीर अर्थात् जो काश्मीर में पैदा हो) पु० केशर ।

सं० काष्ठ (काश=चमकना) पु० काठ, लकड़ी, ईंधन ।

प्रा० काहू—गु० सर्वना० किसी को कोई, कौन, कुछ ।

प्रा०काहे—सर्वना०किसलिये, क्यों ।

प्रा०कि—समुच्चयक अव्यय, पूर्वोक्त वर्णन, काफ़ बयानिया ।

सं० किंवदन्ती (किम्=कुछ, वद=कहना) स्त्री० लोगों का कहना, गप, अफ़वाह ।

सं०किंशुक (किम्=कुछ, शुक्=जाना) पु० पलाश, टेसू, छिउल ।

प्रा०किकियाना—क्रि० अ० चिल्लाना, चिचियाना ।

सं०किङ्कर (किम्=कुछ, कर=करने वाला, कृ=करना) पु० दास, नौकर, चाकर, सेवक, ताबेदार ।

सं० किङ्किणी (किम्=कुछ, किण =शब्द) स्त्री०कंदोरा, कंधनी, कटि-बंधन, क्षुद्रघंटिका, करधनी ।

प्रा० किचकिचाना—क्रि०अ०दांत पीसना ।

प्रा०किचपिच—पु० कांदा, कीचड़, [पंक ।

सं० किञ्चित् (किम्=क्या, कुछ) गु० थोड़ा,कुछ,कुछेक, अल्प, कम ।

प्रा० किड़किड़ाना—क्रि० अ० क्रोध से दांत पीसना ।

प्रा०कित (सं० कुत्र, कहां) क्रि० वि० कहां, किधर, २ कितना ।

प्रा० कितना—गु० किस अंदाजका, प्रमाणवाचक ।

प्रा॰ कितनाही—बोल॰ चाहेजितना ।
प्रा॰ किदारा (सं॰ केदार) पु॰ एक रागिणी का नाम जो गर्मी में आधीरातके समय गाई जाती है ।
प्रा॰ किधर—क्रि॰ वि॰ किसतरफ़, कहां ।
प्रा॰ किनारी—स्त्री॰ गोटा, कोर ।
सं॰ किन्तु (किम्=क्या, तु=फिर) समुच्च॰ पर, परन्तु लेकिन ।
सं॰ किन्नर (किम्=कुछ, अथवा बुरा, नर=मनुष्य) पु॰ गंधर्व, देवताओं का गवैया, कुबेर के सेवक, जिनके घोड़ेका मुँह और आदमी की धड़ है ।
सं॰ किम्—सर्वना॰ क्या, कौन, कैसा ।
सं॰ किम्पुरुष (किम्=कुछ, पुरुष=मनुष्य) पु॰ किन्नर, गन्धर्व, देवताओं का गवैया ।
सं॰ किंवा (किम्=क्या, वा अथवा) समुच्च॰ अथवा ।
प्रा॰ कियारी / क्यारी (सं॰ केदार, क=पानी, दॄ=फटना) स्त्री॰ फूलों का तखता, मेंड़ ।
सं॰ किरण (कॄ=फैलनाप्रकाशको) स्त्री॰ सूर्य का तेज, चांदकाप्रकाश, रश्मि, शुआ ।
सं॰ किरात (कॄ=मारना, हिंसा करना) पु॰ भील, निषाद, जंगली मनुष्यों की एक जाति ।
प्रा॰ किराना (सं॰ क्रयण, क्री=लेन देन करना) पु॰ चीज जो पसारी बेचते हैं, मसाला ।
प्रा॰ किरिया (सं॰ क्रिया, कृ=करना) स्त्री॰ सौंह, सौगंद, शपथ, क़सम ।
सं॰ किरीट (कॄ=बिखेरना प्रकाश को) पु॰ मुकुट, शिरका गहना, ताज ।
प्रा॰ किर्च—स्त्री॰ फांस, खपाच, तलवार । [सुनते हैं ।
सं॰ किल—क्रि॰ वि॰ निश्चयही,
प्रा॰ किलकिलाना (सं॰ किलकिला, किल्=खेलना) क्रि॰ अ॰ चिड़चिड़ाना, चिड़चिड़ा होना गर्जना, गुर्राना ।
प्रा॰ किल्कारी (सं॰ किलकिला) स्त्री॰ चिल्ली मारना, बहुत जोर से पुकारना, वानर का शब्द ।
सं॰ किसलय (किम्=कुछ, पल्=जाना) पु॰ नयेपत्ते, नई डाली नवपल्लव ।
सं॰ किल्बिष—पु॰ अपराध, पाप, रोग, अनिष्ट ।
सं॰ किशोर (किम्=कुछ, शूरवीर, अर्थात् इस अवस्था में कुछ २ वीरता देखी जाती है) पु॰ दश बरस से पंद्रह बरस तक की उमर का लड़का, २ जवानी की शुरूका अवस्था, तरुणावस्था ।
सं॰ किष्किन्धा (किष्क्=मारना) स्त्री॰ एक पुरी का नाम जिस का

राजा बालि वानर था फिर उस को मारके श्रीरामचन्द्र ने उस पुरी का राज्य सुग्रीव को दिया।

प्रा०किसनई (सं० कृषि=खेती) स्त्री० किसान का काम, खेती।

प्रा० किसान (सं०, कृषाण वा कृषिमान्) पु० खेती करनेवाला, जोतहार।

प्रा०किसानमात्र=महज़काश्तकार।

प्रा० किसारी-स्त्री० एक प्रकार का नाज जिसकी दाल बनती है, चटरी।

प्रा० कीकड़-पु० बबूल, कटीला पेड़।

सं०कीचक-पु० नाम दैत्यका, २वेणु रन्ध्र, अंकुररहित बांस जो बायु लगने से बोलते हैं, बांस छिद्र।

प्रा० कीच, कीचड़ } पु० कांदो, पांका, (सं० कच्चर) मैला।

सं० कीट (कीट्=रंग रंग का होना) पु० कीड़ा, पतंग, लखेरी।

प्रा०कीड़ा(सं०कीट)पु०कीटपिलुआ।

सं०कीदृक्, प्रा०कीदृक्ष } गु० कैसा, किसप्रकार।

कीना, कीन्हा } (करना) क्रि०स० क्रिया।

सं०कीर(की=ऐसाशब्द,ईर्=भेजना) पु० तोता, सूगा, सूआ।

प्रा० कीरति, सं० कीर्त्ति } (कृत=सराहना) स्त्री० यश, नामबरी सराह, सुयश।

सं०कीर्त्तन (कृत्=सराहना) भा० पु० गुणवर्णन, यशबखानना, सराह, २ गाना, ३ कहना।

सं०कील (कील्=बांधना स्त्री० कीला, खूंटी, कांटा, मेख, खूंटा।

सं० कीलक (कील्+अक)क०पु० खूंटा, बन्धक, गौओं के बांधने का खंभा।

सं० कीलकाँटा-बोल० औज़ार, साज सामान, कल कांटा।

प्रा० कीलना (सं० कीलन, कील् =बांधना) क्रि०स० मंत्र फूंकना, बंध करना, सांपको मंत्रसे वशकरलेना।

सं० कीश (कि=हनुमान्, क=हवा अर्थात् हवा का बेटा, और ईश= मालिक, अर्थात् जिनका मालिक हनुमानहै पु० बन्दर, वानर।

सं० कु-उपस० बुरा, अधम, नीच, निंदित, २ कम, थोड़ा, ३ झूठा, (जैसे कुतर्क, झूठी तर्क)

सं०कु-स्त्री० धरती, पृथ्वी, ज़मीन।

प्रा०कुंगड़ा-गु०बलवान, संडमुसंड पहलवान।

प्रा० कुंचकी (सं० कंचुक, कचि बांधना) स्त्री० चोली, अँगिया, कांचुली।

प्रा०कुंजड़ा-पु० एक जाति, जि-

सका काम तरकारी और फलफलारी बेचने का है।

प्रा० कुंजी (सं० कुंचिका, कुञ्च=टेढा होना वा खींचना, कसना) स्त्री० चाबी, ताली।

प्रा० कुंदी-स्त्री० कपड़ोंका घोटना।

प्रा० कुंदीकरना-बोल० कपड़ों का घोटना, पीटना।

प्रा० कुंवर (सं० कुमार) पु० बेटा, लड़का, २ राजा का बेटा, राजकुमार, राजपुत्र।

प्रा० कुंवरी (सं० कुमारी) स्त्री० बेटी, लड़की, २ राजा की बेटी, राजकन्या, राजपुत्री।

प्रा० कुंवारा (सं०कुमार) पु०अनब्याहा लड़का, गु०अनब्याहा।

प्रा० कुंवारी (सं० कुमारी) स्त्री० अनब्याही लड़की, गु०अनब्याही।

सं० कुकर्म (कु=बुरा, कर्म=काम) पु०बुरा काम, अन्याय, पाप, दुष्कर्म।

सं० कुक्कुट (कु=शब्द करना, वा कुक् =लेना) पु० मुर्गा, कुकड़ा।

सं० कुक्कुर (कुक्=लेना वा कुर्= शब्द करना) पु० कुत्ता, श्वान।

सं० कुक्षि (कुष्=निकालना) स्त्री० पेट, कोख।

सं० कुंकुम (कुक्=लेना अथवालिया जाना) पु० केशर, सुगन्धितद्रव्य-विशेष—२ रोरी।

प्रा० कुंकुमा (सं०कुंकुम) पु०गुलाल रखने का बरतन।

सं० कुच (कुच्=बांधना, वा मिलाना) पु० छाती, चूंची, थन, स्तन, पिस्तां।

सं० कुचन्दन (कु=कम अर्थात्‌बिन सुगन्ध, चन्दन) पु० लालचन्दन, रक्तचन्दन।

सं० कुचकुड्मल-पु०कुचकली, चूंची की घुंडी।

प्रा०कुचर-गु०निंदक, दोषढूंढनेवाला

प्रा०कुचलना-क्रि० स० चूरकरना, मसलना।

प्रा० कुचला-पु० मैनफल, एक औषध का नाम।

प्रा० कुचाल (कु=बुरी, चाल=रीति) स्त्री० कुरीति, बुरा चलन, कुटेव, बुरा चालचलन।

प्रा० कुचाह-स्त्री० बुरी खबर, बद खबर, २ नचहना, स्नेह।

प्रा० कुचेला-गु० मैला, मैले कपड़े पहने हुए।

प्रा० कुछ (सं० किञ्चित्=थोड़ा) गु० थोड़ा कम कुछ एक आध, जो कुछ, थोड़ा बहुत।

प्रा० कुछऔरगाना-बोल० झूठी बात बनाना, २ औरही बात कहना।

प्रा० कुछेक-बोल० थोड़ाबहुत, कुछ कुछ, कुछ।

प्रा० कुछसेकुछहोना } बोल० बि-
कुछकाकुछहोना } लकुलबद-
लजाना, सबकासब बदलजाना।

प्रा० कुछकुछ-बोल० थोड़ासा, कुछेक, थोड़ाएक थोड़ा बहुत, कुछ।

प्रा० कुछनकुछ-बोल० थोड़ाबहुत, थोड़ासा।

प्रा० कुछनहीं-बोल० कोई और चीज़ नहीं, कुछ और नहीं, २ निकम्मा, कामका नहीं।

प्रा० कुछहो-बोल० चाहे सो हो, जो कुछ हो।

सं० कुज (कु=पृथ्वी, जन्=पैदा होना) क० पु० पृथ्वीपुत्र, मंगल, भौम, सेशम्बा।

प्रा० कुजलीवन } (सं० कुञ्जरवन,
कजलीबन } कुञ्जर=हाथी,
वन=जंगल) पु० हाथियों का बन, जिस जंगल में हाथी बहुत हों।

सं० कुजाति (कु=बुरी, जाति=जात) गु० नीचजातिका, कमीना, नीच, अधम।

सं० कुञ्चित (कुञ्च्=टेढ़ा होना) र्म्म० टेढ़ा, सिमटा, हुआ, घुँघराला।

सं० कुञ्ज (कु=धरती, जन्=पैदा होना) पु० वह जगह जहां सघन पेड़ और बेली आदि हों, गुंजान, २ हाथी की ठुड्डी।

सं० कुञ्जर (कुञ्ज=हाथी की ठुड्डी वा कुञ्ज=सघन वृक्षों की जगह, रा=लेना, अर्थात् जो कुञ्जमें रहता है) पु० हाथी, हस्ती, मतंग।

प्रा० कुटकी (सं० कटुका, कटु=कडुवा) स्त्री० एक दवाई का नाम।

प्रा० कुटकी-स्त्री० एक प्रकार का मच्छर, एक जानवर का नाम।

सं० कुटज (कुट=पहाड़, जन्=पैदा होना) पु० एकदवाई व कुरैयाका नाम।

प्रा० कुटनी (सं० कुट्टनी, कुट्ट=काटना, निंदा करना) स्त्री० दूती, पराई स्त्री को पराये पुरुष से मिलाने वाली, दल्लाला।

सं० कुटिल (कुट्=टेढ़ाहोना) क० पु० टेढ़ा, कपटी, खोटा, कड़ा, क्रूर, मगरा।

सं० कुटी } (कुट्=टेढ़ाहोना) स्त्री०
कुटीर } झोपड़ी, मढ़ी।

प्रा० कुटुम (सं० कुटुम्ब, कुटुम्ब=कुल का पालन करना) पु० कुनबा, परिवार, घराना, कुल, खानदान।

सं० कुटुम्बी (कुटुम्ब) पु० घरवाला, घरबारी, गृहस्थ, खानदानी।

प्रा० कुटेव (सं० कु=बुरी, हिं० टेव=स्वभाव) स्त्री० कुचाल, बुराचलन।

सं० कुठार (कुठ=वृक्ष, कुट्=काटना और ऋ=जाना, अर्थात् जो वृक्षों

पर काटने के लिये चलाया जाता है) पु० कुल्हाड़ी, बसूला, टांगी ।

प्रा० कुठाहर (सं०कुस्थान,कु=बुरी, स्थान=जगह) स्त्री० बुरी जगह ।

प्रा०कुड़कना-क्रि०अ० कुड़कुड़ाना, कुटकुटाना, कड़कड़ाना, २ क्रोधसे बोलना ।

सं० कुड़व-पु० प्रस्थ का चौथाभाग चारपल, आधपाव ।

प्रा० कुढ़ना (सं०कुध्=क्रोधकरना) क्रि० अ० कलपना, दुख करना, शोच करना २ गुस्सा करना, क्रोध करना, ३ जलना, दूसरे की बढ़ती देखकर मनमें दुख करना ।

सं० कुण्ठक (कुण्ठ्+अक) क०पु० मूर्ख, मन्द, जाहिल, रूठनेवाला ।

सं० कुण्ठित (कुण्ठ्=भोथा होना, वा सुस्त होना)क०पु० भोथा । २आलसी ३ लज्जित,खफ़ाहुआ ।

सं० कुण्ड (कुडि=जलाना, वा बचाना) पु० जल के रहनेकी जगह, हौज,चश्मा,२होम की आग रखनेका गड़हा, होम का कुण्ड ।

सं० कुण्डल (कुडि=बचाना वा जलाना) पु०कानमें पहननेका गहना, कर्णभूषण,२ घेरा, मंडल ।

प्रा० कुंडलिया (सं० कुण्डलिका) पु० एक छंद का नाम १४४ मात्रा का छन्द ।

सं० कुण्डली (कुण्डल घेरा) स्त्री० घेरा,२सांप, ३ जन्मपत्री, जायचह ।

प्रा० कुण्डी(सं०कुण्ड्=बचाना)स्त्री० दरवाजे की सिंकली या जंजीर ।

प्रा० कुतरना (सं० कर्त्तन, कृत्=काटना) क्रि०स०दाँतोंसे काटना ।

सं० कुतर्क (कु=बुरी, वा झूठी, तर्क =दलील) स्त्री० बुरी तर्क, झूठी तर्क, हुज्जत ।

सं० कुतूहल (कुतू=कुप्पा, हल्=लिखना, अर्थात् कुछ खेलकरना) पु० खेल, कौतुक ।

प्रा० कुत्ता (सं० कुकुर) पु० एक जानवरकानाम, श्वान ।

सं० कुत्सा (कुत्स=निंदा करना) भा० स्त्री० निंदा, बुराई, अवज्ञा, अपमान ।

सं० कुत्सित (कुत्स=निंदा करना) र्म० निंदित, नीच, बुराई करने योग्य, नीचा, कमीना ।

प्रा० कुदार } कुदाल } (सं० कुद्दाल, कु=धरती, उद्=दल, टुकड़ा करना) स्त्री० मिट्टी खोदने का औजार,कुदाली,बेल,बेलचा ।

सं०कुदृष्टि (कु=बुरी, पापकी, दृष्टि =दीठ) स्त्री० बुरी दीठ, पापदृष्टि, पाप से देखना, बदनजर, बुरी निगाह ।

सं०कुधर } (कु=धरती, धृ=रखना)
कुध्र } पु०पहाड़, पर्वत, शैल ।

प्रा०कुधातु (कु=बुरी, अथवा सब से नीच, धातु=धात) स्त्री० लोहा, लोह ।

सं० कुनबा (सं० कुटुम्ब) पु० घराना, कुटुम्ब, कुल, खानदान ।

सं० कुनारी (कु=बुरी, नारी=स्त्री) स्त्री० दुष्टनारी, खराब औरत ।

सं० कुनीति (कु=बुरी, नीति=चाल) स्त्री० कुचाल, बुरी चाल, कुरीति ।

सं० कुन्त (कु=बुरा, अन्त=आखिर) पु० बरछी, भाला ।

सं० कुन्ती (कम्=चाहना) स्त्री० शूरसेन की बड़ी बेटी, श्रीकृष्ण की फूफी, पांडु की स्त्री और युधिष्ठिर अर्जुन और भीमसेन की मा ।

सं०कुन्द (कु=धरती, दो=काटना, वा दै=शुद्ध करना, वा क=पानी, उन्द्=भिगोना अर्थात् जो पानी से सींचाजाता है) पु०मोगरा, एक तरह का सफ़ेद फूल ।

प्रा० कुन्दन-पु० अच्छा सोना, साफ़ सोना, उत्तम सोना ।

सं० कुपथ (कु=बुरा, पथ=रस्ता) पु० कुमार्ग, बुरी राह, बुरारास्ता, कुपंथ, २ बुराई, बुरा चलन ।

सं०कुपात्र (कु=बुरा, पात्र=दानदेने योग्य ब्राह्मण, वा बरतन) गु० अयोग्य, नालायक़ ।

सं० कुपित (कुप्=कोपना) गु०क्रोधित, कोपित ।

सं० कुपुरुष (कु=बुरा, पुरुष=मनुष्य) गु० बद आदमी, निषिद्ध मनुष्य ।

प्रा० कुप्पा (सं०कुतू, कु=बुरी तरह से, तन्=फैलाना) पु०घी अथवा तेल रखने का चमड़े का बरतन । [होना ।

प्रा० कुप्पाहोना-बोल० बहुत मोटा

सं०कुफल (कु=खराब, फल=नतीजा) गु० खराब नतीजा, बुराफल ।

प्रा० कुब } (सं०कौब्ज्य, कुब्ज) पु०
कूब } कूबड़, पीठ का झुकाव ।

प्रा०कुब्जा (सं०कुब्ज, कु=बुरीतरह से अथवा थोड़ा, उब्ज्=सीधा होना) स्त्री०कुबड़ी कुबड़ा, टेढ़ी पीठका, जिसकी पीठ झुकी हुईहो, २ स्त्री०कंस की एक दासी का नाम जिसको श्रीकृष्ण ने सीधी की थी ।

सं० कुभार्य्या (कु=बुरी, भार्य्या=पत्नी) स्त्री० बुरी लुगाई, कलहिनी, लड़ाका स्त्री, कुलटा ।

सं० कुमति (कु=बुरी, मति=बुद्धि) स्त्री० बुरी समझ, कुमत, २ गु० मूर्ख, दुर्बुद्धि, कुबुद्धि ।

सं० कुमार (कुमार=खेलना, वा कु=बुरा अथवा थोड़ा, मार=कामदेव)

पु० कुंवर,कुमार, बालक, बिनब्याहा, कुंवारा।

सं० कुमार्ग (कु=बुरा, मार्ग=रस्ता) पु० कुपथ, बुरी राह, कुचाल।

सं० कुमार्गगामी (कुमार्ग=बुरीमार्ग, गम् + ई, गम्=जाना) क्र० पु० बुरीराह चलनेवाला, बदराह चलनेवाला।

सं० कुमुद (कु=धरती, मुद्=प्रसन्न होना या करना) पु० कुमोदनी, कोई, धौला कमल जो रात को खिलता है और दिन को मुंद जाता है-२ एक बानर का नाम।

सं० कुमुदबन्धु-पु० चन्द्र, चांद।

सं० कुमुदिनी (कुमुद) स्त्री० कमलिनी, २ कमलों का समूह, ३ वह जगह जहाँ कमल पैदा हो।

सं० कुम्भ (कु=पृथ्वी, उम्भ्=भरना, वा क=पानी, उम्भ्=भरना, वा कुंभ्=ढकना) पु० घड़ा, कलश, कलसा, २ हाथी का शिर, ३ ज्योतिष में ग्यारहवीं राशि—कुम्भ का मेला=मेला जो हरिद्वार में बारहवें बरस होता है, कुम्भी=मेला जो छठे बरस होताहै।

सं० कुम्भकर्ण (कुम्भ=हाथी का शिर वा घड़ा, कर्ण=कान, जिसके कान हाथी के शिर के बराबर हों) पु० रावण का भाई।

सं० कुम्भकार (कुम्भ=घड़ा, कार=करनेवाला) पु० कुम्हार, कुलाल।

सं० कुम्भज-(कुंभ=घड़ा, जन्=पैदा होना) पु० अगस्ति ऋषि का नाम।

सं० कुम्भशाला-स्त्री० घड़ा रखने की जगह, घनौची।

सं० कुम्भसंभव (भू=होना) पु० अगस्ति ऋषि, वशिष्ठऋषि, द्रोणाचार्य्य, ये मित्रावरुण के पुत्रहैं।

सं० कुम्भिका } (कुम्भ्=ढकना) स्त्री०
कुम्भी } एकवृक्षकानाम।

सं० कुम्भीपाक (कुम्भी=तेल का कड़ाह, पाक=पचाना) पु० एक नरक का नाम, जहां पापी गर्म तेल के कड़ाहों में डाले जाते हैं।

सं० कुम्भीर (कुम्भिन्=हाथी, ईर्=पीड़ा देना) पु० मगरमच्छ, घड़ियाल, ग्राह।

प्रा० कुम्हार (सं० कुम्भकार) पु० मिट्टी केबरतनबनानेवाला, कुलाल।

सं० कुयोग (कु=बुरा, योग=मेल) पु० कुसंगत, बुरी संगत, बुरासंयोग।

सं० कुर्-पु० शब्द, आवाज़, शब्द कर्त्ता, राजा, ज़मींदार, किसान।

सं० कुररी-स्त्री० चील्ह, भेड़ी।

सं० कुरंग (कु० पृथ्वी, रञ्ज=खुशी करना) पु० हरिन मृग।

प्रा० कुरी-पु० सबलोग, सबजाति, जाति, कुल। [ज़िम्मा, मारफ़त।

सं० कुरीर (कुर् + ईर, कुर्=बोलना)

सं० कुरीति (कु=बुरी,रीति=चाल) पु० कुचाल, कुटेव, बुरीचाल।

सं० कुरु (कृ=करना) पु० दिल्ली के एक पुराने राजा का नाम।

सं० कुरुक्षेत्र (कुरु=एक राजा का नाम, क्षेत्र=जगह, वा कुरु=पाप, कु=बुरी तरह से, रु=रोना, क्षेत्र, जगह, अर्थात् पाप को दूर करने वाली जगह) पु० दिल्ली के पास एक जगह है जहां कौरवों और पाण्डवों में लड़ाई हुई थी।

सं० कुरूप (कु=बुरा,रूप=स्वरूप)गु० भौंड़ा, कुडौल, भद्देसा, बुरी सूरत का।

प्रा० कुर्मी-पु० एकजातिका नाम जो खेती का धन्धा करते हैं।

प्रा० कुर्याल-स्त्री०पखेरूके चैन और बचाव से बैठने की दशा, कि जब वह चोंचसे अपने पंखोंको सवाँरता है, (इसीसे) २ चैन, सुख, आराम बचाव।

प्रा० कुर्याल में गुलेला लगना-बोल० निराश होना, अथवा चैन के समय दुख में गिरना।

प्रा० कुर्री-स्त्री० चवनी, नरमहड्डी।

सं० कुल (कुल्=इकट्ठा होना, वा बांधना) पु० वंश, घराना, कुनवा, जाति, वर्ण।

सं० कुलघाती (कुल=वंश, हन्=नाश करना, ह का घ होजाता है) क० पु० कुलनाशक।

सं० कुलतारण (कुल=वंश,तारण=पार करनेवाला)पु०कुल को बचाने वाला लड़का, सपूत लड़का, गुणवान्लड़का जिससेकुलशोभता है।

सं० कुलद्रोही (कुल=वंश, द्रोही=बिरोधी) गु० कुलका नाश करने वाला, बुरे काम करनेसे अपने कुलकी निन्दा करानेवाला।

सं० कुलधर्म्म (कुल=वंश, धर्म=मत) पु० अपने वंशका धर्म, कुलव्यवहार, कुलकी चाल।

सं० कुलपालक (कुल=वंश,पाल्=पालना) क० पु० कुटुम्बपोषक, खानदान परवर।

सं० कुलपूज्य(कुल=वंश,पूज्य=पूजने योग्य)गु० सब घराने के पूजनीक, २ कुलदेवता, ३ अपने घराने का पुरोहित।

प्रा० कुलबुलाना-क्रि० अ० खुजलाना, २ कलमलाना।

सं० कुलवन्ती-कुल=घराना, वन्ती =वाली)स्त्री०अच्छे घराने की स्त्री, पतिव्रता, सती, सुशीला।

सं० कुलवान् (कुल=घराना, वान् =वाला) गु० अच्छे घराने का, कुलीन, श्रेष्ठ।